एनएचपीसी
NHPC
एक नवरत्न कंपनी

# राजभाषा ज्योति

अंक: 46, अक्तूबर 2024 – मार्च 2025

एनएचपीसी – हरित ऊर्जा में निहित शक्ति
स्वर्ण जयंती
50
एनएचपीसी NHPC 1975 से
वर्ष
नवरत्न उद्यम

# राजभाषा कार्यान्वयन गतिविधियां

संयुक्त राजभाषा सम्मेलन के दौरान पुरस्कार ग्रहण करते सीएमडी एवं निदेशक (कार्मिक) महोदय

अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक तथा निदेशकगण द्वारा राजभाषा ज्योति के 45वें अंक का विमोचन

वर्ष 2024-25 के लिए राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तीसरी बैठक

राजभाषा शील्ड प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत शील्ड व प्रमाण-पत्र प्राप्त करते कार्यपालक निदेशक, डिजाइन (ई एंड एम)

राजभाषा शील्ड प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत शील्ड व प्रमाण-पत्र प्राप्त करते कार्यपालक निदेशक, योजना विभाग

राजभाषा शील्ड प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत शील्ड व प्रमाण पत्र प्राप्त करते कार्यपालक निदेशक, जम्मू

एक नवरत्न कंपनी

**अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक**
**एनएचपीसी लिमिटेड**

# संदेश

समाज में जो कुछ घटित होता है, उसका प्रतिबिंब हमें साहित्य में दिखाई देता है। इसीलिए साहित्य को समाज का दर्पण कहा गया है। लगभग हजार वर्षों से भी अधिक समय से हिंदी भाषा भावों की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम रही है। हिंदी के पास सरल एवं सहज भाषा की व्यापकता, विशाल शब्द भंडार, महान सांस्कृतिक विरासत, उदार एवं आत्मीय लोकप्रियता है। यही कारण है कि हिंदी के सृजनात्मक साहित्य की विविधता, व्यवहारिकता सभी को सहज ही अपनी ओर आकर्षित करती है।

कार्यालयीन कार्यों को केवल हिंदी में ही करना हमारा नैतिक तथा संवैधानिक दायित्व है। मेरी आप सभी से अपील है कि हिंदी के प्रयोग को केवल राजभाषा कार्यान्वयन तक सीमित न रखकर बल्कि इसे गौरव के साथ अपने दैनिक जीवन में भी अधिक से अधिक प्रयोग करें। हमारा निगम जलविद्युत उत्पादन के क्षेत्र में तो अग्रणी है ही, अब नए भारत में हम नई ऊर्जा और दृढ़संकल्पता के साथ नवीकरणीय ऊर्जा के अन्य क्षेत्रों में भी आगे बढ़ रहे हैं। मुझे आशा है कि हम इसी प्रकार की समान कर्तव्यनिष्ठा एवं दृढ़ता के साथ राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में भी नित नईं उपलब्धियां हासिल करते रहेंगे।

मुझे यह जानकार प्रसन्नता हुई कि **'राजभाषा ज्योति'** के 46वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। यह पत्रिका न केवल निगम के कार्मिकों के लिए हिंदी भाषा और साहित्य के प्रचार–प्रसार का माध्यम है, बल्कि यह उन्हें अपने अनुभव और उपलब्धियों को साझा करने के लिए सशक्त मंच भी उपलब्ध करा रही है। आशा है कि विगत अंकों की तरह **'राजभाषा ज्योति'** के नए अंक में भी स्तरीय व रोचक रचनाएं शामिल की जाएंगी।

पत्रिका के नवीनतम अंक के प्रकाशन के लिए संपादकीय टीम को हार्दिक शुभकामनाएं।

रा० कु० चौधरी

**(राज कुमार चौधरी)**

एक नवरत्न कंपनी

**निदेशक (कार्मिक)**
**एनएचपीसी लिमिटेड**

# संदेश

हमारे देश की सभी भाषाएं अपने आप में समृद्ध भाषाएं हैं, फिर भी देश की सभी भाषाओं और बोलियों में हिंदी ही एक ऐसी भाषा है जो हमारे देश के विभिन्न राज्यों और प्रांतों के लिए एक संपर्क भाषा के रूप में स्थापित हो चुकी है। केंद्र सरकार के उद्यम में कार्य करते हुए कार्यालय संबंधी कार्यों में राजभाषा हिंदी का प्रयोग करना हम सभी का संवैधानिक दायित्व है, लेकिन मेरा मानना है कि हिंदी भाषा का सर्वांगीण प्रयोग करते हुए हमारे अंदर गौरव का भाव भी होना चाहिए।

हमारा निगम जलविद्युत एवं अन्य नवीकरणीय ऊर्जा विकास में एक ओर जहां राष्ट्र के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है वहीं दूसरी ओर राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार को गति प्रदान कर अपने नैतिक और संवैधानिक दायित्वों का निर्वहन कर रहा है। राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में किए गए उत्कृष्ट प्रयासों के कारण निगम को कई मंचों पर सम्मानित भी किया गया है। जिसके लिए सभी कार्मिक बधाई के पात्र हैं। किन्तु अभी भी कार्यालयीन काम–काज के कई क्षेत्रों में विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। आप सभी इन क्षेत्रों की पहचान करें और उन्हें राजभाषा कार्यान्वयन की दृष्टि से सुदृढ़ करें। मुझे आशा है कि जिस प्रकार हम जलविद्युत के क्षेत्र में अग्रणी संगठन हैं ठीक वैसे ही सभी के सामूहिक निष्ठापूर्वक प्रयासों से हम राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में भी शीघ्र ही अग्रणी संस्थान के रूप में स्थापित होंगे।

भाषा के प्रचार–प्रसार में पत्र–पत्रिकाओं की महत्वपूर्ण भूमिका होती है और यह सृजनात्मक प्रतिभा को निखारने में भी महत्वपूर्ण योगदान देती हैं। मैं **'राजभाषा ज्योति'** के 46वें अंक के सफल प्रकाशन के लिए शुभकामनाएं देता हूँ और आशा करता हूँ कि पत्रिका का नवीनतम अंक भी गत अंकों की भांति पठनीय व रोचक होगा।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

(उत्तम लाल)

एनएचपीसी NHPC
एक नवरत्न कंपनी

**कार्यपालक निदेशक (मानव संसाधन)**
**एनएचपीसी लिमिटेड**

# संदेश

हिंदी भाषा का इतिहास लगभग एक हजार वर्ष पुराना माना गया है। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के समय देश में इसे एक संपर्क भाषा के रूप में मजबूती के साथ स्थापित किया गया। आंदोलन के शीर्षस्थ नेतृत्व को आंदोलन की रोशनी पूरे देश में फैलाने के लिए एक संपर्क भाषा की आवश्यकता महसूस हुई जिससे पूरे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सके। हिंदी में दिए गए भाषणों और नारों ने जनमानस में स्वाधीनता की अलख जगाई थी। हिंदी भाषा की महत्ता को देखते हुए ही राष्ट्र निर्माताओं ने हिंदी भाषा को नव–स्वतंत्र भारत की राजभाषा का दर्जा दिया। अतएव हिंदी केवल भाषा या राजभाषा नहीं है यह हर भारतीय के लिए गौरव व संस्कृति की परिचायक भी है।

एनएचपीसी लिमिटेड, राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार तथा कार्यालयीन कार्यों में इसकी उतरोत्तर वृद्धि के लिए दृढ़ संकल्प है। निगम में वर्षभर राजभाषामय वातावरण बनाए रखने के लिए नियमित रूप से राजभाषा कार्यकलाप आयोजित किए जाते हैं। मेरा मानना है कि कार्यालयीन कार्यों में अनुवाद पर निर्भरता को अब खत्म किया जाए और मूल रूप से हिंदी में कामकाज को बढ़ावा दिया जाए। इसीलिए मेरा आप सभी से आग्रह है कि अपने कार्यालयीन कार्यों, विशेष रूप से ई–आफिस और डिजिटल संप्रेषण में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करें।

निगम के कार्मिकों को **'राजभाषा ज्योति'** पत्रिका हिंदी में काम–काज करने की प्रेरणा तो देती ही है, साथ ही उनके अंदर छिपी लेखन प्रतिभा को भी उजागर करती है। गत कुछ अंकों से पत्रिका में कार्मिकों के साथ–साथ उनके परिवार के सदस्यों से भी रचनाएं आमंत्रित की जा रही हैं। मुझे आशा है कि कार्मिक अपने परिवार के सदस्यों को भी हिंदी में लिखने के लिए प्रेरित करेंगे। **'राजभाषा ज्योति'** के नवीनतम 46वें अंक के सफल प्रकाशन के लिए शुभकामनाएं।

**(नवीन कुमार जैन)**

# संपादकीय

अपने पहले संपादकीय के माध्यम से आप सभी के साथ रूबरू होते हुए मुझे हर्ष के साथ–साथ गौरव का भी अनुभव हो रहा है। 'राजभाषा ज्योति' पत्रिका का 46वां अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है। बतौर संपादक, इस उत्तरदायित्व को स्वीकार करते हुए मेरे मन में उत्साह के साथ–साथ एक गहरी जिम्मेदारी की भावना भी है क्योंकि यह केवल एक पत्रिका संपादन का कार्य नहीं, बल्कि हिंदी भाषा और हमारी राजभाषा नीति के प्रति प्रतिबद्धता का जीवंत उदाहरण है।

राजभाषा हिंदी न केवल संपर्क का माध्यम है, अपितु यह हमारी सांस्कृतिक पहचान, मूल्यबोध और राष्ट्र–निर्माण की भावना को भी अभिव्यक्त करती है। आज जब वैश्वीकरण और तकनीकी विकास के युग में हम निरंतर आगे बढ़ रहे हैं, तब भी अपनी मातृभाषा के प्रति गर्व और समर्पण की भावना बनाए रखना अत्यंत आवश्यक है। 'राजभाषा ज्योति' के माध्यम से न सिर्फ निगम के कार्मिकों को बल्कि परिवार के सदस्यों को भी अपनी रचना–कौशल को प्रस्तुत करने का अवसर मिलता है।

हमें यह देखकर प्रसन्नता होती है कि हमारे सहकर्मी न केवल अपने दैनिक कार्यों में हिंदी का कुशलतापूर्वक उपयोग कर रहे हैं, बल्कि रचनात्मक लेखन के माध्यम से अपनी भाषाई क्षमता का प्रदर्शन भी कर रहे हैं। **'राजभाषा ज्योति'** के इस अंक में प्रकाशित कविताएं और लेख इस बात का जीवंत प्रमाण हैं कि हमारे कार्यालय में हिंदी केवल एक प्रशासनिक आवश्यकता नहीं, बल्कि अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम भी है। इस अंक में, पर्यावरण मुद्दों के ज्वलंत विषयों पर दो लेख हैं, इसके अलावा नारी शिक्षा पर भी एक लेख को शामिल किया गया है। 'प्रोबा–3 मिशन–सूर्य के और नजदीक पहुंचा भारत' द्वारा अंतरिक्ष में भारत के बढ़ते कदमों पर प्रकाश डाला गया है और पूर्वोत्तर भारत में जल दोहन की शक्ति और जलविद्युत की रणनीतिक परिस्थिति का संक्षिप्त विवरण 'अपर सियांग बहुउद्देशीय भंडारण परियोजना–सुनहरे भविष्य का सपना' लेख के माध्यम से देने की कोशिश की गई है। इसके अतिरिक्त, पत्रिका के गत अंकों के भांति इस अंक में भी पर्यटन, सूचना प्रौद्योगिकी आदि जैसे विभिन्न विषयों पर विविध प्रकार की रोचक सामग्री प्रकाशित करने का प्रयास किया गया है।

हम इस अंक के सभी रचनाकारों, संपादकीय टीम के सदस्यों और उन सभी लोगों के प्रति आभार व्यक्त करते हैं जिन्होंने इस अंक को साकार करने में अपना बहुमूल्य योगदान दिया है। इसके साथ ही हम अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक तथा सभी निदेशकगण का भी आभार प्रकट करते हैं जिनके कुशल व अनुभवी मार्गदर्शन से निगम में राजभाषा कार्यान्वयन को सुदृढ़ता मिल रही है। आप सभी के निरंतर प्रोत्साहन और सक्रिय भागीदारी के बिना यह यात्रा संभव नहीं थी।

हम सभी सुधी पाठकों से उनके सुझावों और प्रतिक्रियाओं का स्वागत करते हैं, जो हमें **'राजभाषा ज्योति'** को और भी अधिक उपयोगी और आकर्षक बनाने में सहायक होंगे। हिंदी की सेवा में हम सबका सहयोग और संकल्प निरंतर बना रहे – यही हमारी मंगलकामना है।

**(संजीव कुमार)**
महाप्रबंधक (जनसम्पर्क) – राजभाषा

# राजभाषा ज्योति

अंकः 46, अक्तूबर 2024 - मार्च 2025

## राजभाषा विभाग | एनएचपीसी लिमिटेड


### मुख्य संरक्षक
श्री राज कुमार चौधरी
अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक

### संरक्षक
श्री उत्तम लाल
निदेशक (कार्मिक)

### परामर्शदाता
श्री नवीन कुमार जैन
कार्यपालक निदेशक (मानव संसाधन)

### संपादक
श्री संजीव कुमार
महाप्रबंधक (जनसम्पर्क)- राजभाषा

### उप संपादक एवं साज-सज्जा
श्री जितेन्द्र प्रताप सिंह
प्रबंधक (राजभाषा)



पत्राचार का पता

**राजभाषा विभाग**

एनएचपीसी लिमिटेड

सेक्टर-33, फरीदाबाद, हरियाणा-121003

ई-मेलः rajbhasha-co@nhpc.nic.in



'राजभाषा ज्योति' पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार हैं।
एनएचपीसी प्रबंधन का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

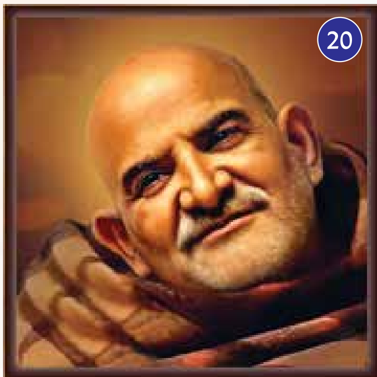

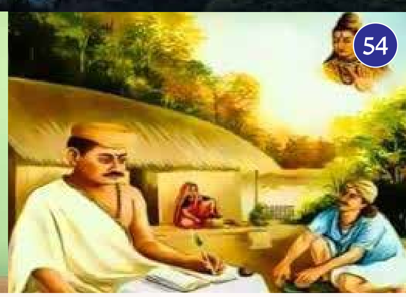


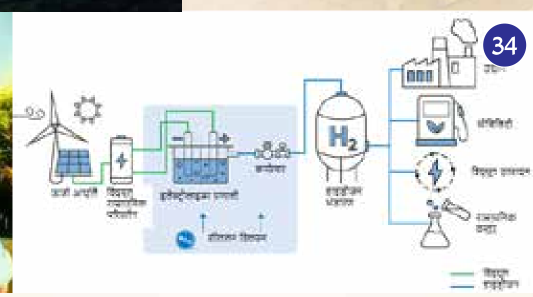


# अनुक्रमणिका


1. **ऊर्जा समृद्धि**
   - अपर सियांग बहुउद्देशीय भंडारण परियोजना – सुनहरे भविष्य का सपना 7
   - कार्बन क्रेडिट एवं कार्बन ट्रेडिंग 16
   - ग्रीन हाइड्रोजन – एक स्वच्छ ऊर्जा स्रोत 34

2. **विविध आलेख**
   - प्रोबा-3 मिशन – सूर्य के और नजदीक पहुंचा भारत 12
   - भाषा और अनुवाद 14
   - नारी शिक्षा 50
   - जलवायु परिवर्तन- एक वैश्विक चुनौती 57

3. **संस्मरण**
   - संत शिरोमणि – श्री नीम करोली बाबा 20

4. **रिपोर्ट**
   - राजभाषा संगोष्ठी/सम्मेलन का आयोजन 24
   - हिंदी कवि सम्मेलन का आयोजन 26

5. **राजभाषा गतिविधियां**
   - राजभाषा कार्यान्वयन गतिविधियां 27-33

6. **पर्यटन**
   - उदयपुर – एक बहुमूल्य धारोहर 39

7. **स्थायी स्तंभ**
   - अंक के साहित्यकार 44
   - पारिभाषिक शब्दावली 60
   - हिंदी साहित्य 60

8. **व्यंग्य**
   - कर्मलोक 46

9. **सूचना प्रौद्योगिकी**
   - साइबर सुरक्षा – आज के समय की आवश्यकता 48

10. **राज्य व पर्व**
    - जहां शिव ने 'उगना' बन की थी चाकरी 54

11. **काव्य धारा**
    - भ्रष्टाचार 19
    - गौरव 61
    - आत्माभिमान 62
    - मोह से मोहन 62
    - गांव मेरा मुझे बड़ा याद आता है 63
    - जलविद्युत 64
    - अब दिन ढलने लगे हैं 64

ऊर्जा समृद्धि

# अपर सियांग बहुउद्देशीय भंडारण परियोजना – सुनहरे भविष्य का सपना

**संजीव कुमार, महाप्रबंधक (जनसम्पर्क) – राजभाषा**
राजभाषा विभाग, निगम मुख्यालय (फरीदाबाद)

## पृष्ठभूमि

पूर्वोत्तर भारत के लिए 11,200 मेगावाट की प्रस्तावित क्षमता वाली अपर सियांग बहुउद्देशीय भंडारण परियोजना (यूएसएमएसपी), एक परिवर्तनकारी मील का पत्थर साबित होने वाली है। पूर्व–व्यवहार्यता रिपोर्ट (पीएफआर), विस्तृत परियोजना रिपोर्ट (डीपीआर) और आर्थिक मामलों की कैबिनेट समिति (सीसीईए) की मंजूरी मिलने के बाद इस परियोजना के निर्माण का काम एनएचपीसी लिमिटेड को सौंपे जाने की संभावना है। यह महत्वाकांक्षी जलविद्युत परियोजना जल सुरक्षा, बाढ़ नियंत्रण और विद्युत उत्पादन सहित कई लाभ प्रदान करने के लिए प्रस्तावित की गई है। सियांग नदी के जल प्रवाह को नियमित करके, इस क्षेत्र में विनाशकारी बाढ़ को रोकने में भी यह परियोजना मदद करेगी और साथ ही सिंचाई, पर्यटन तथा अन्य उद्देश्यों के लिए एक स्थिर जल आपूर्ति भी सुनिश्चित करेगी। परियोजना की 11,200 मेगावाट क्षमता भारत की नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ावा देगी।

इस परियोजना के लिए 125 लाख करोड़ रुपए से अधिक के निवेश का अनुमान है, जिससे इस क्षेत्र को पर्याप्त आर्थिक प्रोत्साहन मिलने की उम्मीद है। निर्माण के दौरान सिविल निर्माण, इंजीनियरिंग और लॉजिस्टिक्स जैसे क्षेत्रों में हजारों रोजगार के अवसर पैदा होंगे जिससे स्थानीय समुदायों को लाभ होगा। इसके अलावा, सड़कों, स्वास्थ्य सुविधाओं, शैक्षणिक संस्थानों और यहां तक कि पर्यटन के बुनियादी ढांचे के विकसित होने से स्थानीय लोगों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार होगा और समग्र सामाजिक–आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलेगा। यह परियोजना न केवल भारत के ऊर्जा लक्ष्यों को पूरा करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है, बल्कि पूर्वोत्तर में सतत विकास, क्षेत्रीय एकीकरण और दीर्घकालिक समृद्धि के लिए उत्प्रेरक भी है।

## एनएचपीसी लिमिटेड के लिए महत्व

वर्तमान में, एनएचपीसी लिमिटेड को भारत सरकार के विद्युत मंत्रालय द्वारा अपर सियांग बहुउद्देशीय भंडारण परियोजना के लिए पूर्व–व्यवहार्यता रिपोर्ट (पीएफआर) तैयार करने की जिम्मेदारी सौंपी गई है। हालांकि, परियोजना क्षेत्र में स्थानीय हितधारकों द्वारा किए जा रहे बाँध–विरोधी गतिविधियों के कारण पीएफआर बनाने में देरी हुई है। विस्थापन और पर्यावरणीय प्रभावों की चिंताओं से प्रेरित इन विरोधों के परिणामस्वरूप प्रमुख गतिविधियों को फिलहाल निलंबित किया गया है, जिसमें परियोजना के आगामी विकास के लिए महत्वपूर्ण कोर ड्रिलिंग कार्य भी शामिल है।

इन चुनौतियों के बावजूद, केंद्र तथा राज्य सरकारें स्थानीय समुदायों की चिंताओं को दूर करने, समाधान खोजने और यह सुनिश्चित करने के लिए सक्रिय रूप से लगी हुई हैं कि परियोजना सभी हितधारकों के हितों की रक्षा करते हुए आगे बढ़े।

अपर सियांग बहुउद्देशीय भंडारण परियोजना में एनएचपीसी लिमिटेड की महत्वपूर्ण भागीदारी होने की वजह से एनएचपीसी को पूर्वोत्तर भारत में एक मजबूत व्यावसायिक उपस्थिति मिलेगी जिससे भारत के इस क्षेत्र में कंपनी को सतत विकास के अवसर मिलेंगे।

परियोजना की आगे की प्रगति के लिए एनएचपीसी लिमिटेड प्रतिबद्ध है और इसी दिशा में वहां विभिन्न प्रकार की विकासात्मक आउटरीच गतिविधियां कर रही है।

## चीन द्वारा विशाल ब्रह्मपुत्र बाँध का निर्माण – भारत व बांग्लादेश के परिप्रेक्ष्य में

प्रमुख समाचार पत्रों में प्रकाशित रिपोर्टों के अनुसार, 137 बिलियन डॉलर की यह परियोजना स्वच्छ ऊर्जा और क्षेत्रीय विकास का वादा तो करती है, लेकिन इससे भारत और बांग्लादेश के लिए पारिस्थितिकी क्षति, भू–राजनीतिक तनाव और जल व्यवधान का खतरा है।

**केंद्रीय जल आयोग के अनुसार, ब्रह्मपुत्र में 60% पानी भारत से आता है, जबकि 40% तिब्बत से आता है। अपर सियांग परियोजना क्षेत्र में कुल वार्षिक उपलब्धता लगभग 109 बीसीएम है।**

- चीन तिब्बत में ब्रह्मपुत्र पर विश्व का सबसे बड़ा बाँध बनाने की योजना बना रहा है।
- बाँध से भारत और बांग्लादेश के लिए भू–राजनीतिक चिंताएं बढ़ गई हैं।

चीन द्वारा ब्रह्मपुत्र नदी पर 'यारलुंग' नाम से दुनिया का सबसे बड़ा बाँध बनाने का निर्णय लिया गया है। तिब्बत क्षेत्र में जलविद्युत इंजीनियरिंग के लिए यह एक पथप्रवर्तक पल है क्योंकि यह एक ऐसा महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचा बनने जा रहा है जो दक्षिण एशिया में भू–राजनीति, ऊर्जा उत्पादन और पारिस्थितिकी स्थिरता को नई परिभाषा देगा।

इस बाँध की अनुमानित लागत 137 बिलियन डॉलर है, जिसे तिब्बत के मेडोग काउंटी में ग्रेट बैंड पर बनाया जाना प्रस्तावित है। इस स्थान पर नदी 50 किलोमीटर के क्षेत्र में 2,000 मीटर नीचे की ओर गिरती है। यह प्राकृतिक विशेषता इसे दुनिया भर में सबसे अधिक जलविद्युत–समृद्ध क्षेत्रों में से एक बनाती है, जो वर्ष में 60 गीगावाट विद्युत उत्पादन करने में सक्षम है और जो चीन में यांग्त्जी नदी पर बने थ्री गॉर्जेस बाँध के उत्पादन से तीन गुना अधिक है।

यह विशाल परियोजना, चीन द्वारा 2060 तक कार्बन तटस्थता हासिल करने की व्यापक रणनीति का हिस्सा है और इसे इसकी 14वीं पंचवर्षीय योजना में एक महत्वपूर्ण कदम के रूप में देखा जा रहा है। इस परियोजना से तिब्बती क्षेत्र में आर्थिक विकास में तो वृद्धि होगी ही साथ ही लाखों लोगों को स्वच्छ, नवीकरणीय ऊर्जा भी मिलेगी। हालांकि, यह बाँध चीन की भू–राजनीतिक आकांक्षाओं को भी रेखांकित करता है, क्योंकि इस बाँध के निर्माण के साथ ही भारत एवं बांग्लादेश जैसे निचले क्षेत्र में स्थित देशों के लिए चिंताएं बढ़ जाती हैं।

## चीन द्वारा बाँध का निर्माण–कारण

इतना वृहद बाँध बनाने के पीछे चीन ने आधिकारिक दो तर्क दिए हैं– एक पर्यावरणीय स्थिरता और दूसरा क्षेत्रीय विकास। इस परियोजना द्वारा ब्रह्मपुत्र की जलविद्युत क्षमता का दोहन करके चीन अपने नवीकरणीय ऊर्जा लक्ष्यों को पूरा करने की ओर तेजी से अग्रसर होगा क्योंकि इस परियोजना से 300 बिलियन केडबल्यूएच वार्षिक विद्युत उत्पादन की उम्मीद है । इस ऊर्जा की अधिकता से चीन के उत्तरी और पूर्वी प्रांतों में ऊर्जा की कमी को पूरा किया जाएगा।

विकास के दृष्टिकोण से, बाँध से तिब्बत की अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिलने, रोजगार सृजन और बुनियादी ढांचे में सुधार होने की उम्मीद है। चीनी अधिकारियों का तर्क है कि यह परियोजना न केवल स्वच्छ ऊर्जा की जरूरतों को पूरा करेगी बल्कि जल संसाधन प्रबंधन और ऊर्जा स्वतंत्रता सुनिश्चित करके राष्ट्रीय सुरक्षा को भी बढ़ाएगी। पावर कंस्ट्रक्शन कॉरपोरेशन ऑफ चाइना के अध्यक्ष यान झियोंग ने बाँध को राष्ट्रीय सुरक्षा, ऊर्जा और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग की एक परियोजना बताया, जो इसके बहुआयामी उद्देश्यों को दर्शाता है।

हालांकि, आलोचक चीन के उस इतिहास की ओर इशारा करते हैं जिसमें वह सीमा पार की नदियों का इस्तेमाल रणनीतिक औजार के रूप में करता रहा है ताकि वह अपने पड़ोसी देशों पर प्रभाव डाल सके। ब्रह्मपुत्र बाँध के जल प्रवाह को बाधित करने की क्षमता और इसके विशाल आकार ने दक्षिण एशिया में भू–राजनीतिक तनाव को बढ़ा दिया है।

ब्रह्मपुत्र पर बाँध बनाने पर चीन का ध्यान 2010 के दशक से ही है, जब नदी के ऊपरी इलाकों में छोटे बाँध बनाए गए थे। जाम हाइड्रो पावर स्टेशन इस श्रृंखला की पहली बड़ी परियोजना थी जो वर्ष 2015 में चालू की गई थी। समय के साथ, चीन ने मुख्य रूप से जल विद्युत उत्पादन के लिए दागू, जिएक्सू और जियाचा जैसे कई बाँधों का निर्माण कर उन्हें चालू किया है।

ग्रेट बैंड पर मौजूदा परियोजना, यद्यपि एक महत्वपूर्ण प्रसार को दर्शाती है। इस स्थान में मौजूद खाड़ियां और बड़े पैमाने पर उपलब्ध जल के कारण यह क्षेत्र विद्युत उत्पादन के लिए आदर्श है, लेकिन साथ ही इस क्षेत्र में भूकंपीय खतरा और पारिस्थितिकी संबंधी चिंताओं जैसी चुनौतियां भी हैं। यह बाँध नदी के निचले इलाकों में भारतीय सीमा के करीब बनाया जाने वाला पहला बाँध है, इस वजह से भारत के लिए इसके रणनीतिक आशय संबंधी चिंताएं बढ़ गई हैं।

## ब्रह्मपुत्र का सामरिक महत्व

ब्रह्मपुत्र नदी का उद्गम किंघई–तिब्बत पठार से होता है और यह बांग्लादेश में प्रवेश करने से पहले अरुणाचल प्रदेश और असम से होकर बंगाल की खाड़ी में जाकर मिलती है। 2,900 किलोमीटर तक फैलाव वाली यह नदी दुनिया की सबसे बड़ी नदियों में से एक है, जो कृषि, मत्स्य पालन और परिवहन के जरिए लाखों लोगों का जीवनयापन करती है। यह नदी अपनी अस्थिरता के लिए भी कुख्यात है। इसका अधिक सेडीमेंट भार और मौसमी उतार–चढ़ाव इसे विनाशकारी बाढ़ (खासकर असम और बांग्लादेश क्षेत्र में) के लिए उपयुक्त बनाते हैं। चुनौतियों के बावजूद, ब्रह्मपुत्र इस क्षेत्र के लिए एक जीवन रेखा है, जो उपजाऊ कृषि भूमि और जीवंत परिस्थितिकी तंत्र में सहायक है।

## भारत पर मेड़ोग बाँध का संभावित प्रभाव

हिमालय क्षेत्र दुनिया के सबसे भूकंपीय रूप से सक्रिय क्षेत्रों में से एक है। मेडोग में योजनाबद्ध बड़े बाँध भूकंप और भूस्खलन के जोखिम को बढ़ाते हैं, जिसकी वजह से लाखों लोगों के जीवन को खतरा हो सकता है। भू–रणनीतिज्ञ 'ब्रह्मा चेलानी' बताते हैं कि चीन की बाँध निर्माण गतिविधियां एक प्रकार का 'जल शस्त्रीकरण' है जो भू–राजनीतिक फायदे के लिए सीमा–पार की नदियों पर अपने नियंत्रण हेतु अपनी परिस्थिति का लाभ ले रहा है।

## ब्रह्मपुत्र पर चीन का नियंत्रण–भारत के लिए खतरा

**मानसून के दौरान बाढ़ः** भारी बारिश के दौरान अतिरिक्त पानी छोड़े जाने से असम और अरुणाचल प्रदेश में बाढ़ की स्थिति और खराब हो सकती है, ये क्षेत्र पहले से ही मानसून के दौरान बाढ़ के प्रति संवेदनशील है। असम का लगभग 40 प्रतिशत हिस्सा संभावित बाढ़ की चपेट में रहता है, इसलिए आपदा की संभावना अधिक बढ़ जाती है।

**लीन सीजन में सूखाः** इसके विपरीत, शुष्क महीनों के दौरान सीमित जल प्रवाह से भारत में कृषि, जलविद्युत और पेयजल आपूर्ति बाधित हो सकती है। ब्रह्मपुत्र भारत के मीठे पानी के संसाधनों का 30 प्रतिशत हिस्सा है, इसलिए इसका निर्बाध प्रवाह क्षेत्र के निर्वाह के लिए महत्वपूर्ण है।

**सामरिक अति संवेदनशीलताः** नदी के ऊपरी हिस्से में स्थित देश के रूप में, चीन नदी के प्रवाह में हेरफेर कर सकता है, जिससे संघर्ष के समय भू–राजनीतिक लाभ मिल सकता है। विवाद के दौरान हाइड्रोलॉजिकल डेटा को रोका जा सकता है, जैसे 2017 में डोकलाम गतिरोध, जिससे पानी को हथियार के रूप में इस्तेमाल करने की संभावना बढ़ जाती है।

## भारत के जवाबी उपाय और चुनौतियां

भारत ने अरुणाचल प्रदेश में सियांग नदी पर 11.2 गीगावाट की जलविद्युत परियोजना के निर्माण प्रस्ताव की घोषणा की है, जिसका उद्देश्य पानी का बफर स्टोरेज बनाना और चीन के बाँध का जवाबी संतुलन बनाना है। हालांकि, इस परियोजना को स्थानीय स्तर पर काफी विरोध और पर्यावरणीय चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, जिससे इसका क्रियान्वयन जटिल हो रहा है। भारत, चीन के साथ हाइड्रोलॉजिकल डेटा साझा करने के लिए 2006 में स्थापित विशेषज्ञ स्तरीय तंत्र (ईएलएम) पर भी निर्भर है। हालांकि इस तंत्र ने बाढ़ के मौसम के दौरान सहयोग को सुविधाजनक बनाया है, लेकिन इसकी सीमाएं तब स्पष्ट हो गईं जब चीन ने डोकलाम गतिरोध के दौरान डेटा साझा करना बंद कर दिया। पानी के खतरों को कम करने के लिए इस तंत्र को मजबूत करना आवश्यक है।

ब्रह्मपुत्र के अंतिम डाउनस्ट्रीम क्षेत्र के रूप में, बांग्लादेश को बढ़ते हुए खतरों का सामना करना पड़ रहा है। बाँध के कारण नदी के प्रवाह में बदलाव की संभावना की वजह से पानी की उपलब्धता कम हो सकती है, तटीय क्षेत्रों में लवणता का अतिक्रमण बढ़ सकता है और कृषि तथा मत्स्य पालन पर निर्भर आजीविका को खतरा हो सकता है। बाढ़ का खतरा भी बढ़ सकता है, जिससे नदी के डेल्टा में रहने वाले लाखों लोगों के लिए खतरे की संभावना बढ़ जाएगी।

नई दिल्ली स्थित इंडो–पैसिफिक कंसोर्टियम में शोध निदेशक नीरज सिंह मन्हास ने चीन के अपस्ट्रीम प्रभुत्व का मुकाबला करने के लिए भारत द्वारा एक मजबूत रणनीति अपनाने पर जोर दिया है तथा मजबूत क्षेत्रीय सहयोग एवं बुनियादी ढांचे को विकसित करने का सुझाव दिया है। भारत को चीन के साथ एक मजबूत क्षेत्रीय जल–साझाकरण संधि की वकालत करने के लिए बांग्लादेश के साथ मिलकर काम करना चाहिए, जिसमें न्याय संगत पहुंच और सुदृढ प्रबंधन पर बल दिया जाना चाहिए।

इसके अतिरिक्त, भारत को संयुक्त राष्ट्र जैसे अंतरराष्ट्रीय मंचों पर सीमा–पार नदी न्याय संगत शासन प्रणाली के मुद्दे को भी आगे बढ़ाना चाहिए। घरेलू स्तर पर, ब्रह्मपुत्र की सहायक नदियों पर बाँध बनाने और बाढ़ नियंत्रण बुनियादी ढांचे को विकसित करने के प्रयासों में तेजी लानी चाहिए। साथ ही, भारत को चीन पर सख्त समझौतों पर बातचीत करने के लिए कूटनीतिक दबाव डालना चाहिए जो सुसंगत और विश्वसनीय हाइड्रोलॉजिकल डेटा को साझा करने की गारंटी देते हैं।

चीन का ब्रह्मपुत्र सुपर–डैम उसकी तकनीकी क्षमता और भू–राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं का प्रतीक है। हालांकि, यह स्वच्छ ऊर्जा और क्षेत्रीय विकास का वादा करता है लेकिन भारत और बांग्लादेश पर इसके संभावित डाउनस्ट्रीम प्रभावों को कम करके नहीं आंका जा सकता। भारत के लिए रणनीतिक कूटनीति, मजबूत बुनियादी ढांचे और क्षेत्रीय सहयोग के संयोजन के माध्यम से अपने हितों की रक्षा करने में चुनौतियां हैं। ब्रह्मपुत्र लाखों लोगों के लिए एक महत्वपूर्ण संसाधन है और इसका सभी तटवर्ती राज्यों के लिए समान विकास और पर्यावरण संरक्षण सुनिश्चित किया जाना चाहिए।

राष्ट्र हितों की रक्षा और नए भारत के सपनों को पूरा करने में इस परियोजना की महत्वपूर्ण भूमिका रहने वाली है। एनएचपीसी लिमिटेड, सियांग बेसिन में जल विद्युत परियोजना के निर्माण के लिए प्रतिबद्ध है और इसके प्रगति में निरंतर कार्यरत है। यदि एनएचपीसी लिमिटेड द्वारा सियांग बेसिन परियोजनाओं का निर्माण किया जाता है तो ये परियोजनाएं पूरी दुनिया में भारत की जलविद्युत परियोजनाओं की निर्माण कार्यक्षमता को प्रदर्शित करने में मील का पत्थर साबित होंगी।

सम्मान

## सलाल पावर स्टेशन व नराकास, रियासी
## भारत सरकार द्वारा राजभाषा शील्ड पुरस्कारों से सम्मानित

दिनांक 17 फरवरी 2025 को राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के द्वारा जयपुर में आयोजित संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन व पुरस्कार वितरण समारोह में निगम के सलाल पावर स्टेशन को प्रथम तथा सलाल पावर स्टेशन की अध्यक्षता में संचालित नराकास, रियासी को द्वितीय राजभाषा शील्ड पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। एनएचपीसी के अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक श्री राज कुमार चौधरी तथा निदेशक (कार्मिक) श्री उत्तम लाल ने माननीय मुख्य मंत्री, राजस्थान श्री भजन लाल व गृह राज्य मंत्री, भारत सरकार श्री नित्यानंद राय के कर कमलों से प्रथम राजभाषा शील्ड व प्रमाण–पत्र ग्रहण किया।

नराकास, रियासी का द्वितीय राजभाषा शील्ड पुरस्कार व प्रमाण–पत्र सलाल पावर प्रमुख श्री अनीष गौरहा, समूह महाप्रबंधक तथा श्री कुलदीप कुमार शर्मा, उप प्रबंधक (राजभाषा) ने मंचासीन महानुभावों के कर कमलों से ग्रहण किया। इस पुरस्कार वितरण समारोह में एनएचपीसी के अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक श्री राज कुमार चौधरी की मंच पर विशेष उपस्थिति रही।

सम्मेलन के द्वितीय सत्र के दौरान श्रीमती मीनाक्षी जौली, संयुक्त सचिव, राजभाषा विभाग के कर कमलों से सलाल पावर स्टेशन की वार्षिक गृह पत्रिका 'स्मारिका' के पंचम अंक का विमोचन भी किया गया।

विविध आलेख

# प्रोबा-3 मिशन - सूर्य के और नजदीक पहुंचा भारत

**अभिषेक कुमार मिश्र, प्रबंधक (भूविज्ञान)**
अभियांत्रिकी भूविज्ञान एवं भूतकनीकी विभाग, निगम मुख्यालय (फरीदाबाद)

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने पूरे देश को एक साथ गर्व करने के कई क्षण दिए हैं। इन्हीं गौरव के क्षणों में, प्रोब–3 मिशन के सफल लॉन्च के साथ, एक गौरवमयी क्षण और जुड़ गया है। श्रीहरिकोटा के सतीश धवन स्पेस सेंटर के लॉन्च पैड ए–01 से 5 दिसंबर 2024 की शाम चार बजकर चार मिनट पर पीएसएलवी–एक्सएल रॉकेट से लॉन्चिंग की गई। मात्र 26 मिनट की उड़ान के बाद इसरो के रॉकेट ने इन उपग्रहों को अंतरिक्ष में स्थापित कर दिया। यह मिशन न्यू स्पेस इंडिया लिमिटेड (एनसिल) के नेतृत्व में और इसरो की अधुनातन तकनीक के सहयोग से यूरोपीय अंतरिक्ष एजेंसी (ईएसए) के अत्याधुनिक प्रोबा–3 उपग्रहों को अंतरिक्ष में स्थापित करने का एक महत्वपूर्ण कदम है। यह अंतर्राष्ट्रीय सहयोग का एक उत्कृष्ट उदाहरण है और भारत की बढ़ती अंतरिक्ष क्षमताओं की अंतर्राष्ट्रीय स्वीकृति को प्रदर्शित करता है।

**प्रोबा-3 मिशन का ग्राफिक निरूपण**

## पीएसएलवी–सी 59 रॉकेट

इस मिशन में इसरो ने पीएसएलवी–सी 59 रॉकेट के प्रक्षेपण के माध्यम से अपना सहयोग दिया है। इस नामकरण में सी59 असल में रॉकेट कोड है। यह पीएसएलवी की 61वीं उड़ान और एक्सएल वैरिएंट की 26वीं उड़ान थी। यह रॉकेट 145.99 फीट ऊंचा है। चार स्टेज के इस रॉकेट का लॉन्च के समय वजन 320 टन होता है। यह रॉकेट प्रोबा–3 उपग्रह को 600 X 60,530 कि.मी. वाली अंडाकार ऑर्बिट में स्थापित करेगा।

## प्रोबा–3 मिशन

यूरोपीय अंतरिक्ष एजेंसी के प्रोबा–3 मिशन का लक्ष्य सूर्य के बाहरी वातावरण कोरोना का अध्ययन करना है। जो कोरोना सिर्फ सूर्य ग्रहण के समय कुछ क्षणों के लिए दिखाई देता है और इतने ही समय में दुनिया भर की खगोल वेधशालाएं इसके अध्ययन में खुद को झोंक देती हैं, ऐसी वेधशालाएं इस मिशन से काफी लाभान्वित होंगी। इस मिशन में दो उपग्रहों को एक साथ छोड़ा गया, जिनका कुल वजन 550 किलोग्राम है। इनमें पहला कोरोनाग्राफ स्पेसक्राफ्ट है और दूसरा ऑक्लटर स्पेसक्राफ्ट है।

## कोरोनाग्राफ स्पेसक्राफ्ट

310 किलोग्राम वजनी यह उपग्रह सूरज की तरफ मुंह करके स्थापित होगा। यह लेजर और विजुअल आधारित लक्ष्य निर्धारित करेगा। इसमें एएसपीआईआईसीएस यानी 'एसोसिएशन ऑफ स्पेसक्राफ्ट फॉर पोलैरीमेट्रिक और इमेंजिंग इन्वेस्टिंगेशन ऑफ कोरोना ऑफ द सन'

यंत्र लगा है। इसके अलावा इसके अंदर 3डीईईएस यानी 3–डी इनरजेटिक इलेक्ट्रॉन स्पेक्ट्रोमीटर भी है। यह सूरज के बाहरी और अंदरूनी कोरोना के बीच के गैप का अध्ययन करेगा। साथ ही सूरज के सामने स्थित रहेगा, जिस प्रकार सूर्य ग्रहण में चंद्रमा सूरज के सामने आता है। उल्लेखनीय है कि भारत के आदित्य एल–1 मिशन में कोरोनाग्राफ एवं ऑकुल्टर दोनों उपकरण एक ही कृत्रिम उपग्रह में शामिल थे, जबकि इस मिशन में दोनों उपकरणों के लिए अलग–अलग कृत्रिम उपग्रह होगा। दुनिया में पहली बार प्रोबा–3 मिशन में दो कृत्रिम उपग्रह 'समानांतर उपग्रह युग्म' संरचना में होंगे।

## ऑक्लटर स्पेसक्राफ्ट

240 किलोग्राम वजन वाला यह स्पेसक्राफ्ट कोरोनाग्राफ के पीछे रहेगा। जैसे ग्रहण में सूरज के सामने चंद्रमा और उसके पीछे धरती रहती है। इसमें लगा डीएआरए यानी डिजिटल एब्सोल्यूट रेडियोमीटर साइंस एक्सपेरीमेंट इंस्ट्रूमेंट कोरोना से मिलने वाले डेटा का अध्ययन करेगा।

## सूरज के चारों तरफ मौजूद गैप का अध्ययन

ये दोनों उपग्रह एक साथ एक रेखा में 150 मीटर की दूरी पर धरती का चक्कर लगाते हुए सूरज के कोरोना का अध्ययन करेंगे और प्रतिदिन छह घंटे तक एक ही दिशा में उड़ेंगे। इस सापेक्ष स्थिति को बनाए रखने के लिए, एक कृत्रिम उपग्रह से दूसरे कृत्रिम उपग्रह पर लगे रिफ्लेक्टर पर लेजर प्रकाश का उपयोग किया जाएगा।

वस्तुतः सूरज में दो तरह के कोरोना–हाई कोरोना और लो कोरोना होते हैं, जिनका अध्ययन कई उपग्रह कर रहे हैं। लेकिन इनके बीच के गैप का अध्ययन यानी काले हिस्से का अध्ययन प्रोबा–03 करेगा। प्रोबा–03 में लगे एएसपीआईआईसीएस यंत्र की वजह से इस काले गैप का अध्ययन करना आसान हो जाएगा।

यह सौर हवाओं और कोरोनल मास इजेक्शन का भी अध्ययन करेगा। इस उपग्रह की वजह से वैज्ञानिक

प्रोबा–3 मिशन का उद्देश्य

अंतरिक्ष के मौसम और सौर हवाओं का अध्ययन कर सकेंगे ताकि यह पता चल सके कि सूरज का डायनेमिक्स क्या है? इसका हमारी धरती पर क्या असर होता है?

## भविष्य में अन्य संभावनाएं

प्रोबा–3 मिशन अंतरिक्ष में एक प्रकार की प्रयोगशाला के रूप में कार्य करेगा जो रणनीतियों, मार्गदर्शन, नेविगेशन एवं नियंत्रण तथा अन्य एल्गोरिद्म, जैसे– सापेक्षिक जी.पी.एस. नेविगेशन आदि के संदर्भ में स्पष्टता प्रदान करेगी। इस तकनीक का उपयोग भविष्य के मंगल सैंपल रिटर्न मिशन और निम्न–पृथ्वी कक्षा से उपग्रहों को डी–ऑर्बिट करने के लिए भी किया जा सकता है।

इस मिशन की सफलता ने इसरो और भारत पर अन्य अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष संस्थाओं के विश्वास को मजबूत किया है। इसके परिणामस्वरूप, इसरो को और बड़े तथा महत्वपूर्ण अंतरिक्ष अभियानों की भागीदारी मिल सकती हैं। इसके अलावा यह इसरो को अपने आगामी मिशनों जैसे भारतीय स्पेस स्टेशन के निर्माण, गगनयान मिशन, जो भारत का पहला मानवयुक्त मिशन होगा जिसका उद्देश्य तीन भारतीय अंतरिक्ष यात्रियों को तीन दिन के लिए धरती की सतह से करीब 400 कि.मी. दूर अंतरिक्ष में ले जाना और उन्हें धरती पर सुरक्षित वापस लाना है, के साथ चाँद पर मानव मिशन भेजने जैसे बड़े लक्ष्यों को पाने की मजबूत आधारशिला रखने में सहायक होगा।

विविध आलेख

# भाषा और अनुवाद

**कमलेश कुमार, सहायक राजभाषा अधिकारी**
राजभाषा विभाग, निगम मुख्यालय (फरीदाबाद)

संस्कृत भाषा की 'भाष' धातु से उपजा शब्द 'भाषा', जिसका पर्याय है 'वाणी की अभिव्यक्ति'। संस्कृत भाषा में एक सूक्ति है *'भाष् व्यक्तायां वाचि'* अर्थात मनुष्य की व्यक्त वाणी ही भाषा है। पारिभाषिक पक्ष पर नजर डालें तो डॉ. भोलानाथ तिवारी लिखते हैं– "भाषा उच्चारण अवयवों से उच्चारित प्रायः यादृच्छिक ध्वनि प्रतीकों की वह व्यवस्था है, जिसके द्वारा किसी भाषा में समाज के लोग आपस में विचारों का आदान–प्रदान करते हैं।"

भाषा मानवता की सबसे महत्वपूर्ण विशेषताओं में से एक होने के साथ ही साथ मानव सभ्यता का एक अभिन्न हिस्सा भी है। यह केवल संचार का माध्यम नहीं है, बल्कि यह संस्कृति, पहचान और समाज के विभिन्न पहलुओं का प्रतिनिधित्व करती है। भाषा के बिना, मनुष्य अपनी भावनाओं, विचारों और अनुभवों को एक–दूसरे के साथ साझा नहीं कर सकता। आज के तकनीकी युग में इंटरनेट, मोबाइल फोन और अन्य आधुनिक उपकरणों ने संचार के तरीके को पूरी तरह बदल दिया है। भाषायी क्षेत्र में अनुवाद का कार्य भाषा की सीमाओं को पार करने का एक साधन है, जो विभिन्न भाषाओं के बीच सेतु का काम करता है।

## भाषा का महत्व

भाषा का महत्व कई स्तरों पर देखा जा सकता है। सबसे पहले, यह मानव अनुभव के अभिव्यक्ति का एक माध्यम है। लोग अपनी भावनाओं, विचारों और आवश्यकताओं को व्यक्त करने के लिए भाषा का उपयोग करते हैं। इसके अलावा, भाषा सामाजिक समन्वय का एक उपकरण है। समूहों और समुदायों के बीच बातचीत और सहयोग को बढ़ावा देने के लिए एक सामान्य भाषा की आवश्यकता होती है।

भाषा केवल एक व्याकरणिक संरचना नहीं है बल्कि यह संस्कृति और सामाजिक इतिहास का भी प्रतिनिधित्व करती है। प्रत्येक भाषा में उसके बोलने वालों की सांस्कृतिक धरोहर, परंपराएं और मूल्य निहित होते हैं। उदाहरण के लिए, भारतीय उपमहाद्वीप की भाषाएं, जैसे हिंदी, बांग्ला, तमिल और पंजाबी प्रत्येक अपनी अनूठी सांस्कृतिक पहचान और इतिहास का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। इसलिए, एक भाषा को समझना केवल शब्दों का ज्ञान होना नहीं है बल्कि उस संस्कृति को भी समझना है जो उस भाषा के माध्यम से व्यक्त होती है।

21वीं सदी में तकनीकी ने मौलिक रूप से मानव जीवन के हर क्षेत्र को प्रभावित किया है, भाषा भी इससे अछूती नहीं रही है। संचार, शिक्षा, चिकित्सा, विज्ञान और व्यवसाय में प्रौद्योगिकी द्वारा क्रांतिकारी परिवर्तन आए हैं। संचार के नए तरीके जैसे ई–मेल, सोशल मीडिया और वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग ने हमें वास्तविक समय में संवाद करने की सुविधा दी है। इससे वैश्विक स्तर पर व्यापार बढ़ा है और ज्ञान का आदान–प्रदान भी तेजी से हुआ है।

## अनुवाद की प्रक्रिया

अनुवाद एक अत्यंत जटिल प्रक्रिया है, जिसमें एक भाषा के शब्दों और भावनाओं को दूसरी भाषा में परिवर्तित किया जाता है। यह केवल शब्दों का सरल–सा परिवर्तन नहीं है बल्कि उसमें भावनाओं, संदर्भों और सांस्कृतिक मतभेदों को भी ध्यान में रखना पड़ता है। अनुवादक को दोनों भाषाओं, अर्थात स्रोत और लक्ष्य भाषा, पर दक्षता होनी आवश्यक है ताकि वह अर्थ को सही तरीके से व्यक्त कर सके।

अनुवाद के सामयिक अनुवाद, साहित्यिक अनुवाद, तकनीकी अनुवाद, आदि जैसे विभिन्न प्रकार होते हैं। हर एक प्रकार के अनुवाद की अपनी चुनौतियां होती हैं। उदाहरण के लिए, साहित्यिक अनुवाद में अनुवादक को लेखक की शैली और भावना को बनाए रखना होता है जबकि तकनीकी अनुवाद में विषय संबंधी ज्ञान की आवश्यकता होती है।

## अनुवाद के सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभाव

अनुवाद का सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभाव अत्यधिक महत्वपूर्ण है। यह विभिन्न संस्कृतियों के बीच संवाद को संभव बनाता है और ज्ञान, साहित्य तथा कलाओं का आदान–प्रदान करता है। अनुवाद के माध्यम से, लोग विभिन्न देशों की सांस्कृतिक धरोहर को जान और समझ सकते हैं। उदाहरण के तौर पर, विश्व प्रसिद्ध साहित्य, जैसे 'महाभारत' 'रामायण' या 'द वेल्डिंग' का अनुवाद विभिन्न भाषाओं में किया गया है, जिससे ये रचनाएं विश्वभर में पढ़ी जा सकें।

अनुवाद का एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू यह है कि यह भाषाई भेदभाव को समाप्त करने में मदद कर सकता है। जब लोग विभिन्न भाषाओं में संवाद करने में सक्षम होते हैं तो यह सहिष्णुता, समझदारी और सहयोग को बढ़ावा देता है। इससे आपसी रिश्तों में सुधार होता है और वैश्विक नागरिकता की भावना का विकास होता है।

## चुनौतियां और भविष्य

हालांकि अनुवाद की प्रक्रिया महत्वपूर्ण है, लेकिन इसमें कुछ चुनौतियां भी होती हैं। भाषा की जटिलता, संदर्भ की विविधता और सांस्कृतिक मतभेद कभी–कभी अनुवाद को कठिन बना सकते हैं। अनुवादक को सावधानीपूर्वक काम करना होता है ताकि वह अर्थ को सही तरीके से व्यक्त कर सके। विशेष रूप से, अनुवाद में निरंतरता बनाए रखना और भाषा के प्रति संवेदनशील रहना आवश्यक होता है।

तकनीकी प्रगति के साथ, अनुवाद के क्षेत्र में भी बदलाव आ रहा है। मशीन लर्निंग और एआई के विकास से स्वचालित अनुवाद उपकरणों का उदय हुआ है। हालांकि ये उपकरण उपयोगी हैं लेकिन वे अभी भी मानव अनुवादक की सृजनात्मकता और संवेदनशीलता की तुलना में सीमित हैं। इसलिए, भले ही तकनीक ने अनुवाद को आसान बना दिया हो लेकिन मानव अनुवादक की भूमिका कभी समाप्त नहीं होगी।

## निष्कर्ष

भाषा और अनुवाद के बीच का संबंध मानव समाज के बहुत सारे पहलुओं का प्रतिनिधित्व करता है। भाषा हमारे विचारों और भावनाओं का माध्यम है जबकि अनुवाद उन विचारों और भावनाओं को दुनिया के विभिन्न हिस्सों में फैलाने का कार्य करता है। अनुवाद का कार्य केवल एक तकनीकी प्रक्रिया नहीं है बल्कि यह सांस्कृतिक, सामाजिक और वैश्विक संवाद को बनाता है। इसलिए, हमें भाषा और अनुवाद के महत्व को समझना चाहिए और इसे समर्पण के साथ आगे बढ़ाना चाहिए।

इस प्रकार, भाषा और अनुवाद का अध्ययन न केवल भाषा विज्ञान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण है बल्कि यह वैश्विक संवाद और संस्कृति का एक अभिन्न हिस्सा भी है। अनुवादक की भूमिका हमारे समाज में बेहद महत्वपूर्ण है और हमें उनकी मेहनत और समर्पण को सराहना चाहिए।

ऊर्जा समृद्धि

# कार्बन क्रेडिट एवं कार्बन ट्रेडिंग

**मनीष कुमार, उप प्रबंधक (फिशरीज)**
पर्यावरण एवं विविधता प्रबंधन विभाग, निगम मुख्यालय (फरीदाबाद)

आमतौर पर कार्बन क्रेडिट, हमारे वायुमंडल में वायु प्रदूषण को कम करने का एक मध्यम मार्ग है। इसे, प्रदूषित हवा को साफ करने का एक जरिया भी माना जा सकता है। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो कार्बन क्रेडिट, वायु प्रदूषण को एक स्तर तक नियंत्रित रखने का कार्य करता है।

## कार्बन

रसायन की भाषा में हर जीवित पदार्थ जैसे जीव–जंतु, पेड़–पौधों आदि के अंदर कार्बन तत्त्व मौजूद होते हैं। ये जीवित पदार्थ जब मृत अवस्था को प्राप्त करते हैं, तब भी इनके अंदर कार्बन तत्त्व मौजूद रहता है। जब लाखों–करोड़ों वर्षों तक मृत पौधे, समुद्री जीव–जंतु आदि समुद्र की तलछट में दबे रहते हैं तो जीवाश्म ईंधन में बदल जाते हैं, जिसे रिफाइनरियों द्वारा कच्चे तेल के रूप में प्राप्त किया जाता है, जिसके फलस्वरूप पेट्रोल, डीजल आदि ईंधन उपलब्ध हो पाते हैं। इसी तरह कोयला जैसे जीवाश्म ईंधन भी लाखों–करोड़ों वर्षों से मिट्टी में दबी हुई लकड़ियों और जानवरों के अवशेष ही हैं। रसायन शास्त्र के अनुसार सभी जीवाश्म ईंधन असल में हाइड्रोकार्बन हैं, यानि हाइड्रोजन और कार्बन तत्त्व के अलग–अलग घटक वाले संयुक्त पदार्थ हैं। यह कार्बन कभी भी समाप्त नहीं होते, तब भी नहीं जब इनका इस्तेमाल ईंधन की तरह जलाने में किया जाता है। पारंपरिक जीवाश्म ईंधन जब जलते हैं, तो इनके कार्बन तत्त्व वायुमंडल में गैसों (कार्बन डाई ऑक्साइड, कार्बन मोनो ऑक्साइड आदि) के रूप में बाहर निकलता है। पर्यावरण की भाषा में यही गैसें, ग्रीनहाउस गैस के रूप में जानी जाती हैं। ये गैस ही हमारी पृथ्वी की हवा को बेहद खराब कर रही हैं, इतना खराब कि कई देशों में बच्चों को पानी की बोतल के साथ–साथ ऑक्सीजन का छोटा सिलेंडर (केन जैसा) लेकर स्कूल जाना पड़ रहा है। हालांकि इस स्थिति के लिए हम सब जिम्मेदार हैं, लेकिन सबसे ज्यादा जिम्मेदार हैं उद्योगों की वे चिमनियां, जो कार्बन वाला काला धुंआ वायुमंडल में छोड़ रही हैं।

प्रायः इन उद्योगों/औद्योगीकरण की वजह से बढ़ते 'वायु प्रदूषण' को रोकने के तीन तरीके हैं। (i) पहला ये कि उद्योगों को पूरी तरह बंद कर दिया जाए। लेकिन ये कुछ वैसा ही है कि किसी उपलब्ध संसाधन का इस्तेमाल ही न किया जाए ताकि वो हमेशा सर्वसुरक्षित बना रहें । देखा जाए तो ऐसा संभव भी नहीं है क्योंकि हम इंसानों ने जिस तरह की दुनिया बना दी है, उसमें

उद्योगों के बिना काम चलाना अब मुश्किल लगता है। (ii) दूसरा तरीका है कि उद्योगों को पूरी तरह से ऐसे ईंधन पर संचालित किया जाए जिनसे प्रदूषण नहीं फैलता। अर्थात सारे उद्योगों को अक्षय ऊर्जा संसाधनों (सौर, पवन ऊर्जा आदि) से चलाया जाए। ऐसे में कार्बन उत्सर्जन 'जीरो' किया जा सकता है। लेकिन ये फिलहाल दूर की कौड़ी है। आनन–फानन में ये तुरंत नहीं हो सकता कि दुनिया के सारे देश भूटान की तरह निगेटिव कार्बन उत्सर्जन करने लगें। वैसे हमारे देश के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने नवंबर 2021 में यूएनएफसीसीसी के तहत हुई कॉप 26 कांफ्रेंस में कहा है कि हम 2070 तक जीरो कार्बन उत्सर्जन का लक्ष्य पूरा कर पाएंगे। (iii) ऐसे में एक मात्र तरीका बचता है और वो है 'कार्बन क्रेडिट', जो बीच के मार्ग को अपनाता है। इस तरीके से न विकास रुकेगा और न ही हवा और अधिक बदतर (खराब) होगी।

## कार्बन क्रेडिट का अस्तित्व में आना

यूएनएफसीसीसी यानी 'यूनाइटेड नेशंस फ्रेमवर्क कन्वेंशन ऑन क्लाइमेट चेंज' ने साल 1997 में क्योटो प्रोटोकॉल बनाया। यह तय हुआ कि क्योटो प्रोटोकॉल साइन करने वाले देश ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन पर बनाए गए नियमों का अनुपालन करेंगे। अनुपालन करने का मतलब है कि अपने–अपने देश के उद्योगों में इसका अनुपालन करवाएंगे। बाद में 2015 के पेरिस समझौते में भी जलवायु परिवर्तन को लेकर कुछ नियम व शर्ते बनाई गई, जिन पर दुनिया के 195 देश सहमत भी हुए। ये नियम या मानदंड कुछ यूं थे कि कोई देश या उद्योग एक 'निर्धारित सीमा' से ज्यादा कार्बन डाई ऑक्साइड या उसके बराबर किसी दूसरी ग्रीनहाउस गैस का उत्सर्जन नहीं कर सकते। यह सीमा, कार्बन क्रेडिट नामकरण की मदद से ही संभव हो सकी। एक "कार्बन क्रेडिट" का मान "एक टन कार्बन डाई ऑक्साइड" के बारबर या इसके जैसी किसी दूसरी ग्रीनहाउस गैस के अनुपात में मान को निर्धारित किया गया। यह शर्त रखी गई कि कोई भी देश उतने ही टन ग्रीनहाउस गैस रिलीज (एमिट) कर सकता है, जितने उसके पास कार्बन क्रेडिट उपलब्ध होंगें।

अब अगर सारे देश और उनके उद्योग ये निर्धारित सीमा वाली शर्त मानते हैं और कार्बन क्रेडिट जितनी ही टन ग्रीनहाउस गैस रिलीज करते हैं, तो संभवतः आज के दौर में न तो प्रदूषण की समस्या बढ़ती, न उद्योगों को अतिरिक्त कार्बन क्रेडिट कमाने पड़ते और न ही कार्बन क्रेडिट के लेनदेन का व्यापार शुरू होता। लेकिन हम सब जानते हैं कि दुनिया के लिए विकास बहुत जरूरी है और फिर इस बात को भी नकारा नहीं जा सकता कि निर्धारित सीमा और शर्तें तो बनते–टूटते और संशोधित होते ही रहते हैं। बहरहाल यहां कार्बन उत्सर्जन की शर्तों के टूटने से शुरू हुआ कार्बन क्रेडिट कमाने और उनका लेन–देन करने का व्यापार, जिसे 'कार्बन ट्रेडिंग' के रूप में जाना जाता है।

## कार्बन क्रेडिट कमाने का तरीका

उदाहरण के तौर पर, यदि किसी देश ने क्योटो प्रोटोकॉल पर हस्ताक्षर किया है और उसे कार्बन उत्सर्जन के लिए निर्धारित सीमा के रूप में 100 कार्बन क्रेडिट मिले है। इसका मतलब वह देश अब 100 टन कार्बन डाई ऑक्साइड का उत्सर्जन कर सकता है, परंतु उससे ज्यादा नहीं कर सकता। लेकिन अगर उस देश का कार्बन उत्सर्जन, 100 कार्बन क्रेडिट सीमा से अधिक हुआ है तो उस देश तथा वहां की कंपनियों के पास दो रास्ते बचते हैं। एक, वे कुछ ऐसी नई तकनीक विकसित करें जिससे उनका औद्योगिक कार्बन उत्सर्जन कम हो जाए और कार्बन क्रेडिट की उनकी निर्धारित सीमा न टूटे। इस तरह उनके उद्योग सामान्य तौर पर चलते रहेंगे। लेकिन अगर वह देश ऐसा करने में असफल रहता है, तो उसे दूसरा रास्ता अपनाना पड़ेगा। दूसरा रास्ता ये है कि वे अन्य किसी दूसरे देश में कोई ऐसी

तकनीक विकसित कर दें ताकि उस दूसरे देश में ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन कम हो सके। उदाहरणतः वे किसी दूसरे देश में सौर पैनल लगवा दें, पवन ऊर्जा संयंत्र स्थापित कर दें अथवा पेड़–पौधे लगाने का कार्य करें। साफ शब्दों में कहा जाए तो वे किसी दूसरे देश में जाकर ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन कम करने वाली किसी परियोजना में निवेश कर दें।

यह निवेश, कार्बन क्रेडिट कमाने के उद्देश्य से किया जाता है। उदाहरणतः, जैसे उस देश ने दूसरे किसी देश में किसी ऐसी परियोजना में निवेश कर दिया, जिससे ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन कम होता है। निवेश के बाद परियोजना ने अपना कार्य संपन्न किया और दूसरे देश द्वारा 5 टन कार्बन डाई ऑक्साइड उत्सर्जन कम हुआ। अब अनुपात के अनुसार निवेश करने वाली कंपनी को 5 टन कार्बन डाई ऑक्साइड उत्सर्जन कम करने के बदले 5 कार्बन क्रेडिट मिल जाएगा। इसी तरह अगर 100 टन कार्बन डाई ऑक्साइड उत्सर्जन कम हुआ होता तो 100 कार्बन क्रेडिट मिल जाते हैं। चूंकि देश भले ही अलग–अलग हों परंतु पृथ्वी तो एक ही है और उसकी हवा भी एक ही है। अब ये निवेश करने वाली कंपनी जिसने दूसरे किसी देश में 5 टन हवा साफ करके 5 कार्बन क्रेडिट कमाए हैं, वह देश इन कार्बन क्रेडिट का इस्तेमाल अपने देश में कर सकता है। यानी उस कंपनी को अब अपने देश में किसी दूसरी परियोजना में 5 टन कार्बन डाई ऑक्साइड ज्यादा उत्सर्जन करने का परमिट मिल जाता है।

## कार्बन ट्रेडिंग

कुछ कंपनियों द्वारा कार्बन क्रेडिट को बेचने के लिए कमाने या खरीदने का कार्य किया जाता है तथा उसे ऐसे किसी देशों या कंपनियों को बेचा जाता है जिन्हें इसकी जरूरत होती है। इसी कार्बन क्रेडिट के उत्पादन और बिक्री के व्यापार को कार्बन ट्रेडिंग कहा जाता है। कार्बन क्रेडिट के उत्पादन के लिए ऐसी परियोजना शुरू करना जरूरी है जिनसे कार्बन डाई ऑक्साइड या उसके जैसी ही दूसरी ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन कम होता हो। ऐसी कई परियोजनाएं हैं– जैसे सौर ऊर्जा संयंत्र, पवन ऊर्जा संयंत्र, जल विद्युत ऊर्जा संयंत्र, बायो–मीथेनेशन संयंत्र, बड़े पैमाने पर वृक्षारोपण कार्य, बायो–फर्टिलाईजर परियोजनाएं, इलेक्ट्रिक वाहन, यहां तक कि ऐसे बल्ब या लाइटिंग परियोजनाएं जो एनर्जी एफीशिएंट हों। इन परियोजनाओं को कार्बन क्रेडिट प्रोग्राम जैसे–वीसीएस (वेरिफाइड कार्बन स्टैंडर्ड); यूएनएफसीसी (यूनाइटेड नेशंस फ्रेमवर्क कॉन्वेंशन ऑन क्लाइमेट चेंज); जीसीसी (ग्लोबल कार्बन काउंसिल) आदि के तहत पंजीकृत कराना अनिवार्य होता है।

## लाभ

कार्बन क्रेडिट के जरिए लघु पैमाने पर भी हम पृथ्वी की हवा साफ रखने की ओर अपना कदम बढ़ा सकते हैं। कुछ संगठन ये कार्य कर भी रहे हैं और बदले में मुनाफा कमा रहे हैं। भारत का सबसे स्वच्छ शहर कहे जाने वाले इंदौर का नगर निगम ऐसा पहली सिविक निकाय है, जिसने वर्ष 2020 में बायो–मीथेनेशन संयंत्र लगाए और 1.7 टन कार्बन उत्सर्जन रोका। बदले में, इंदौर नगर निगम ने 50 लाख रूपए कमाए हैं। चेन्नई कॉर्पोरेशन और चेन्नई स्मार्ट सिटी लिमिटेड भी इसी रास्ते पर हैं। चेन्नई कॉर्पोरेशन द्वारा मियावाकी अर्बन फॉरेस्ट एवं इसके जैसे कई ग्रीन इनीशिएटिव प्रोजेक्ट्स संचालित किए जा रहे हैं, जो कार्बन उत्सर्जन को कम करने का कार्य करते हैं और कार्बन ट्रेडिंग के लिए योग्य हैं। वर्ष 2021 में, डीएमआरसी यानी 'दिल्ली मेट्रो रेल कॉर्पोरेशन' ने करीब 3.5 मिलियन कार्बन क्रेडिट की बिक्री से 19.5 करोड़ रुपए की कमाई की है।

एनएचपीसी लिमिटेड द्वारा वित्तीय वर्ष 2019–2020 में करीब 10 लाख कार्बन क्रेडिट की बिक्री से 87.71 लाख

रुपए; वित्तीय वर्ष 2020–2021 में करीब 17 लाख कार्बन क्रेडिट की बिक्री से 2.16 करोड़ रुपए तथा वित्तीय वर्ष 2021–2022 में करीब 50 लाख कार्बन क्रेडिट की बिक्री से 54 करोड़ रुपए की कमाई की है।

## बाधाएं

क्योटो प्रोटोकॉल के तहत कार्बन उत्सर्जन में कटौती करने के लिए सिर्फ विकसित देश बाध्य थे। हालांकि पेरिस समझौते में किसी भी देश पर इसकी बाध्यता नहीं थी फिर भी क्योटो के तहत भारत जैसे कई विकासशील देशों ने लाखों कार्बन क्रेडिट कमाए, जिसे बहुत से विकसित देशों ने खरीदा, क्योंकि वे खुद कार्बन उत्सर्जन पर नियंत्रण करने में विफल हुए थे। इस वजह से क्योटो प्रोटोकॉल पर आम राय नहीं बन सकी। कई विकसित देशों ने खुद को क्योटो प्रोटोकॉल से अलग कर लिया इसीलिए अब उन देशों के लिए उत्सर्जन में कमी करना अनिवार्य नहीं रह गया। ऐसे में विकासशील देशों के कार्बन क्रेडिट नहीं बिक पाए। भारत के पास करीब 750 मिलियन कार्बन क्रेडिट उपलब्ध हैं, जिनकी बिक्री अब तक नहीं हो पाई है। चूंकि कार्बन क्रेडिट व्यापार योग्य हैं, इसीलिए एक ही कार्बन क्रेडिट को कई बार ट्रेड किया जा सकता है, जिसकी वजह से इनकी गिनती में समस्या आई है। विकासशील देशों की अपनी–अपनी मांगें हैं, वे चाहते हैं कि उन्होंने कार्बन उत्सर्जन में कमी की है तो उन्हें क्रेडिटों को बेचने के बाद भी एमिशन में कमी दिखाने का अधिकार दिया जाए।

बहरहाल, समस्याएं जो भी हों, रास्ता कोई भी निकले, लेकिन जलवायु परिवर्तन को लेकर बात अब व्यापार और आपसी विवादों से आगे बढ़ जानी चाहिए क्योंकि देशों की सीमाएं बांट देने से प्राकृतिक आपदाएं और महामारियां नहीं बंटा करती हैं।

## भ्रष्टाचार

सिर्फ रिश्वत लेना ही भ्रष्टाचार नहीं,
वह हर कृत्य भ्रष्टाचार है,
जिसमें ईमानदारी और सदाचार नहीं।

भ्रष्टाचारी कोई सीमा पार से नहीं आते,
अपने ही देश को ये दीमक की तरह खाते।
वेदना समझ सके न देश की,
मां का दूध हैं लज्जाते।

समझ सके तो समझा दो बातों से,
न समझे तो एक फटकार जरूरी है।
हर कोई यह कहता है,
मेरे एक के सुधारने से क्या होता है...

भ्रष्टाचार की लंका जलाने को,
सिर्फ एक ही हनुमान जरूरी है।

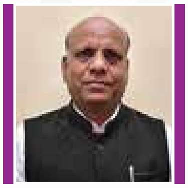

**गिर्राज सिंह, उप प्रबंधक (यांत्रिक)**
धौलीगंगा पावर स्टेशन, धारचूला (उतराखंड)

संस्मरण

# संत शिरोमणि - श्री नीम करोली बाबा

**डॉ. देवेन्द्र कुमार तिवारी, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)**
राजभाषा विभाग, निगम मुख्यालय (फरीदाबाद)

भक्त वत्सल, कृपा मूर्ति, दया के सागर, करूणालय–वरूणालय आप अनेक नामों से जाने जाते हैं। कोई आपको लक्ष्मण दास से जानता है, कोई नीब करौरी तो कोई तलैया बाबा आदि। कोई आपको 'महाराज' कह कर संबोधित करता है, कोई 'सरकार' तो कोई केवल 'बाबा'। सभी नाम सार्थक हैं। बाबा आप सर्वशक्तिमान, सर्वसमर्थ, सर्वदृष्टा, सर्वव्यापक एवं सर्वश्रोता हैं। आप सर्वज्ञ हैं, आपकी गति सर्वत्र है। अंतर्मन में उठने वाले इन विचारों की सत्यता आपसे छिपी नहीं है।

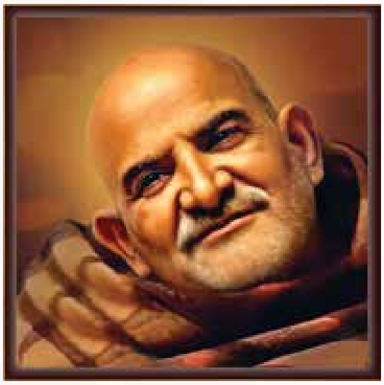

नीम करौली बाबा (जन्म 1900–देह त्याग 11 सितंबर 1973 ) जिन्हें 'महाराज जी' के नाम से भी जाना जाता है। 'महाराज जी' एक हिंदू गुरु और हनुमान जी के परम भक्त थे, उन्हें भारत के बाहर 1960 और 1970 के दशक में भारत की यात्रा करने वाले कई अमेरिकियों के आध्यात्मिक गुरु होने के लिए जाना जाता है। बाबा चमत्कारिक व्यक्तित्व थे उनके भक्त उन्हें हनुमान जी का अवतार मानते हैं। वे एक सीधे–सादे, सरल स्वभाव के व्यक्ति थे। उनके संबंध में कई तरह के चमत्कारिक किस्से बताए जाते हैं। उनके बारे में कहा भी जाता है कि *'जै जै जै हनुमंता तुम हो साक्षात भगवंता'*।

## जीवनी

नीम करौली बाबा का वास्तविक नाम लक्ष्मीनारायण शर्मा था। भारत के उत्तर प्रदेश के फिरोजाबाद जिले के अकबरपुर गांव में उनका जन्म 1900 के आसपास एक धनी ब्राह्मण परिवार में हुआ था। 11 वर्ष की उम्र में अपने माता–पिता द्वारा विवाह कर दिए जाने के बाद, वे साधु बनने के लिए घर छोड़कर चले गए। बाद में वे अपने पिता के अनुरोध पर एक व्यवस्थित विवाहित जीवन जीने के लिए घर लौट आए। गृहस्थ जीवन में उनके दो बेटे और एक बेटी हुई।

## महाराज जी के रूप में परिवर्तन

नीम करोली बाबा, जिन्हें उस समय बाबा लक्ष्मण दास के नाम से जाना जाता था, ने 1958 में अपना घर छोड़ दिया था। विदेशी लेखक राम दास (जो पहले रिचर्ड एलपर्ट के नाम से जाने जाते थे तथा हिंदू धर्म और योग अपनाने के बाद अपना नाम परिवर्तित कर लिया था) एक कहानी सुनाते हैं कि बाबा लक्ष्मण दास बिना टिकट के ट्रेन में चढ़ गए। बिना टिकट पाए जाने पर रेल कंडक्टर ने ट्रेन को रोकने का फैसला किया और उत्तर प्रदेश के फर्रुखाबाद जिले के नीम करोली गांव में बाबा को ट्रेन से उतार दिया। बाबा को ट्रेन से उतारने के बाद कंडक्टर ने पाया कि ट्रेन फिर से चल नहीं पा रही। ट्रेन चलाने के कई प्रयासों के बाद, किसी ने कंडक्टर को सुझाव दिया कि जिन साधु को ट्रेन से उतारा है उन्हें वापस ट्रेन में चढ़ने दें। बाबा दो शर्तों पर ट्रेन में चढ़ने के लिए सहमत हुए– 1) रेलवे नीम करोली गांव में एक स्टेशन बनाने का वादा करे (उस समय ग्रामीणों को निकटतम स्टेशन तक कई मील पैदल

चलना पड़ता था) और 2) रेलवे को अब से तपस्वियों के साथ बेहतर व्यवहार करना चाहिए। रेलवे अधिकारी सहमत हो गए और नीम करोली बाबा मजाक करते हुए ट्रेन में चढ़ गए। 'क्या, ट्रेन शुरू करना मेरे हाथ में है?' उनके चढ़ने के तुरंत बाद ट्रेन चल पड़ी, लेकिन ट्रेन के ड्राइवर तब तक आगे नहीं बढ़ पाए जब तक कि बाबा ने उन्हें आगे बढ़ने का आशीर्वाद नहीं दिया। आशीर्वाद मिलते ही ट्रेन आगे बढ़ गई। बाद में गांव में एक रेलवे स्टेशन बनाया गया। बाबा कुछ समय के लिए गांव में रहे और स्थानीय लोगों ने ही इस गांव के नाम पर उनका नाम 'नीम करोली बाबा' रखा।

इसके बाद वे पूरे उत्तरी भारत में घूमते रहे। इस दौरान उन्हें कई नामों से जाना गया, जिनमें शामिल हैं– 'लक्ष्मण दास', 'हांडी वाला बाबा' और 'तिकोनिया वाला बाबा'। जब उन्होंने गुजरात के मोरबी के वावनिया गांव में तपस्या और साधना की, तो उन्हें 'तलैया बाबा' के नाम से जाना गया। वृंदावन में, स्थानीय निवासी उन्हें 'चमत्कारी बाबा' के नाम से संबोधित करते थे।

## बाबा के आश्रम

नीम करौली बाबा के भारत में ही नहीं अपितु पूरे विश्व में असंख्य भक्त हैं। विदेशी भक्तों में एप्पल के मालिक स्टीव जॉब्स, फेसबुक के मालिक मार्क जुकरबर्ग और हॉलीवुड एक्ट्रेस जूलिया रार्बट्स का नाम भी लिया जाता है। कहा जाता है कि कैंची धाम की यात्रा करके भक्तों का जीवन बदल गया।

उनके जीवनकाल में दो मुख्य आश्रम बनाए गए, कैंची धाम और वृंदावन में। समय के साथ, उनके नाम पर 100 से अधिक मंदिरों का निर्माण किया गया। नीम करोली बाबा के आश्रम कैंची, भूमियाधार, काकरीघाट, कुमाऊं की पहाड़ियों में हनुमानगढ़ी, वृंदावन, ऋषिकेश, बिड़ला हनुमान मंदिर, नई दिल्ली, लखनऊ, शिमला, फार्रुखाबाद में खिमासेपुर के पास और नीम करोली गांव तथा दिल्ली में हैं। उनका आश्रम ताओस, न्यू मैक्सिको, संयुक्त राज्य अमेरिका में भी स्थित है।

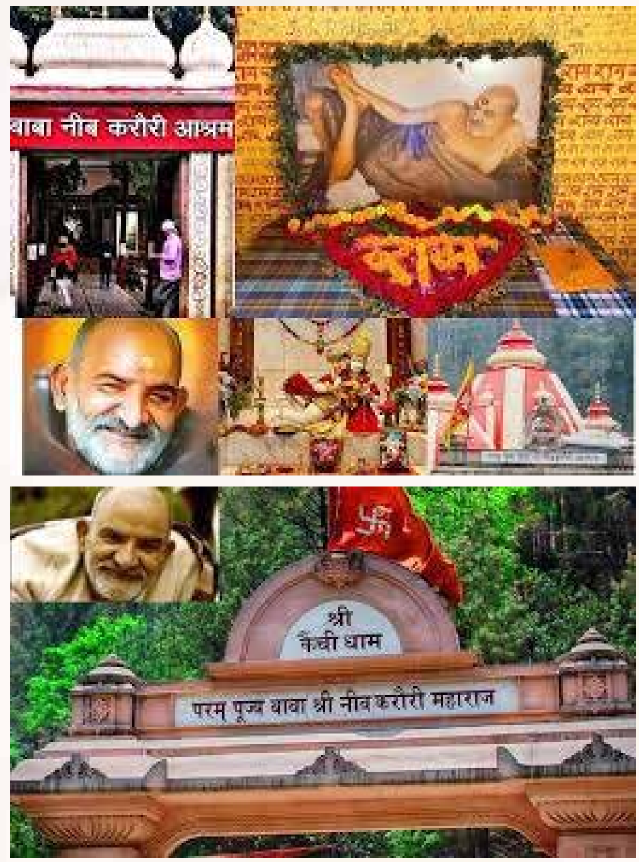


कैंची धाम, नैनीताल (उतराखंड) प्रवेश द्वार

कैंची धाम आश्रम जहां वे अपने जीवन के अंतिम दशक में रहे, वर्ष 1964 में हनुमान मंदिर के साथ बनाया गया था। इसकी शुरुआत दो साल पहले दो स्थानीय साधुओं, प्रेमी बाबा और सोमबारी महाराज के लिए यज्ञ करने के लिए बनाए गए एक मामूली मंच से हुई थी। पिछले कुछ वर्षों में नैनीताल से 38 कि.मी. दूर नैनीताल–अल्मोड़ा मार्ग पर स्थित यह मंदिर स्थानीय लोगों के साथ–साथ दुनिया भर के आध्यात्मिक साधकों और भक्तों के लिए एक महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल बन गया है। हर साल 15 जून को मंदिर के उद्घाटन के उपलक्ष्य में कैंची धाम भंडारा होता है, एक ऐसा उत्सव जिसमें आमतौर पर 100,000 से ज्यादा भक्त आते हैं। 15 जून को मंदिर में मेले का आयोजन होता है और देश–विदेश से हजारों की संख्या में भक्त, हनुमान जी का आशीर्वाद लेने आते हैं।

कैंची धाम, भवाली, नैनीताल (उतराखंड)

नीम करोली बाबा की मृत्यु 11 सितंबर 1973 को लगभग 1:15 बजे वृंदावन के एक अस्पताल में हुई। वे अत्यधिक मधुमेह के कारण कोमा में चले गए और उसके बाद कभी सांसारिक जीवन में नहीं लौटे। उस दिन वे आगरा से वापस अपने आश्रम कैंची धाम ट्रेन से लौट रहे थे, जहां वे सीने में दर्द महसूस होने के कारण हृदय रोग विशेषज्ञ के पास परामर्श के लिए गए थे। रास्ते में उनके शरीर में ऐंठन होने लगी और वे मथुरा रेलवे स्टेशन पर उतर गए। उनके साथ यात्रा करने वाले शिष्य उन्हें अस्पताल के आपातकालीन कक्ष में ले गए। अस्पताल में, डॉक्टर ने उन्हें चिकित्सकीय उपचार दिया और बताया कि वे मधुमेह के कारण कोमा में थे, लेकिन उनकी नब्ज ठीक चल रही थी।

यह एक ऐसी विचित्र घटना है जिसकी पूरी जानकारी होते हुए भी सभी लोगों ने अपने को अनजान पाया। इसमें संदेह नहीं कि बाबा ने अपना शरीर एक साधारण मानव की भांति शांत करके दिखाया पर इसे उनका अवसान नहीं कह सकते। इस घटना के पूर्व और बाद के कई प्रसंग इस तथ्य की पुष्टी करते हैं कि बाबा अमर हैं और देहावसान की यह घटना एक रहस्यमय लीला के समान है क्योंकि न जाने कितनी बार बाबा जनसमुदाय के बीच प्रकट हुए और फिर इसी प्रकार लीलात्मक रूप से अदृश्य हो गए।

उनकी समाधि वृंदावन आश्रम परिसर में ही बनाई गई है, जहां उनकी कुछ निजी वस्तुएं भी रखी गई हैं।

नीम करोली बाबा समाधि मंदिर, वृंदावन (उत्तर प्रदेश)

## बाबा के दार्शनिक दर्शन

नीम करोली बाबा आजीवन भक्ति योग के पारंगत थे और दूसरों की सेवा को भगवान के प्रति बिना शर्त भक्ति के सर्वोच्च रूप में प्रोत्साहित करते थे। रिचर्ड एलपर्ट (राम दास) द्वारा संकलित पुस्तक *मिरेकल ऑफ लव* में 'बुलेटप्रुफ कंबल' नाम से एक घटना का जिक्र है जिसमें बताया गया है कि बाबा हमेशा कंबल ओढ़ा करते थे। आज भी भक्त जब उनके मंदिर में, उन्हें कंबल भेंट करते हैं।

अंजनी नामक एक भक्त ने बाबा के संबंध में लिखा है– 'उनकी कोई जीवनी नहीं हो सकती। तथ्य कम हैं, कहानियां बहुत हैं। ऐसा लगता है कि उन्हें भारत के कई हिस्सों में अलग–अलग नामों से जाना जाता

था, जो वर्षों से दिखाई देते और गायब होते रहे। हाल के वर्षों में उनके गैर–भारतीय भक्त उन्हें नीम करोली बाबा के नाम से जानते थे, लेकिन ज्यादातर 'महाराज जी' के नाम से जानते हैं। उन्होंने कोई प्रवचन नहीं दिया, संक्षिप्त, सरल कहानियां ही उनकी शिक्षा थी। आमतौर पर, वे प्लेड कंबल ओढ़े लकड़ी की बेंच पर बैठते या लेटते थे और भक्त उनके चारों ओर बैठे रहते थे। आगंतुक आते और जाते; उन्हें भोजन दिया जाता, कुछ शब्द कहे जाते, सिर हिलाया जाता, सिर या पीठ थपथपाई जाती और उन्हें विदा कर दिया जाता। गपशप और हंसी भी होती थी क्योंकि उन्हें मजाक करना पसंद था। आश्रम चलाने के लिए पूरे परिसर में तीखी चीख के साथ आदेश दिए जाते थे। कभी–कभी वे मौन में बैठते थे, किसी दूसरी दुनिया में खो जाते थे जिसे हम समझ नहीं पाते थे, लेकिन आनंद और शांति हम पर बरसती थी। वह कौन था, यह उनके अनुभव से अधिक कुछ नहीं था, उनकी उपस्थिति का अमृत, उसकी अनुपस्थिति की समग्रता, जो अब हमें उनके प्लेड कंबल की तरह ढक रही थी।'

बाबा कहते थे 'आसक्ति और अहंकार ईश्वर प्राप्ति में सबसे बड़ी बाधाएं हैं। जब तक भौतिक शरीर में आसक्ति और अहंकार है, तब तक विद्वान और मूर्ख दोनों एक समान हैं।' वे लोगों को सलाह देते थे कि वे हर चीज से ऊपर ईश्वर की इच्छा के प्रति समर्पण करें ताकि उनमें ईश्वर के प्रति प्रेम और विश्वास विकसित हो सके और इस तरह वे जीवन में अनावश्यक चिंताओं से मुक्त हो सकें।

## चमत्कार

हमें जीवन में एक बार कैंची धाम अवश्य जाना चाहिए। मुझे जब भी समय मिलता है तो बाबा के आश्रम कैंची धाम अवश्य जाता हूँ। मेरे परिवार के ऊपर बाबा की असीम अनुकंपा है। मेरे साथ भी बाबा का आशीर्वाद या कहें कि एक बहुत बड़ा चमत्कार हुआ है। बात जून, 2024 की है, मेरे एक मित्र की पत्नी काफी बीमार थी और सीसीयू में वेंटिलेटर पर थी। मैं उन्हें अस्पताल देखने रात में गया और जब वापस घर पहुंचा तो देखा कि मेरा पर्स गायब था, वो न जाने कहीं गिर गया था या खो गया था। पर्स के विषय में मुझे रात 11 बजे अपने घर आकर पता चला। मैं जिन सज्जन की पत्नी को अस्पताल देखने गया था उनसे संकोचवश फोन किया और पूछा कि कहीं पर्स उनके आस–पास तो नहीं गिरा है। मैं रात भर सोया नहीं, परेशान था क्योंकि उसमें मेरे वे सभी दस्तावेज थे जिनकी आज के समय में हर पल आवश्यकता रहती है। पर्स खोने की बात मैंने घर पर भी किसी को नहीं बताई थी किंतु मेरी परेशानी देख कर घर वाले भी बार–बार पूछ रहे थे कि मैं इतना परेशान क्यों हूँ। सुबह होने पर जैसे–तैसे मैं उठा और दैनिक नित्य कर्म के बाद अपने घर के मंदिर में पूजा करने बैठ गया। वहां पर बाबा से प्रार्थना की कि हे प्रभु मैंने आज तक किसी का कुछ नहीं बिगाड़ा, किसी के साथ कोई बुरा नहीं किया परंतु मेरे साथ ऐसा क्यों हुआ बाबा जी? आप ही मेरा सहारा हो। इतना कहकर मैं मंदिर से बाहर आ गया। थोड़ी देर बाद ही जिन सज्जन की पत्नी बीमार थी उनका फोन आया और बोले कि आप अस्पताल आ जाओं। मैं अस्पताल जाने के लिए पुनः घर से बाहर निकला ही था तो घर के बाहर एक व्यक्ति खड़ा मिला और मुझसे ही मेरा आधार कार्ड निकाल कर पूछने लगा कि ये साहब कहां मिलेंगे? मैने कहा कि मैं ही हूँ, तो उन्होंने मुझे मेरा पर्स दे दिया उसमें जो कार्ड आदि तथा सभी नकद राशि भी पर्स में सुरक्षित थी। उस व्यक्ति ने मुझे पर्स थमाया और जब तक मैं पर्स देख ही रहा था कि वो मेरी आखों के सामने से अचानक ओझल हो गया। मैं अचंभित रह गया। सुबह से मैं परेशान था और यकायक लगा कि बाबा जी ने मेरी परेशानी को दूर करने के लिए अपना कोई दूत भेज दिया था। अचानक से उस व्यक्ति का पर्स लेकर घर तक आ जाना और अचानक ही गायब हो जाना, यह बाबा का चमत्कार नहीं तो और क्या है ?

रिपोर्ट

# राजभाषा संगोष्ठी / सम्मेलन का आयोजन

एनएचपीसी प्रबंधन, भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन में निगम में राजभाषा हिंदी का उत्तरोत्तर प्रयोग बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध है। भारत सरकार के निर्देशों के अनुसार समय–समय पर विभिन्न राजभाषा संगोष्ठियों व सम्मेलनों का आयोजन करना अपेक्षित है जिससे राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार के साथ–साथ विभिन्न भारतीय भाषाओं के बीच सौहार्दपूर्ण वातावरण तैयार किया जा सके एवं राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन के संबंध में जारी वार्षिक कार्यक्रम का पूर्णतः अनुपालन सुनिश्चित किया जा सके। इसी अनुक्रम में, राजभाषा विभाग, निगम मुख्यालय, फरीदाबाद द्वारा 09 से 11 जनवरी, 2025 को विशाखापट्टणम (आंध्र प्रदेश) में तीन दिवसीय राजभाषा संगोष्ठी/सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन में निगम मुख्यालय सहित अधीनस्थ पावर स्टेशनों/परियोजनाओं/कार्यालयों में पदस्थ राजभाषा कैडर व राजभाषा कार्यान्वयन के लिए पदनामित अधिकारी शामिल हुए। सम्मेलन के विभिन्न सत्रों के दौरान आंध्र प्रदेश के प्रख्यात हिंदी विद्वानों और साहित्यकारों ने प्रतिभागियों को संबोधित किया।

इस सम्मेलन के उद्घाटन सत्र में प्रो. एस.एम. इकबाल, पूर्व विभागाध्यक्ष हिंदी विभाग, आंध्र विश्वविद्यालय व अध्यक्ष, विशाखा हिंदी परिषद मुख्य अतिथि थे। समापन सत्र में मुख्य अतिथि के तौर पर श्री डी.वी. रमण मूर्ति, अपर आयुक्त, ग्रेटर विशाखापट्टणम म्युनिसिपल कारपोरेशन को आमंत्रित किया गया था। इस अवसर पर एनएचपीसी लिमिटेड से आदरणीय निदेशक (कार्मिक) श्री उत्तम लाल, तत्कालीन कार्यपालक निदेशक (मानव संसाधन) श्री लूकस गुडिया और तत्कालीन महाप्रबंधक (मानव संसाधन) व प्रभारी (राजभाषा) श्री प्रिय रंजन भी उपस्थित थे।

कार्यक्रम में अतिथि वक्ताओं के रूप में श्री आरूणि त्रिवेदी, सहायक निदेशक (राजभाषा), हिंदी शिक्षण योजना विशाखापट्टणम; डॉ. ललन कुमार, महाप्रबंधक (राजभाषा एवं आतिथ्य), राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड, विशाखापट्टणम; डॉ. एस. कृष्णबाबू, सेवानिवृत्त सहायक महाप्रबंधक (हिंदी), राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड व अध्यक्ष, दक्षिण भारतीय राजभाषा संस्थान, विशाखापट्टणम ने अपने विचारों और अनुभव से प्रतिभागियों को लाभान्वित किया। अतिथि वक्ताओं के अभिभाषण के अतिरिक्त, श्री प्रियरंजन, तत्कालीन महाप्रबंधक (मानव संसाधन) व प्रभारी (राजभाषा) ने परियोजनाओं/पावर स्टेशनों/क्षेत्रीय कार्यालयों एवं निगम मुख्यालयों के विभागों में किए जा रहे राजभाषा कार्यान्वयन के कार्यों की समीक्षा की और राजभाषा कार्यान्वयन पर साथर्क चर्चा की।

निदेशक (कार्मिक) महोदय ने भी दूसरे दिन के तीसरे सत्र में प्रतिभागियों से आंतरिक परिचर्चा की। प्रतिभागियों से उनकी समस्या को साझा करने के लिए प्रेरित किया व समस्याओं के निराकरण का भी आश्वासन दिया। साथ ही, राजभाषा कार्यान्वयन को और बेहतर तरीके से कार्यान्वित करने का आह्वान किया।

संगोष्ठी/सम्मेलन के दौरान व्यवहारिक ज्ञान और क्षेत्र की विशेषताओं से अवगत कराने के लिए प्रतिभागियों को विशाखापट्टणम के प्रमुख स्थलों एवं ऐतिहासिक धरोहरों का अध्ययन दौरा भी कराया गया। इस अध्ययन दौरे में कैलाश गिरी, कुसुरा सब मरीन व एयरक्राफ्ट म्युजियम, रूसुकुंडा बीच एवं राम कृष्णा बीच आदि का दौरा कराया गया और आंध्र प्रदेश की सांस्कृतिक धरोहरों से अवगत कराया गया।

समापन सत्र के दौरान अपने उद्‌बोधन में आदरणीय निदेशक (कार्मिक) महोदय ने निगम में राजभाषा कार्यान्वयन पर प्रसन्नता जाहिर की। उन्होंने प्रतिभागियों से निगम को राजभाषा के क्षेत्र में नई उंचाईयों तक ले जाने का आह्वान किया एवं राजभाषा संगोष्ठी व सम्मेलन से प्राप्त जानकारी को कार्यालय एवं सहकर्मियों में साझा करने के लिए प्रेरित किया। इस कार्यक्रम के दौरान, मुख्य अतिथि श्री डी. वी. रमण मूर्ति, अपर आयुक्त, ग्रेटर विशाखापट्टणम म्युनिसिपल कारपोरेशन ने एनएचपीसी द्वारा विशाखापट्टणम में यह कार्यक्रम आयोजित करने पर आभार प्रकट किया और कहा कि एनएचपीसी लिमिटेड जल विद्युत विकास के क्षेत्र में तो अव्वल है ही किन्तु इस प्रकार के राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार के कार्यक्रम निगम को राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में भी सर्वोच्च पायदान पर ले जाएंगे। उन्होंने हिंदी को देश की एक मजबूत कड़ी के रूप में परिभाषित किया।

इस कार्यक्रम के दौरान, मुख्य अतिथि श्री डी.वी. रमण मूर्ति, अपर आयुक्त, ग्रेटर विशाखापट्टणम म्युनिसिपल कारपोरेशन; विशिष्ट अतिथि प्रो. एस.एम. इकबाल, पूर्व विभागाध्यक्ष हिंदी विभाग, आंध्र विश्वविद्यालय व अध्यक्ष, विशाखा हिंदी परिषद; निदेशक (कार्मिक) के कर कमलों से कार्मिकों के स्वरचित कविता संकलन 'एनएचपीसी काव्य यात्रा' का विमोचन किया गया तथा सभी प्रतिभागियों को प्रतिभागिता स्मृति चिह्न प्रदान किए गए।

सम्मेलन के संपन्न होने के पश्चात् एक सांस्कृतिक संध्या का आयोजन किया गया जिसमें प्रतिभागियों के परिवार के सदस्यों द्वारा सांस्कृतिक प्रस्तुति दी गई।

रिपोर्ट

# हिंदी कवि सम्मेलन का आयोजन

निगम में राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार व कार्यालयीन वातावरण को राजभाषामय बनाने के उद्देश्य से 30 जनवरी, 2025 को एनएचपीसी कार्यालय परिसर, फरीदाबाद के 'जल तरंग सभागार' में हिंदी कवि सम्मेलन का भव्य आयोजन किया गया। अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक श्री राजकुमार चौधरी इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि रहे।

इस कवि सम्मेलन का शुभारंभ श्री आर.पी. गोयल, निदेशक (वित्त); श्री उत्तम लाल, निदेशक (कार्मिक); श्री संजय कुमार सिंह, निदेशक (परियोजनाएं एवं तकनीकी) और श्री संतोष कुमार, मुख्य सतर्कता अधिकारी ने भारतीय परंपरा के अनुसार दीप प्रज्ज्वलित करके किया। इस शुभ अवसर पर एनएचपीसी महिला कल्याण समिति की माननीय सदस्यों ने भी दीप प्रज्ज्वलन में सहयोग किया और कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। कवि सम्मेलन में विख्यात 07 कवियों को आमंत्रित किया गया था। दीप प्रज्ज्वलन के उपरांत, कार्यक्रम को शुरू करते हुए श्री प्रिय रंजन, तत्कालीन महाप्रबंधक (मानव संसाधन) व प्रभारी–राजभाषा ने स्वागत भाषण में सभी कवियों का स्वागत करते हुए निगम में राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार के लिए किए जा रहे कार्यों का संक्षिप्त परिचय दिया।

अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक महोदय ने अपने संबोधन में कहा कि इस प्रकार के कार्यक्रमों से कार्मिकों में नई ऊर्जा और उत्साह का संचार होता है। कार्मिक अपने दैनिक रूटीन कार्यों से हटकर किसी अन्य कार्य में लिप्त होकर मानसिक तनाव से दूर होता है। उन्होंने राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार के लिए किए जा रहे कार्यों के लिए सभी कार्मिकों और विशेष रूप से राजभाषा विभाग की सराहना की। अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक महोदय ने कहा कि निगम विविध आयामों में प्रगति पथ पर अग्रसर है अतः हम नए उत्साह और जोश के साथ कार्य करें। इस प्रतिस्पर्धात्मक युग में, अपनी उपस्थिति अधिक से अधिक दर्ज करें और इसके लिए आवश्यक है कि हम अपनी मूल भाषा यानि हिंदी में सोचें ताकि हमारी भागीदारी अधिक बढ़े। उन्होंने आह्वान किया कि हम अपनी भाषा में बोलें और अपनी भाषा से प्यार करें और यह कवि सम्मेलन भी भाषाई प्रेम व सौहार्द के उद्देश्य के साथ ही आयोजित किया जा रहा है। इस कार्यक्रम में निगम मुख्यालय में पदस्थ सभी कार्मिकों सहित वेब कास्टिंग के माध्यम से जुड़े निगम के विभिन्न कार्यालयों में पदस्थ कार्मिक भी शामिल रहे।

कवि सम्मेलन की शुरूआत कवयित्री पद्मिनी शर्मा द्वारा सरस्वती वंदना की प्रस्तुति से हुई। सरस्वती वंदना के उपरांत, हास्य–व्यंग्य के सुविख्यात कवि श्री केशर देव मारवाड़ी; श्रृंगार रस की प्रसिद्ध कवयित्री व गीतकार सुश्री पद्मिनी शर्मा; हास्य व्यंग्य, पेरोडीकार व राजनैतिक व्यंग्यकार श्री सुदीप भोला; श्रृंगार रस की प्रसिद्ध कवयित्री व गीतकार डॉ. भुवन मोहिनी; हास्य–व्यंग्य, ओज रस के मूर्धन्य कवि श्री राजेश अग्रवाल; हास्य–व्यंग्य के ख्याति प्राप्त कवि श्री अरूण जैमिनी तथा वीर रस व ओज के नामचीन कवि डॉ. हरिओम पंवार ने अपनी काव्यात्मक प्रस्तुति से सभागार में उपस्थित श्रोताओं का भरपूर मनोरंजन किया।

कार्यक्रम की शुरुआत एनएचपीसी गीत से हुई। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान से किया गया। इस अवसर पर उपस्थित आमंत्रित अतिथियों तथा सभी कार्मिकों ने कवि सम्मेलन का भरपूर आनंद लिया एवं कवि सम्मेलन के सफल आयोजन की सराहना की।

# राजभाषा कार्यान्वयन की गतिविधियां/उपलब्धियां (वर्ष 2024-25)

## राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों का आयोजन

निगम में राजभाषा कार्यान्वयन की समीक्षा के लिए वर्ष के दौरान राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठकों का नियमित रूप से आयोजन किया गया।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की वर्ष 2024-25 की पहली तिमाही बैठक का आयोजन तत्कालीन अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक श्री राजेन्द्र प्रसाद गोयल की अध्यक्षता में 21 मई 2024 को, दूसरी बैठक का आयोजन अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक श्री राज कुमार चौधरी की अध्यक्षता में 30 अगस्त 2024 को, तीसरी बैठक 27 नवंबर 2024 को और चौथी बैठक 05 मार्च 2025 को आयोजित की गई। हाइब्रिड मोड के रूप में आयोजित इन बैठकों में सभी निदेशकगण, निगम मुख्यालय के सभी विभागाध्यक्ष प्रत्यक्ष रूप से और निगम की परियोजनाओं/ पावर स्टेशनों/ कार्यालयों के प्रभारी वीडियो कान्फ्रेंसिंग के माध्यम से शामिल हुए। इन बैठकों के दौरान निगम के समस्त विभागों एवं परियोजनाओं/ पावर स्टेशनों/ कार्यालयों की राजभाषा प्रगति की गहन समीक्षा की गई।

## राजभाषा संगोष्ठी/सम्मेलन का आयोजन

निगम में कार्यरत राजभाषा कैडर के कार्मिकों और मुख्यालय के विभिन्न विभागों के हिंदी समन्वयकों तथा अधीनस्थ सभी परियोजनाओं/ पावर स्टेशनों/ कार्यालयों में राजभाषा हिंदी का कार्य देख रहे कार्मिकों के लिए 09 से 11 जनवरी, 2025 को विशाखापट्टणम (आंध्र प्रदेश) में तीन दिवसीय राजभाषा संगोष्ठी/ सम्मेलन का आयोजन किया गया।

संगोष्ठी/ सम्मेलन में निदेशक (कार्मिक) श्री उत्तम लाल, तत्कालीन कार्यपालक निदेशक (मा.सं.) श्री लूकस गुडिया और तत्कालीन महाप्रबंधक (मा.सं.) व प्रभारी (रा.भा.) श्री प्रिय रंजन भी उपस्थित रहे।

## हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन

वर्ष के दौरान निगम मुख्यालय तथा परियोजनाओं/ पावर स्टेशनों/ कार्यालयों में पदस्थ अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए कुल 08 हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। इन हिंदी कार्यशालाओं में प्रतिभागियों को राजभाषा नीति, नियम आदि के साथ-साथ कार्यान्वयन पर प्रशिक्षण दिया गया और नवीनतम हिंदी साफ्टवेयरों के संबंध में जानकारी प्रदान की गई।

### हिंदी कवि सम्मेलन का आयोजन

राजभाषा हिंदी के व्यापक प्रचार-प्रसार के लिए एनएचपीसी कार्यालय परिसर में 30 जनवरी 2025 को 'हिंदी कवि सम्मेलन' का आयोजन किया गया। इस कवि सम्मेलन में देश के प्रख्यात 07 कवियों को काव्यपाठ के लिए आमंत्रित किया गया था। सम्मेलन में निगम के अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक महोदय, निदेशकगणों सहित निगम मुख्यालय के सभी अधिकारी व कर्मचारी तथा उनके परिवार के सदस्य उपस्थित रहे। इसके साथ ही निगम की सभी परियोजनाओं/ पावर स्टेशनों/ कार्यालयों के कार्मिकों एवं उनके परिवार के सदस्यों ने भी वेबकास्ट के माध्यम से इस कवि सम्मेलन को देखा और विभिन्न काव्य रसों का आनंद लिया।

### हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह

निगम मुख्यालय सहित सभी परियोजनाओं, पावर स्टेशनों, कार्यालयों में 14 से 29 सितंबर, 2024 तक हिंदी पखवाड़े का भाषाई सद्भाव के साथ आयोजन किया गया। हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित की गई विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं के विजेता कार्मिकों को पुरस्कृत करने एवं हिंदी पखवाड़े के समापन के उपलक्ष्य में दिनांक 15 अक्तूबर 2024 को समारोह आयोजित किया गया। इस समारोह का पारंपरिक शुभारंभ अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक महोदय के कर-कमलों से दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुआ। दीप प्रज्ज्वलन में निदेशक (वित्त), निदेशक (कार्मिक), निदेशक (परियोजनाएं) तथा मुख्य सतर्कता अधिकारी महोदय ने उनका साथ दिया। हिंदी प्रतियोगिताओं के सभी विजेता प्रतिभागियों को माननीय अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक महोदय व निदेशकगण के कर-कमलों से पुरस्कार स्वरूप हिंदी पुस्तकें व प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए।

### राजभाषा हीरक जयंती समारोह

हिंदी को भारत की आधिकारिक भाषा के रूप में अपनाने के 75 वर्ष होने के उपलक्ष्य में देश भर में वर्ष 2024 को हीरक जयंती वर्ष के रूप में मनाया गया। हीरक जयंती वर्ष के उपलक्ष्य में निगम मुख्यालय में दिनांक 16 जनवरी 2025 को 'राजभाषा हीरक जयंती समारोह' का आयोजन किया गया। इस समारोह के मुख्य अतिथि के रूप में अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक श्री राजकुमार चौधरी और सभी निदेशकगण उपस्थित रहे।

कार्यक्रम के दौरान गृह मंत्रालय द्वारा राजभाषा हिंदी के विषय पर तैयार एक वृतचित्र 'हिंदी का सफरनामा' भी प्रदर्शित की गई। समारोह में संगीत व नाटक प्रभाग, केंद्रीय संचार ब्यूरो, सूचना व प्रसारण मंत्रालय (भारत सरकार) के कलाकारों की टीम द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया।

## विशेष तकनीकी अनुवाद प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

एनएचपीसी लिमिटेड, फरीदाबाद द्वारा केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के सहयोग से 20 से 24 जनवरी 2025 तक 05 दिवसीय विशेष तकनीकी अनुवाद प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य एनएचपीसी मुख्यालय के विभिन्न विभागों में नामित राजभाषा समन्वयकों को अनुवाद कौशल में दक्ष बनाना एवं तकनीकी अनुवाद से जुड़ी चुनौतियों का समाधान प्रदान करना था।

कार्यक्रम के समापन सत्र में केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो के निदेशक लेफ्टिनेंट कर्नल श्री राम नरेश शर्मा ने 32 प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र वितरित किए। प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण कार्यक्रम की सराहना की और इसे अत्यंत उपयोगी बताया।

## राजभाषा शील्ड प्रोत्साहन योजना

दिनांक 27 नवंबर 2024 को आयोजित राजभाषा कार्यान्वयन समिति की वर्ष 2024-25 की तीसरी बैठक के दौरान, निगम में लागू राजभाषा शील्ड प्रोत्साहन योजना के तहत वर्ष 2023-24 के लिए अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक महोदय के कर-कमलों से निगम मुख्यालय के 07 विभागों तथा 12 परियोजनाओं/पावर स्टेशनों को 'उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन' के लिए वार्षिक राजभाषा शील्ड प्रदान की गई।

## संयुक्त राजभाषा सम्मेलन

गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग (भारत सरकार) द्वारा 17 फरवरी 2025 को जयपुर, राजस्थान में मध्य, पश्चिम और उत्तरी क्षेत्रों के लिए संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें श्री राजकुमार चौधरी, अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक और श्री उत्तम लाल, निदेशक (कार्मिक) ने भाग लिया। इस सम्मेलन में श्री राम स्वरूप, कार्यपालक निदेशक, क्षेत्रीय कार्यालय (जम्मू) तथा श्री संतोष कुमार, कार्यपालक निदेशक, क्षेत्रीय कार्यालय (बनीखेत) के साथ-साथ निगम के अन्य वरिष्ठ अधिकारियों ने भी प्रतिभागिता की।

सम्मेलन के उद्घाटन सत्र में श्री राजकुमार चौधरी, अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक ने कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री भजन लाल, माननीय मुख्यमंत्री, राजस्थान; श्री नित्यानंद राय, माननीय गृह राज्य मंत्री, भारत सरकार; सुश्री मंजू शर्मा, माननीय सांसद, जयपुर; सुश्री अंशुली आर्या, सचिव, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय और गृह मंत्रालय के अन्य वरिष्ठ अधिकारियों के साथ मंच साझा किया।

## संसदीय राजभाषा समिति द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी निरीक्षण

माननीय संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति ने 24 फरवरी 2025 को निगम के तीन कार्यालयों यथा चमेरा-II पावर स्टेशन, चमेरा-III पावर स्टेशन एवं पार्बती-III पावर स्टेशन का थ्योंग, शिमला (हिमाचल प्रदेश) में राजभाषा संबंधी निरीक्षण किया। समिति ने राजभाषा के क्षेत्र में एनएचपीसी द्वारा किए जा रहे कार्यों की गहन समीक्षा की तथा भारत सरकार द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने के निर्देश दिए।

## क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार

17 फरवरी 2025 को जयपुर, राजस्थान में आयोजित संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन के दौरान, राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्यों के लिए निगम के सलाल पावर स्टेशन को प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया। श्री राजकुमार चौधरी, अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक और श्री उत्तम लाल, निदेशक (कार्मिक) ने श्री भजन लाल, माननीय मुख्यमत्री, राजस्थान और श्री नित्यानंद राय, माननीय गृह राज्य मंत्री (भारत सरकार) के कर कमलों से पुरस्कार शील्ड और प्रमाण-पत्र ग्रहण किया।

एनएचपीसी सलाल पावर स्टेशन की अध्यक्षता में संचालित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, रियासी को भी द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस पुरस्कार को श्री अनीश गौरहा, समूह महाप्रबंधक, पावर स्टेशन प्रमुख ने ग्रहण किया।

पूर्वोत्तर क्षेत्र में स्थित उपक्रमों के बीच राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य निष्पादन के लिए सुबनसिरी लोअर परियोजना को वर्ष 2023-24 के लिए क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार के अंतर्गत द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह प्रतिष्ठित पुरस्कार 05 मार्च, 2025 को गुवाहाटी (असम) में आयोजित पूर्व एवं पूर्वोत्तर क्षेत्र के संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन में प्रदान किया गया।

## हिंदी संगोष्ठी का आयोजन

एनएचपीसी द्वारा नराकास (का.), फरीदाबाद के विभिन्न सदस्य कार्यालयों के कार्मिकों के लिए 16 जनवरी 2025 को 'हिंदी भाषा के प्रसार में हिंदी सिनेमा एवं मीडिया का योगदान' विषय पर हिंदी संगोष्ठी का आयोजन किया गया। बेस्ट क्रिटिक के राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार विजेता एवं जाने माने फिल्म समीक्षक श्री दीपक दुआ ने इस संगोष्ठी में हिंदी सिनेमा एवं मीडिया का हिंदी के प्रसार में योगदान पर अपने विचार रखे एवं कई रोचक जानकारी साझा की।

## नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का.), फरीदाबाद की गतिविधियां

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा दिनांक 31.12.2009 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास) फरीदाबाद की अध्यक्षता हमारे निगम एनएचपीसी लिमिटेड को सौंपी गई थी। वर्ष 2024-25 के लिए नराकास (का.), फरीदाबाद की दो छमाही बैठकें दिनांक 28.05.2024 तथा दिनांक 17.12.2024 को आयोजित की गई। इन बैठकों में नराकास (का.), फरीदाबाद के सदस्य कार्यालयों की राजभाषा प्रगति की समीक्षा की गई। इन बैठकों में नराकास (का.) फरीदाबाद के सदस्य कार्यालयों के प्रमुख और राजभाषा कार्यान्वयन से जुड़े अधिकारी उपस्थित हुए। मई 2024 को आयोजित पहली बैठक में नराकास (का.) फरीदाबाद के तत्वावधान में प्रकाशित की जाने वाली पत्रिका 'नगर सौरभ' के अंक 14, वर्ष 2024 का विमोचन किया गया।

## हिंदी कार्यशाला

नराकास (का.), फरीदाबाद के सदस्य कार्यालयों के कार्मिकों के लिए 23.08.2024 को एवं 04.12.2024 (ऑनलाइन कार्यशाला) को हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया।

## हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन

नराकास (का.), फरीदाबाद के सदस्य कार्यालयों के कार्मिकों के लिए 11 से 14 नवंबर 2024 तक विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओं में विभिन्न सदस्य कार्यालयों के प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रतियोगिता के विजेता प्रतिभागियों को दिनांक 16 जनवरी 2025 को आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह में पुरस्कृत किया गया।

## राजभाषा कार्यान्वयन गतिविधियां

हिंदी कवि सम्मेलन में सभागार में उपस्थित सीएमडी महोदय व निदेशकगण

हिंदी कवि सम्मेलन के अवसर पर दीप प्रज्ज्वलित करते निदेशक (कार्मिक) महोदय

संसदीय राजभाषा समिति की निरीक्षण बैठक में चर्चा करते हुए निदेशक (कार्मिक) महोदय

राजभाषा सम्मेलन के अवसर पर 'एनएचपीसी काव्य यात्रा' का विमोचन

विशाखापट्टणम में आयोजित राजभाषा सम्मेलन में निदेशक (कार्मिक) महोदय के साथ प्रतिभागीगण

# राजभाषा कार्यान्वयन गतिविधियां

संयुक्त राजभाषा सम्मेलन, जयपुर में मंच पर उपस्थित सीएमडी और निदेशक (कार्मिक) महोदय तथा वरिष्ठ अधिकारीगण

हिंदी कवि सम्मेलन के अवसर पर दीप प्रज्ज्वलित करते निदेशक (परियोजनाएं) महोदय

राजभाषा शील्ड प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत शील्ड व प्रमाण पत्र प्राप्त करते कार्यपालक निदेशक, सुबनसिरी लोअर जलविद्युत परियोजना

हिंदी अनुवाद प्रशिक्षण कार्यक्रम

राजभाषा शील्ड प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत शील्ड व प्रमाण-पत्र वितरण

हिंदी कार्यशाला में प्रतिभागीगण

ऊर्जा समृद्धि

# ग्रीन हाइड्रोजन - एक स्वच्छ ऊर्जा स्रोत

**संजीव कुमार, उप प्रबंधक (यांत्रिकी)**
सीईपीएम विभाग, निगम मुख्यालय (फरीदाबाद)

ग्रीन हाइड्रोजन या हरित हाइड्रोजन, एक स्वच्छ ऊर्जा स्रोत है जो पवन, सौर और जलविद्युत जैसे नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों का उपयोग करके पानी के इलेक्ट्रोलिसिस के माध्यम से उत्पादित होता है। इसके अंदर कार्बनमुक्त अर्थव्यवस्था लाने में एक प्रमुख घटक बनने की क्षमता है और यह जलवायु परिवर्तन को कम करने में मदद कर सकती है। उत्पादित हाइड्रोजन को परिवहन, उद्योग और कृषि के लिए ईंधन के रूप में संग्रहित और उपयोग भी किया जा सकता है।

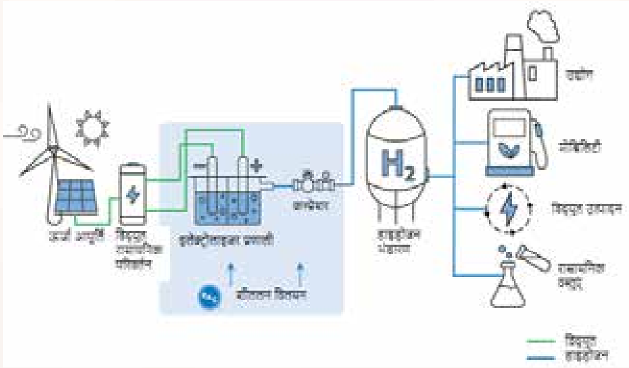


अत्यधिक महत्त्वाकांक्षी राष्ट्रीय हरित हाइड्रोजन मिशन के तहत, भारत द्वारा 'ग्रीन हाइड्रोजन के उत्पादन, उपयोग और निर्यात के लिए वैश्विक केंद्र' बनने और 'प्रौद्योगिकी एवं बाजार नेतृत्व ग्रहण करने' का लक्ष्य रखा है। मिशन का लक्ष्य घरेलू उपयोग के लिए 5 मिलियन टन ग्रीन हाइड्रोजन उत्पन्न करना है। राष्ट्रीय हरित हाइड्रोजन मिशन 4 जनवरी, 2023 को वित्तीय वर्ष 2029–30 तक 19,744 करोड़ रुपए के परिव्यय के साथ शुरू किया गया था।

## ग्रीन हाइड्रोजन विकसित करने के कारण

### ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करना

हरित हाइड्रोजन विकसित करने का प्राथमिक कारण ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करना और जलवायु परिवर्तन को कम करना है। परिवहन और विद्युत उत्पादन के लिए जीवाश्म ईंधन का उपयोग वैश्विक उत्सर्जन में एक प्रमुख योगदानकर्ता है।

नवीकरणीय स्रोतों से उत्पादित ग्रीन हाइड्रोजन, शून्य ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन करता है, जिससे यह एक स्थायी और पर्यावरण के अनुकूल ऊर्जा स्रोत बन जाता है।

### ऊर्जा सुरक्षा और स्वतंत्रता

जीवाश्म ईंधन सीमित संसाधन हैं और वैश्विक आपूर्ति तथा मांग के कारण उनकी कीमतों में उतार–चढ़ाव होता है। हरित हाइड्रोजन जैसे नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों को विकसित करके देश की जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता खत्म हो सकती है।

### नए उद्योग और रोजगार पैदा करना

ग्रीन हाइड्रोजन का विकास विशेष रूप से नवीकरणीय ऊर्जा क्षेत्र में नए उद्योग और रोजगार पैदा कर सकता है। ग्रीन हाइड्रोजन के उत्पादन, भंडारण और वितरण के लिए विशेष विशेषज्ञता और बुनियादी ढांचे की आवश्यकता होती है, जो रोजगार के अवसर पैदा कर सकता है।

अंतर्राष्ट्रीय नवीकरणीय ऊर्जा एजेंसी (आईआरईएनए)

के अनुसार, नवीकरणीय ऊर्जा क्षेत्र ने 2018 में दुनिया भर में 11 मिलियन लोगों को रोजगार दिया और 2050 तक 42 मिलियन से अधिक नौकरियां पैदा करने की उम्मीद है।

### डीकार्बोनाइजिंग

जीवाश्म ईंधन को हरित हाइड्रोजन से प्रतिस्थापित करने की क्षमता महत्त्वपूर्ण है, विशेष रूप से उन क्षेत्रों में जिन्हें डीकार्बोनाइज करना मुश्किल है, जैसे भारी उद्योग और विमानन। ये क्षेत्र वैश्विक उत्सर्जन में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं और हरित हाइड्रोजन के उपयोग से उनके कार्बन फुटप्रिंट को कम करने में मदद मिल सकती है।

### तकनीकी प्रगति

ग्रीन हाइड्रोजन का विकास विभिन्न क्षेत्रों में तकनीकी प्रगति और नई सोच को बढ़ावा दे सकता है। ग्रीन हाइड्रोजन के उत्पादन, भंडारण और वितरण के लिए नई तकनीकों और बुनियादी ढांचे की आवश्यकता होती है, जो नई सामग्री, प्रक्रियाओं और प्रणालियों के विकास को बढ़ावा दे सकती हैं।

## ग्रीन हाइड्रोजन के प्रयोग

### कृषि क्षेत्र

कृषि में जीवाश्म ईंधन के प्रतिस्थापन के रूप में ग्रीन हाइड्रोजन

➢ ग्रीन हाइड्रोजन में अक्षय ऊर्जा स्रोतों का उपयोग करके अमोनिया के उत्पादन के माध्यम से कृषि में पारंपरिक उर्वरकों को बदलने की क्षमता है।

➢ उर्वरकों के उत्पादन में अमोनिया एक प्रमुख घटक है और वर्तमान उत्पादन प्रक्रिया प्राकृतिक गैस पर निर्भर करती है, जो एक जीवाश्म ईंधन है और ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में योगदान देता है।

ग्रीन हाइड्रोजन की मदद से उत्पादित ग्रीन अमोनिया कार्बनमुक्त है, ग्रीन अमोनिया के पारंपरिक उर्वरकों से ज्यादा लाभ हैं, जिनमें बेहतर दक्षता और मिट्टी की कम अम्लता शामिल है।

➢ **ग्रीन हाइड्रोजन संचालित फार्म मशीनरी**– ट्रैक्टर, हार्वेस्टर और सिंचाई प्रणाली जैसी कृषि मशीनरी को संचालित करने के लिए बहुत अधिक ऊर्जा की आवश्यकता होती है। ग्रीन हाइड्रोजन से चलने वाली कृषि मशीनरी ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को काफी कम कर सकती है।

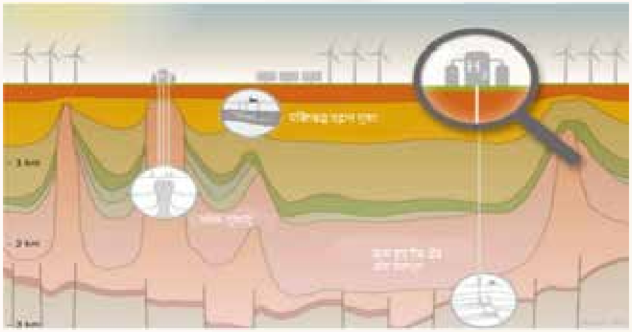

### परिवहन क्षेत्र

**हाइड्रोजन ईंधन सेल**–हाइड्रोजन ईंधन सेल एक उपकरण है जो हाइड्रोजन और ऑक्सीजन की रासायनिक ऊर्जा को बिजली, पानी और गर्मी में परिवर्तित करता है। हाइड्रोजन ईंधन सेल वाहन शून्य उत्सर्जन का उत्पादन करते हैं, जिससे वे गैसोलीन और डीजल से चलने वाले वाहनों के लिए एक आकर्षक विकल्प बन जाते हैं। उनके पास इलेक्ट्रिक वाहनों की तुलना में लंबी दूरी तय करने की क्षमता होती है और मिनटों में ईंधन भरा जा सकता है, जिससे उन्हें लंबी दूरी की यात्रा के लिए अधिक सुविधाजनक बना दिया जाता है।

### औद्योगिक क्षेत्र

**लागत में बचत**–ग्रीन हाइड्रोजन का उत्पादन अतिरिक्त नवीकरणीय ऊर्जा का उपयोग करके किया जा सकता है जो ऑफ–पीक घंटों के दौरान उत्पादित होता है। इस अतिरिक्त ऊर्जा का उपयोग ग्रीन हाइड्रोजन का उत्पादन करने के लिए किया जा सकता है। यह ऊर्जा

की लागत को कम करने और सतत विकास को बढ़ावा देने में मदद कर सकता है।

**विश्वसनीय**– ग्रीन हाइड्रोजन का उत्पादन और संग्रहण साइट पर किया जा सकता है, जिससे यह औद्योगिक प्रक्रियाओं के लिए ऊर्जा का एक विश्वसनीय और सुसंगत स्रोत बन जाता है। यह विद्युत ग्रिड पर निर्भरता को कम करने और ऊर्जा स्वतंत्रता को बढ़ावा देने में मदद कर सकता है।

**ऊर्जा दक्षता में वृद्धि**– ग्रीन हाइड्रोजन का उपयोग ईंधन सेल को बिजली देने के लिए किया जा सकता है, जो पारंपरिक दहन इंजन की तुलना में अधिक ऊर्जा कुशल हैं। यह ऊर्जा की खपत को कम करने में मदद कर सकता है।

## हरित हाइड्रोजन कार्यान्वयन में कठिनाइयां

### कीमत

पारंपरिक जीवाश्म ईंधन की तुलना में ग्रीन हाइड्रोजन की लागत वर्तमान में अधिक है। ग्रीन हाइड्रोजन के उत्पादन, भंडारण और वितरण के लिए विशेष उपकरण और बुनियादी ढांचे की आवश्यकता होती है, जिससे यह पारंपरिक ईंधन की तुलना में अधिक महंगा हो जाता है।

हालांकि, प्रौद्योगिकी में प्रगति और उत्पादन में वृद्धि और समय के साथ ग्रीन हाइड्रोजन की लागत कम होने की उम्मीद है।

### अवसरंचना

ग्रीन हाइड्रोजन को व्यापक रूप से अपनाने के लिए इसके उत्पादन, भंडारण और वितरण के लिए एक मजबूत बुनियादी ढांचे को विकसित करने की आवश्यकता है।

### सुरक्षा

ग्रीन हाइड्रोजन एक अत्यधिक ज्वलनशील गैस है जिसे विशेष हैंडलिंग और भंडारण की आवश्यकता होती है। ग्रीन हाइड्रोजन की सुरक्षित हैंडलिंग और भंडारण सुनिश्चित करने के लिए उचित सुरक्षा प्रोटोकॉल और नियमों का विकास महत्वपूर्ण है।

### सार्वजनिक स्वीकृति

ग्रीन हाइड्रोजन की सार्वजनिक स्वीकृति इसे अपनाने के लिए महत्वपूर्ण है। जनता को ग्रीन हाइड्रोजन के लाभ और जलवायु परिवर्तन को कम करने में इसकी भूमिका के बारे में शिक्षित किया जाना चाहिए।

## ग्रीन हाइड्रोजन को बढ़ावा देने के लिये भारत की पहल

भारत ने अपनी अर्थव्यवस्था को डीकार्बोनाइज करने और अपने जलवायु लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए ग्रीन हाइड्रोजन की क्षमता को पहचाना है। देश ने ग्रीन हाइड्रोजन के उत्पादन, उपयोग और निर्यात को बढ़ावा देने के लिए कई पहल और नीतियां शुरू की हैं।

## कुछ प्रमुख पहलें

### राष्ट्रीय ग्रीन हाइड्रोजन मिशन

- मिशन की घोषणा केंद्रीय बजट 2021–22 में की गई थी और इसका उद्देश्य भारत को ग्रीन हाइड्रोजन के लिए एक वैश्विक केंद्र बनाना है।
- इसके लिए मांग पैदा करना, पायलट प्रोजेक्ट, अनुसंधान व विकास, कौशल विकास, मानकों और विनियमों और नीतिगत ढांचे की सुविधा भी प्रदान करेगा।

### ग्रीन हाइड्रोजन खपत दायित्व

नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय ने विद्युत वितरण कंपनियों के लिए नवीकरणीय खरीद दायित्वों की तरह उर्वरक और पेट्रोलियम शोधन उद्योग के लिए ग्रीन हाइड्रोजन खपत दायित्वों को पेश करने का प्रस्ताव दिया है।

दायित्वों के लिए इन उद्योगों को अपनी कुल हाइड्रोजन खपत में ग्रीन हाइड्रोजन के एक निश्चित प्रतिशत का उपभोग करने की आवश्यकता होगी।

### ग्रीन हाइड्रोजन हब

एमएनआरई ने उन क्षेत्रों की पहचान की है जो ग्रीन हाइड्रोजन के बड़े पैमाने पर उत्पादन और/या उपयोग में सहायता कर सकते हैं और उन्हें ग्रीन हाइड्रोजन हब के रूप में विकसित कर सकते हैं ।

## आगे की राह –

### उत्पादन और उपयोग की उच्च लागत

ग्रीन हाइड्रोजन वर्तमान में उत्पादित पारंपरिक हाइड्रोजन की तुलना में अधिक महंगा है। इसलिए, इस मुद्दे को हल करने के लिए, कुशल तकनीकों को विकसित करने की आवश्यकता है जो ग्रीन हाइड्रोजन की उत्पादन लागत को कम कर सकें।

एक अधिक कुशल इलेक्ट्रोलिसिस सिस्टम का उपयोग करना होगा जिसे हाइड्रोजन की समान मात्रा का उत्पादन करने के लिए कम ऊर्जा की आवश्यकता हो। यह इलेक्ट्रोड के लिए उन्नत सामग्री या अधिक कुशल उत्प्रेरक का उपयोग करके प्राप्त किया जा सकता है।

एक अन्य दृष्टिकोण पवन या सौर ऊर्जा जैसी अन्य नवीकरणीय ऊर्जा प्रौद्योगिकियों के साथ हरित हाइड्रोजन उत्पादन को एकीकृत करना होगा। यह इलेक्ट्रोलिसिस प्रक्रिया में उपयोग की जाने वाली बिजली की लागत को कम कर सकता है, जिससे ग्रीन हाइड्रोजन पारंपरिक हाइड्रोजन के साथ अधिक प्रतिस्पर्धी बन जाता है।

### नियामक प्रोत्साहन लागू करना

सरकार इस तकनीक के उत्पादन और उपयोग को प्रोत्साहित करने के लिए टैक्स क्रेडिट और सब्सिडी जैसे नियामक प्रोत्साहनों को लागू करके ग्रीन हाइड्रोजन को अपनाने को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

### पर्याप्त बुनियादी ढांचे और आपूर्ति श्रृंखला का अभाव

ग्रीन हाइड्रोजन को इसके उत्पादन, भंडारण, परिवहन और वितरण के लिए समर्पित बुनियादी ढांचे और आपूर्ति श्रृंखला की आवश्यकता है।

### विभिन्न हितधारकों और क्षेत्रों के बीच समन्वय

ग्रीन हाइड्रोजन में मूल्य श्रृंखला में कई हितधारक और क्षेत्र शामिल हैं, जैसे नवीकरणीय ऊर्जा उत्पादक, इलेक्ट्रोलाइजर निर्माता, हाइड्रोजन उत्पादक, ट्रांसपोर्टर, वितरक और अंतिम उपयोगकर्ता। ग्रीन हाइड्रोजन के लिए नीतियों, मानकों, विनियमों, प्रोत्साहनों और बाजारों के संरेखण को सुनिश्चित करने के लिए इन हितधारकों और क्षेत्रों के बीच समन्वय की आवश्यकता है।

### संभावित उपयोगकर्ताओं और उत्पादकों के बीच जागरूकता और क्षमता निर्माण

ग्रीन हाइड्रोजन अभी भी एक विकासशील तकनीक है जिसके लिए संभावित उपयोगकर्ताओं और उत्पादकों के बीच जागरूकता और क्षमता निर्माण की आवश्यकता होती है। विभिन्न अनुप्रयोगों और क्षेत्रों में ग्रीन हाइड्रोजन के लाभ, सुरक्षा और व्यवहार्यता को प्रदर्शित करने की आवश्यकता है। ग्रीन हाइड्रोजन उत्पादन और उपयोग के लिए कौशल और दक्षताओं को विकसित करने की भी आवश्यकता है।

## भारत में ग्रीन हाइड्रोजन पारिस्थितिकी तंत्र के लिए अनुसंधान एवं विकास रोडमैप

राष्ट्रीय ग्रीन हाइड्रोजन मिशन का उद्देश्य भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र (बीएआरसी), भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो), वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर), भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी), भारतीय विज्ञान संस्थान (आईआईएससी), आदि जैसे संस्थानों और भारतीय उद्योग की अंतर्निहित शक्तियों और तकनीकी अनुभव का लाभ उठाना है। राष्ट्रीय ग्रीन हाइड्रोजन मिशन अनुसंधान एवं विकास के लिए निम्नलिखित रणनीतियां प्रस्तावित हैं:

ग्रीन हाइड्रोजन उत्पादन, भंडारण, परिवहन और उपयोग की व्यवहार्यता बढ़ाने के लिए नवाचार का समर्थन और सिस्टम और प्रक्रियाओं की प्रभावशीलता, सुरक्षा और विश्वसनीयता ।

### अल्पावधि (0–5 वर्ष) प्रभाव वाली मिशन मोड परियोजनाएं

जिसमें मौजूदा क्षमताओं और बुनियादी ढांचे का लाभ उठाने के साथ–साथ उद्योग की साझेदारी में अंतिम उत्पाद के विकास को प्राथमिकता दी जाएगी। घरेलू मॉड्यूलर इलेक्ट्रोलाइजर, टाइप III/टाइप IV संपीड़ित हाइड्रोजन सिलेंडर और प्रोटॉन एक्सचेंज मेम्ब्रेन (पीईएम) ईंधन कोशिकाओं के विकास से जुड़ी परियोजनाओं को इसके अंतर्गत शामिल किया जाएगा। व्यावसायिक अनुप्रयोगों के लिए बायोमास आधारित हाइड्रोजन उत्पादन को भी बढ़ाया जाएगा।

### मध्यावधि (0–8 वर्ष) प्रभाव वाली ग्रैंड चैलेंज परियोजनाएं

जिसमें लाइसेंसिंग चुनौतियों और आपूर्ति सीमाओं को कम करने के लिए महत्वपूर्ण प्रौद्योगिकियों पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा । महत्वपूर्ण इलेक्ट्रोलाइजर और ईंधन सेल घटक जैसे मेम्ब्रेन इलेक्ट्रोड असेंबली (एमईए), इलेक्ट्रोकैटलिस्ट, कैटलिस्ट कोटेड मेम्ब्रेन (सीसीएम), गैस डिफ्यूजन लेयर्स (जीडीएल), बाइपोलर प्लेट्स आदि के निर्माण के आसपास बनाए जाएंगे ।

### दीर्घकालिक (0–15 वर्ष) प्रभाव वाली ब्लू स्काई परियोजनाएं

जिसका ध्यान भारतीय उद्योग के लिए वैश्विक आईपी और प्रतिस्पर्धी लाभ स्थापित करने पर होगा। ब्लू स्काई परियोजनाओं का उद्देश्य तीसरी पीढ़ी के इलेक्ट्रोकैटेलिस्ट (बंच्ड नैनोस्फेयर – बीएनएस, बंच्ड नैनोकेज – बीएनसी, आदि), प्रतिवर्ती सॉलिड ऑक्साइड इलेक्ट्रोलाइजर (एसओईसी) और सॉलिड ऑक्साइड ईंधन सेल (एसओएफसी), हाइड्रोजन उत्पादन के लिए थर्मोकेमिकल जल विभाजन, समुद्री जल इलेक्ट्रोलिसिस, थर्मो–कैटेलिटिक पायरोलिसिस, प्लाज्मा पायरोलिसिस, नमक गुफा सर्वेक्षण, प्रतिवर्ती हाइड्रोजन भंडारण के लिए उच्च एन्ट्रॉपी मिश्र धातु आदि जैसे विषयों की एक शृंखला के तहत भारतीय अनुसंधान एवं विकास क्षेत्र की क्षमताओं को विकसित करना होगा।

■■■

सत्य को भी प्रचार चाहिए, अन्यथा वह मिथ्या मान लिया जाता है!

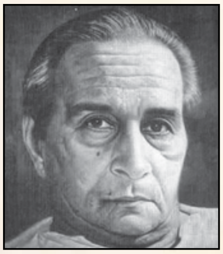

हरिशंकर परसाई

पर्यटन

# उदयपुर – एक बहुमूल्य धरोहर

**विपुल नागर, उप महाप्रबंधक (भूभौतिकी)**
सुबनसिरी लोअर परियोजना, धेमाजी (असम)

उदयपुर, राजस्थान राज्य का एक प्रमुख शहर है, जिसे 'झीलों की नगरी' के नाम से जाना जाता है। यह शहर अपनी ऐतिहासिक धरोहर, भव्य महलों, खूबसूरत झीलों और सांस्कृतिक धरोहरों के लिए प्रसिद्ध है। इसलिए इसे 'पूर्व का वेनिस' भी कहा जाता है। उदयपुर का इतिहास और वास्तुकला इसे न केवल भारत में, बल्कि पूरे विश्व में एक महत्वपूर्ण पर्यटन स्थल बनाता है। यहां हर साल लाखों पर्यटक आते हैं। उदयपुर की संस्कृति में राजपूतों की शाही परंपराओं, संगीत, नृत्य और कला का गहरा प्रभाव है। यहां की लोक कला, खासकर पेटिंग कला (मेवाड़ स्कूल आफ आर्ट) बहुत प्रसिद्ध है। शहर की शाही धरोहरें, खूबसूरत झीलें, ऐतिहासिक महल, और जीवंत संस्कृति पर्यटकों को आकर्षित करती है। महाराणा प्रताप जैसे योद्धाओं के गौरवशाली इतिहास की यह धरती अरावली की छोटी–छोटी पहाडियों के बीच स्थित है। उदयपुर में राजा के महल और किलों की निर्माण शैली को राजपूत स्थापत्य कला का अद्भुत उदाहरण माना जाता है। यहां आने पर पर्यटक न केवल राजस्थान के इतिहास और संस्कृति को समझ पाते हैं, बल्कि यहां के शांत वातावरण में सुकून भी महसूस करते हैं।

## उदयपुर का इतिहास

उदयपुर को पहले मेवाड़ के नाम से जाना जाता था। यहां का इतिहास निरंतर संघर्ष का इतिहास रहा है। यह संघर्ष स्वतंत्रता, स्वाभिमान तथा धर्म के लिए हुआ। संघर्ष कभी राजपूतों के बीच तो कभी मुगल तथा अन्य शासकों के साथ हुआ। मेवाड़ पर बारह सौ सालों तक महान सूर्यवंशी राजाओं का शासन रहा। माना जाता है कि किसी भी क्षेत्र पर इतने लंबे समय तक शासन करने

वाला भारत का यह एकमात्र वंश है। महाराणा उदयसिंह के पिता महाराणा जोधसिंह की मृत्यु के बाद चित्तौड़गढ़ में शाही परिवार के भीतर आंतरिक विवादों का दौर चला। महाराणा उदयसिंह को चित्तौड़गढ़ सुरक्षित नहीं लगा और उन्होंने चित्तौड़गढ़ को छोड़कर यह स्थान चुना तथा सन् 1559 में उदयपुर शहर बसाकर उसे मेवाड़ की राजधानी बनाया। यह स्थान अधिक सुरक्षित था क्योंकि यहां चारों ओर पहाड़ों और जल स्रोतों का अच्छा समावेश था, जो सैन्य दृष्टिकोण से एक आदर्श स्थान था। उदयपुर में बसने के बाद, महाराणा उदयसिंह ने इसे एक प्रमुख शाही और सैन्य केंद्र के रूप में विकसित किया। यह स्थान मेवाड़ साम्राज्य का प्रमुख केंद्र बना और उदयपुर में शाही महल, किलों और मंदिरों का निर्माण हुआ। मेवाड़ राज्य ने कई युद्धों में भाग लिया और भारतीय इतिहास में एक महत्वपूर्ण स्थान पाया।

उस समय नगर की सुरक्षा के लिए इसके चारों ओर मजबूत चारदीवारी बनवाई गई थी जिसके 11 भव्य द्वार थे। सूरजपोल शहर का मुख्य द्वार था। सन् 1572 ई. में महाराणा उदयसिंह की मृत्यु के बाद उनके पुत्र प्रताप का राज्याभिषेक हुआ था। उन दिनों एक मात्र यही ऐसे शासक थे जिन्होंने मुगलों की अधीनता नहीं स्वीकारी थी। महाराणा प्रताप एवं मुगल सम्राट अकबर के बीच हल्दीघाटी का घमासान युद्ध मातृभूमि की रक्षा के लिए प्रसिद्ध है। यह युद्ध किसी धर्म, जाति अथवा साम्राज्य विस्तार की भावना से नहीं, बल्कि स्वाभिमान एवं मातृभूमि के गौरव की रक्षा के लिए हुआ था। यह युद्ध सन् 1576 में हुआ था और इसमें महाराणा प्रताप ने महान वीरता का परिचय दिया था, हालांकि यह युद्ध उनके लिए सैन्य दृष्टि से हार का कारण बना, लेकिन उनकी संघर्ष की भावना ने उन्हें भारतीय इतिहास में आदर्श हिंदू योद्धा के रूप में स्थापित कर दिया। उदयपुर के पश्चिम में पिछोला झील है, जिस पर दो छोटे द्वीप और संगमरमर से बने महल हैं, इनमें से एक में मुगल शहंशाह शाहजहां (शासनकाल 1628–58 ई.) ने तख्त पर बैठने से पहले अपने पिता जहांगीर से विद्रोह करके शरण ली थी।

18वीं शताब्दी में इस राज्य को आंतरिक फूट व मराठों के आक्रमणों का सामना करना पड़ा और सन् 1818 ई. में यह ब्रिटिश प्रभुता के अधीन हो गया था। ब्रिटिश काल में भी उदयपुर और मेवाड़ राज्य का इतिहास महत्वपूर्ण रहा। ब्रिटिश शासन के दौरान, मेवाड़ राज्य को भी एक संरक्षित रियासत के रूप में रखा गया था तथा उस समय तक उदयपुर की शाही परंपरा और संस्कृति बनी रही। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान उदयपुर और आसपास के क्षेत्रों द्वारा भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया गया था, हालांकि यहां के शासक आमतौर पर ब्रिटिश साम्राज्य के साथ सहयोग करते थे, फिर भी यहां की जनता ने स्वतंत्रता के लिए संघर्ष किया।

## प्रसिद्ध धरोहर

उदयपुर को हाल ही में विश्व का सबसे खूबसूरत शहर घोषित किया गया है। देश विदेश से लोग उदयपुर की सुंदरता एवं संस्कृति को देखने जाते हैं। उदयपुर में इतने महल, उद्यान व पर्यटन स्थल हैं जिनमें सभी का विवरण एक लेख के माध्यम से पूर्ण करना संभव नही है। अतः कुछ प्रमुख धरोहरों का विवरण लेख के माध्यम से दिया जा रहा है–

**सिटी पैलेस**– उदयपुर के इतिहास व मेवाड़ के सूर्यवंशी महाराणाओं की गौरवगाथा को समझना हो तो यहां का सिटी पैलेस सबसे उपयुक्त जगह है। सिटी पैलेस परिसर पिछोला झील पर स्थित है। महाराणा उदय सिंह द्वारा इस महल का निर्माण आरंभ किया गया था किन्तु आगे आने वाले महाराणाओं ने इस संकुल में कई महल और संरचनाओं को जोड़ा, इस महल में संकल्पना की एकरूपता को बनाए रखा है। एक समय में यह रिवाज था कि महाराणा इस प्रवेश द्वार के नीचे सोने और चांदी से तौले जाते थे और फिर उसे गरीबों

में बांट दिया जाता था। सिटी पैलेस का मुख्य हिस्सा अब एक संग्रहालय के रूप में संरक्षित कर दिया गया है। यह संग्रहालय कलात्मक वस्तुओं का एक बड़ा और विविध संग्रह प्रदर्शित करता है।

**पिछोला झील**– उदयपुर शहर के सौंदर्य को और ज्यादा बढ़ाने वाली यहां की झीलों में सबसे प्रमुख पिछौला झील है। सिटी पैलेस के ठीक पीछे पसरी इस झील का सौंदर्य सिटी पैलेस से नजर आता है। बहुत से सैलानी दूसरी ओर जाकर राजमहल की दीवारों से टकराती झील की लहरों को देखने से खुद को रोक नहीं पाते हैं। करीब चार किलोमीटर लंबी इस झील का नाम पिछौला गांव के कारण पड़ा।

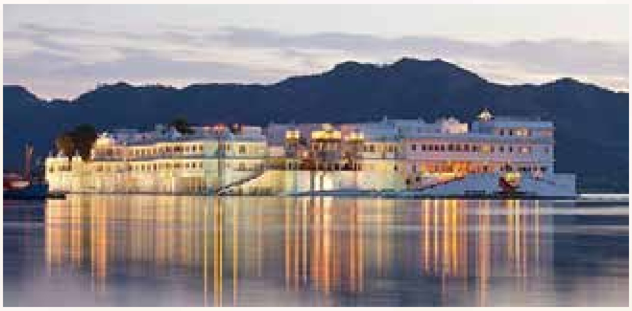

**हल्दीघाटी**– हल्दीघाटी इतिहास में महाराणा प्रताप और अकबर के बीच हुए युद्ध के लिए प्रसिद्ध है। यह अरावली पर्वत श्रृंखला में एक दर्रा है। यह उदयपुर से 40 कि.मी. की दूरी पर है। इसका नाम 'हल्दीघाटी' इसलिए पड़ा क्योंकि यहां की मिट्टी हल्दी जैसी पीली है। हल्दीघाटी का युद्ध 18 जून 1576 ई. को खमनोर एवं बलीचा गांव के मध्य तंग पहाड़ी दर्रे से आरंभ होकर खमनोर गांव के किनारे बनास नदी के सहारे मोलेला में कुछ घंटों तक चला था। युद्ध में निर्णायक विजय किसी को भी हासिल नहीं हो सकी थी। युद्ध में महाराणा प्रताप के सहयोगी झाला मान, हाकिम खान, ग्वालियर नरेश राम शाह तंवर सहित देश भक्त कई सैनिक देशहित में बलिदान हो गए। उनका प्रसिद्ध घोड़ा चेतक भी मारा गया था। यहां मुख्य स्थलों में युद्ध स्थल रक्त तलाई, शाहीबाग, हल्दीघाटी दर्रा, प्रताप गुफा, चेतक समाधी एवं महाराणा प्रताप स्मारक देखने योग्य हैं।

**सहेलियों की बाड़ी**– सहेलियों की बाड़ी महाराणा संग्राम सिंह द्वारा शाही महिलाओं के लिए 18वीं सदी में बनाया गया था। कहा जाता है कि राजा ने इस सुरम्य उद्यान को स्वयं तैयार किया था और अपनी रानी को भेंट किया था जो शादी के बाद 48 नौकरानियों के साथ आई थी। फतेह सागर झील के किनारे पर स्थित, यह जगह अपनी खूबसूरत झरने, हरे–भरे बागीचे और संगमरमर के काम के लिए विख्यात है।

**आहर**– आहर उदयपुर शहर में स्थित एक ऐतिहासिक स्थान है। यहां मेवाड़ के 19 शासकों के स्मारक है। यहां सबसे प्रमुख स्मारक महाराणा अमर सिंह का है। अमर सिंह ने सिंहासन त्यागने के बाद अपना अंतिम समय यहीं व्यतीत किया था। इस स्थान का संबंध हड़प्पा सभ्यता से भी जोड़ा जाता है। यहां एक पुरातात्विक संग्रहालय भी है।

**सरकारी संग्रहालय**– इस संग्रहालय में मेवाड़ से संबंधित शिलालेख रखे हुए हैं। ये शिलालेख दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व से 19वीं शताब्दी तक के हैं। यहां बहुत सी प्रतिमाएं भी रखी हुई हैं। कृष्ण और रुक्मणी के मेवाड़ शैली में बने हुए चित्र भी यहां रखे गए हैं। इसमें खुर्रम (बाद में शाहजहां) का साफा भी रखा हुआ है। खुर्रम ने जब जहांगीर के खिलाफ विद्रोह किया था तो वह उदयपुर में ही रहा था।

**कुंभलगढ़ का किला**– उदयपुर में 25 मील उत्तर की ओर नाथद्वार के करीब अरावली की एक ऊंची श्रेणी पर कुंभलगढ़ का प्रसिद्ध किला बना हुआ है। इसकी ऊंचाई समुद्रतल से 3568 फुट है। महाराणा कुंभा (कुंभकर्ण) ने सन् 1458 (विक्रम संवत् 1515) में इस किले का निर्माण कराया था अतः इसे कुंभलमेर (कुभलमरु) या कुंभलगढ़ का किला कहते हैं।

उदयपुर के शासकों ने जल के महत्व को समझते हुए कई बाँधों और जलकुण्डों का निर्माण करवाया था। ये कुण्ड तत्कालीन समय के विकसित इंजीनियरिंग का उत्कृष्ट नमूना हैं। पिछोला झील, दूध तलाई, गोवर्धन सागर, कुमारी तालाब, रंगसागर झील, स्वरुप सागर तथा फतेह सागर झील यहां की सात प्रमुख झीलें हैं। ये झीलें कई शताब्दियों से उदयपुर की जीवनरेखा हैं तथा एक–दूसरें से इस प्रकार जुड़ी हुई हैं कि एक झील में पानी अधिक होने पर उसका पानी अपने आप दूसरे झील में चला जाता है।

## धार्मिक स्थल

उदयपुर के आसपास कई महत्वपूर्ण धार्मिक स्थल भी स्थित हैं जिनमें श्रीनाथजी, एकलिंग जी, जगदीश मंदिर, ऋषभदेव जी, रणकपुर आदि प्रमुख हैं।

**श्रीनाथजी** हिंदू भगवान कृष्ण का एक रूप हैं, जो सात साल के बच्चे (बालक) के रूप में प्रकट होते हैं। श्रीनाथजी का प्रमुख मंदिर उदयपुर शहर से 49 कि. मी. उत्तर–पूर्व में स्थित नाथद्वारा शहर में स्थित है। श्रीनाथजी वैष्णव संप्रदाय के केंद्रीय पीठासीन देव हैं जिन्हें वल्लभाचार्य द्वारा स्थापित वल्लभ संप्रदाय के रूप में जाना जाता है। श्रीनाथजी को मुख्य रूप से भक्ति योग के अनुयायियों और गुजरात और राजस्थान में वैष्णव लोगों द्वारा पूजा जाता है।

**एकलिंगजी** मंदिर उदयपुर के सबसे लोकप्रिय और प्राचीन धार्मिक केंद्रों में से एक है जो मुख्य शहर से

लगभग 24 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। मंदिर हिंदू भगवान शिव को समर्पित है और यह माना जाता है कि आचार्य विश्वस्वरूपा ने इसे 734 ई. में निर्मित किया। लगभग 2500 वर्ग फुट के क्षेत्र में फैले इस मंदिर परिसर में 108 मंदिर हैं।

लगभग 350 वर्ष पुराना **जगदीश मंदिर** उदयपुर का सबसे बड़ा मंदिर है। मंदिर के गर्भगृह में भगवान विष्णु की प्रतिमा सुशोभित है। मंदिर प्रांगण में विष्णुवाहन गरूड़ की प्रतिमा भी स्थापित है।

उदयपुर से 39 मील दक्षिण में खैरवाड़ा की सड़क के निकट कोट से घिरे घूलेव गांव में **ऋषभदेव मंदिर** है जो मेवाड़ में जैनियों का सबसे बड़ा तीर्थ स्थान के रूप में माना जाता है। ऋषभदेव की भव्य और तेजस्वी प्रतिमा को केसरियानाथ के रूप में भी जाना जाता है।

**रणकपुर जैन मंदिर** राजस्थान में स्थित जैन धर्म के पांच प्रमुख तीर्थस्थलों में से एक है। यह स्थान खूबसूरती से तराशे गए प्राचीन जैन मंदिरों के लिए प्रसिद्ध है। रणकपुर मंदिर उदयपुर से 96 किलोमीटर की दूरी पर है। भारत के जैन मंदिरों में संभवतः इसकी इमारत सबसे भव्य तथा विशाल है।

## सारांश

उदयपुर का आकर्षण इसके आश्चर्यजनक स्थलों से कहीं आगे तक फैला है। उदयपुर इतिहास, संस्कृति और प्राकृतिक सुंदरता का अनूठा मिश्रण प्रस्तुत करता है। उदयपुर का इतिहास न केवल राजस्थान की गौरवमयी परंपरा को दर्शाता है बल्कि यह भारतीय इतिहास और संस्कृति का भी एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। यहां की स्थापत्य कला, संस्कृति तथा विरासत आज भी लोगों को आकर्षित करती है और इस शहर को एक ऐतिहासिक और सांस्कृतिक धरोहर के रूप में प्रस्तुत करती है।

भारत की इस बहुमूल्य धरोहर उदयपुर के लिए राजस्थानी लोकगीत *'केसरिया बालम आवोनी, पधारो म्हारे देश'* एकदम सही प्रतीत होता है।

स्थायी स्तंभ

# भवानी प्रसाद मिश्र

## अंक के साहित्यकार

मैं सन्नाटा हूँ, फिर भी बोल रहा हूँ। मैं शांत बहुत हूँ, फिर भी डोल रहा हूँ।।
ये सर सर ये खड़ खड़ सब मेरी है। है यह रहस्य, मैं इसको खोल रहा हूँ।।

भवानी प्रसाद मिश्र हिंदी के प्रसिद्ध कवि तथा गांधीवादी विचारक थे। वे 'दूसरा सप्तक' के प्रथम कवि हैं। गांधी–दर्शन का प्रभाव तथा उसकी झलक उनकी कविताओं में स्पष्ट देखी जा सकती है। उनका प्रथम संग्रह 'गीत–फरोश' अपनी नई शैली, नई उद्भावनाओं और नए पाठ–प्रवाह के कारण अत्यंत लोकप्रिय हुआ। प्यार से लोग उन्हें भवानी भाई कहकर संबोधित किया करते थे।

उन्होंने छोटी आयु से ही लिखना शुरू कर दिया था और समकालीन साहित्य पढ़ने लगे थे। बकौल उनके "निराला, प्रसाद, पंत फैशन में थे। मेरी कमबख्ती (जिसे कहने में भी डर लगता है) ये तीनों ही बड़े कवि मुझे लकीरों में अच्छे लगते थे। किसी एक की भी एक पूरी कविता बहुत नहीं भा गई।" वे जैसे सात–सात बार मौत से लड़े वैसे ही आजादी के पहले गुलामी से लड़े और आजादी के बाद तानाशाही से भी लड़े। आपातकाल के दौरान नियमपूर्वक सुबह–दोपहर उन्होंने नियमित कविताएं लिखी थीं जो बाद में 'त्रिकाल संध्या' नामक पुस्तक में प्रकाशित भी हुईं।

### जीवन परिचय

भवानी प्रसाद मिश्र का जन्म गाँव टिगरिया, जिला होशंगाबाद (मध्य प्रदेश) में हुआ था। क्रमशः सोहागपुर, होशंगाबाद, नरसिंहपुर और जबलपुर में उनकी प्रारंभिक शिक्षा हुई तथा 1934–35 में उन्होंने हिंदी, अंग्रेजी और संस्कृत विषय लेकर स्नातक की डिग्री प्राप्त की। महात्मा गांधी के विचारों के अनुसार शिक्षा देने के विचार से एक स्कूल खोलकर अध्यापन कार्य शुरू किया और उस स्कूल को चलाते हुए 1942 में गिरफ्तार होकर 1945 में छूटे। उसी वर्ष महिलाश्रम वर्धा में शिक्षा देने एक शिक्षक की तरह गए और चार–पांच साल वहीं बिताए। कविताएं लिखना लगभग 1930 से ही नियमित रूप से प्रारंभ हो गया था। उन्होंने 33 वर्ष की आयु से खादी पहनना शुरू कर दिया था। गांधी वांग्मय के हिंदी खंडों का संपादन किया और गांधी विचार–दर्शन से ओतप्रोत 500 कविताओं का 'गांधी पंचशती' शीर्षक से संकलन किया।

उनकी कुछ कविताएं पं० ईश्वरी प्रसाद वर्मा के सम्पादन में निकलने वाले हिन्दू पंच में हाईस्कूल पास होने के पहले ही प्रकाशित हो चुकी थीं। सन 1932–33 में वे माखनलाल चतुर्वेदी के संपर्क में आए। चतुर्वेदी जी आग्रहपूर्वक कर्मवीर में उनकी कविताएं प्रकाशित करते रहे। हंस में भी उनकी काफी कविताएं छपीं, उसके बाद अज्ञेय जी ने 'दूसरा सप्तक' में उन्हें प्रकाशित किया। 'दूसरा सप्तक' के बाद प्रकाशन क्रम ज्यादा नियमित

होता गया। 'दूसरा सप्तक' में संकलन से उनकी प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई, हालांकि इससे पहले वे खूब छप चुके थे और सुपरिचित कवि थे। 1956 में उनके पहले संग्रह 'गीत फरोश' के प्रकाशन से उन्हें और प्रसिद्धि मिली। वह बच्चन की तरह उस वर्ग के कवि रहे जो लोकप्रिय भी थे और महत्त्वपूर्ण भी।

उन्होंने चित्रपट के लिए संवाद लिखे और मद्रास के ए.बी.एम. में संवाद निर्देशन भी किया। मद्रास से वे मुम्बई में आकाशवाणी के प्रोड्यूसर होकर गए। बाद में उन्होंने आकाशवाणी केंद्र दिल्ली में भी काम किया।

जीवन की सान्ध्य बेला में वे दिल्ली से नरसिंहपुर (मध्य प्रदेश) एक विवाह समारोह में गए थे वहीं अचानक बीमार हो गए और अपने सगे संबंधियों व परिवार जनों के बीच अंतिम सांस ली। उनके पुत्र अनुपम मिश्र एक सुपरिचित पर्यावरणविद थे।

उनकी कविताओं के सहज लय का साम्य चरखे की लय से करते हुए उन्हें 'कविता का गांधी' भी कहा गया है।

## प्रमुख कृतियां

**कविता संग्रह**– गीत फरोश, चकित है दुख, गांधी पंचशती, बुनी हुई रस्सी, खुशबू के शिलालेख, त्रिकाल संध्या, व्यक्तिगत, परिवर्तन जिए, अनाम तुम आते हो, इदम् न मम, शरीर कविता, फसलें और फूल, मानसरोवर दिन, सम्प्रति, अंधेरी कविताएं, तूस की आग, कालजयी, नीली रेखा तक और सन्नाटा।

**बाल कविताएं**– तुकों के खेल

**संस्मरण**– जिन्होंने मुझे रचा

**निबंध संग्रह**– कुछ नीति कुछ राजनीति।

## विचारधारा

भवानी प्रसाद मिश्र उन गिने चुने कवियों में थे जो कविता को ही अपना धर्म मानते थे और आम जनों की बात उनकी भाषा में ही रखते थे। उन्होंने ताल ठोककर कवियों को नसीहत दी थी–

*जिस तरह हम बोलते हैं उस तरह तू लिख,*
*और इसके बाद भी हम से बड़ा तू दिख।*

उनकी बहुत सारी कविताओं को पढ़ते हुए महसूस होता है कि कवि आपसे बोल रहा है, बतिया रहा है। जहां अपनी 'गीतफरोश' कविता में कवि ने अपने फिल्मी दुनिया में बिताए समय को याद कर कवि के गीतों का विक्रेता बन जाने की विडंबना को मार्मिकता के साथ कविता में ढाला है, वहीं 'सतपुड़ा के जंगल' जैसी कविता सुधी पाठकों को एक अछूती प्रकृति की सुंदर दुनिया में लेकर चलती है।.उनकी कविताएं गेय हैं और पाठकों को ताउम्र स्मरण रहती हैं।

अज्ञेय ने भवानीप्रसाद मिश्र की कविता के हवाले से नई कविता में इस अनूठे रस को मिश्र रस कहा और गंभीर बातों को भी हलके ढंग से कहने को उल्लेखनीय माना। उनमें बोल–चाल के गद्यात्मक वाक्य–विन्यास को ही कविता की लयकारी भाषा में बदल लेने का अद्वितीय गुण था।

वे गूढ़ बातों को भी बहुत ही आसानी और सरलता के साथ अपनी कविताओं में रखते थे। नई कविताओं में उनका काफी योगदान है। उनका सादगी भरा शिल्प अब भी नए कवियों के लिए चुनौती और प्रेरणास्रोत है। वे जनता की बात को जनभाषा में ही रखते थे। उनकी कविताओं में नए भारत का स्वप्न झलकता है। उनकी कविताएं परिवर्तन और सुधार की अभिव्यक्ति हैं। वे आपातकाल में विरोध में खड़े हो गए और विरोध स्वरूप प्रतिदिन तीन कविताएं लिखते थे।

## सम्मान

भवानी भाई को 1972 में उनकी कृति 'बुनी हुई रस्सी' पर साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला। 1981–82 में उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान का साहित्यकार सम्मान दिया गया तथा 1983 में उन्हें मध्य प्रदेश शासन के शिखर सम्मान से अलंकृत किया गया। भारत सरकार ने उन्हें पद्मश्री से विभूषित किया।

व्यंग्य

# कर्मलोक

**विष्णु गुप्ता, कनिष्ठ अभियंता**
धौलीगंगा पावर स्टेशन, पिथौरागढ़ (उतराखंड)

हमारे बड़े–बूढ़ों ने जो आज तक हमको कई लोक–परलोकों की कहानियां सुनाई हैं, जो मनोरंजक के साथ–साथ शिक्षाप्रद भी होती थी। कई लोकों के साथ कर्मलोक का जिक्र भी बुजुर्गों ने किया है। उन कहानियों से हमने सीखा है और अनुभव भी किया है। ऐसे ही अनुभव से एक बार मुझे पता चला कि इस लोक से उस लोक में पहुंचने के बाद मानव तथा अन्य जीवधारियों के बीच बहस शुरू हो गई। पशु, कीट–पतंगे, जलचर, नभचर, थलचर, सभी जीवधारी, मानव द्वारा उन पर उनके जीवनकाल में की गई ज्यादतियों का एक–एक कर हिसाब मांगने लगे।

बैल ने पूछा "तुम्हारे परिवार ने हमारे लिए चारा तैयार नहीं किया, परंतु सुबह से शाम तक हमको लगातार खेत में जोता। हमने तो लघुशंका और दीर्घशंका भी खेत जोतते–जोतते की। तुम्हें धूप सहन नहीं हुई तो हमको मार–मार कर तेज चलने के लिए कहते रहे। परंतु, कभी ये नहीं सोचा कि उसी चिलचिलाती धूप में हम भी तुम्हारे साथ ही काम कर रहे थे। तुम्हें घर जाकर सुस्ताने की जल्दी थी, जिसके लिए तुमने पसीना–पसीना हुए हमारे तन पर चाबुक की ताबड़तोड़ बारिश की। जवाब दो, भला क्यों?''

किसान रूपी मानव इस प्रश्न पर हतप्रभ एवं निरुत्तर था। उसने मन में सोचा कि ये तो मैंने सोचा ही नहीं था। मानव को यूं खामोश खड़ा देख बैल फिर से बोल पड़ा, "उस समय वो मृत्युलोक था, जहां हम बोल नहीं पाते थे। परंतु यहां हम–तुम एक जैसे हैं और जब आमने–सामने बराबर के लोग हों, तो सवाल पर सामने वाले को जवाब देना ही चाहिए।"

तर्क बिलकुल सही था, पर मानव निरुत्तर था। निरुत्तर मानव के सामने फिर अगली बारी भेड़–बकरियों की थी, जिन्होंने एक स्वर में पूछा, "दूध, ऊन और यहां तक कि अपने बच्चों को भी तुम्हें समर्पित करने के बावजूद तुमने हमारा यह हाल किया? हमारी खाल से बने जैकेट या स्वेटर पहनते समय.... क्या तुमने सोचा की हमारे वंशजों पर ये सब देख कर क्या बीत रही होगी? तुम सभी मानव.. सब के सब बड़े ही अकृतज्ञ प्राणी हो।"

उसके बाद नंबर हाथी–घोड़ों का था। उन्होंने अपना पक्ष रखा "जनाब हमारे ऊपर सवारी करने के लिए आपका पूरा परिवार तांगे पर सवार हो जाता है, चाहे हमारी क्षमता इतनी हो या नहीं। मुंह में, कमर में, लोहे की तंग कड़ी बांधकर, लोहे के गोल टुकडे हमारे पैरों में ठोककर, तुम हम पर शासन करते हो।"

पहले घोड़ा बोला, जिसे सुनकर फिर हाथी से भी न रहा गया, "जीवन भर तुम्हारा बोझा ढ़ोना, तुम्हें सवारी कराना, हम सब करते रहे और तुम हमको सर्कस में कोड़े मारकर, नचाकर अपनी आजीविका कमाते रहे। परंतु तुम्हारा लालच यहीं नहीं रूका..... हमारे दांतों को अपने घर में सजावट की वस्तुएं बनाकर, हमारी रूह तक को भी सदा के लिए अपने घर में कैद कर लेते हो। आखिर कोई सहे, तो कितना सहे?"

इन इल्जामों को सुनते हुए मानव के पास जवाब में एक शब्द भी नहीं था, वह हतप्रभ था। फिर वहीं खड़े शेर के उलाहना भरे शब्द कुछ अलग ही प्रकार के थे, "मैं जंगल के उन छोटे जीवों को खाकर तुम्हारी फसल की रक्षा करता हूँ, जो फसल को नुकसान पहुंचाते हैं।

परंतु तुम मेरा शिकार करके तमगे हासिल करते हो और मेरे शरीर को अपने घरों में शोभा की वस्तु के तौर पर सजाते हो। क्या तुम्हारी फसल की रक्षा करने का यह ईनाम उचित है?"

शेर की बात अभी पूरी भी नहीं हुई थी कि तभी गाय–भैंसें बोल उठीं, "हमारे बछड़ों को दूध पीने को हमारे पास भेजते हो और जैसे ही हम सब अपने थनों में दूध का संचार करती हैं...... तुम हमारे बछड़ों को हटाकर सारा दूध निकाल लेते हो और हमारे लाल भूखे रह जाते हैं। हमारे बछड़े बड़े होकर तुम्हारे खेतों में काम करते हैं और हमारे दूध–घी से तुम्हारा परिवार चलता है। हमारा दूध बेचकर तुम घर का खर्च चलाते हो और जब हम दूध देने योग्य नहीं रह जाती तो हमको जंगलों में छोड़ देते हो और तुम में से कई तो चमड़े और मांस के लिए हमें व्यापारियों तक को बेच देते हैं।

सुनकर मानव बिलकुल सन्न हो गया था और अपने किए कर्मों को याद कर परिस्थितियों को समझने की कोशिश कर रहा था। ठीक तभी कुत्तों ने मोर्चा संभाला– "तुम्हारे घर–बार की जिम्मेदारी और रक्षा रात और दिन करने पर भी पेट भर भोजन नहीं मिलता। कभी–कभी तो सिर्फ उस जगह को सूंघकर ही संतोष कर लेते हैं जहां बैठकर तुम खाना खाते हो। हमारी वफादारी में कभी कोई कमी नहीं होती। किंतु सम्मान के नाम पर तुम्हारे हाथ में हमारे लिए हमेशा केवल लाठी ही रहती है।"

कुत्तों की बात खत्म होने के साथ ही वानरों ने अपना रोना रोया, "ये ठीक है कि हमको छीन झपटकर अपना पेट पालना पड़ता है, परंतु तुम्हारे बंधुओं द्वारा डमरू और डंडे के बल पर हमें नचाना कितना सही है? हम भी जीव हैं कोई मनोरंजन का साधन नहीं। हद तो तब होती है जब हम जहां भी जाते हैं, वहीं लाठी–डंडे और ईंट–पत्थरों से हमारा स्वागत होता है। हमको नचाकर अपना पेट पालना और फिर हर जगह हमें दुतकारना कुछ ज्यादा ही ज्यादती नहीं लगती क्या?"

शिकायतकर्ताओं की भीड़ बहुत थी। सुनाते–सुनाते अब पूर्वजन्म में सताए गए वे सभी प्राणी अपने साथ किए गए (अ)मानवीय अत्याचारों का हिसाब–किताब मानव से ईश्वर की नजरों के सामने करना चाहते थे। मानव किंकर्तव्यविमूढ़ हो चला था। उसे एक–एक करके अपने मानव जन्म में किए गए कृत्य याद आने लगे थे। पर वो कर भी क्या सकता था? पृथ्वीलोक के कर्मों का अब हिसाब कैसे दे?

आखिर में, सब ईश्वर की ओर देखने लगे और उनके निर्णय की प्रतीक्षा करने लगे। ईश्वर ने पहले मानव की ओर सख्त नजरों से देखा और फिर अन्य जीवों की ओर ......... जो कि मानव से किसी न किसी कारण नाराज एवं क्रोधित थे। फिर ईश्वर ने अपने स्थान पर खड़े होकर कहा–

"मानव के अलावा सभी जीवधारियों ने मेरे निर्देशों के अनुसार कार्य किए। मानव ने अपनी शक्तियों और अन्य जीवधारियों की निश्छल प्रवृत्तियों का सदुपयोग और दुरुपयोग दोनों किए है, जो पूरी तरह अक्षम्य है। अतः मेरा प्रथम आदेश है कि मानव से अलग सभी जीवधारी स्वर्ग की ओर प्रस्थान करें और दूसरा आदेश यह है कि मानव उस लोक में जाए, जो उसने अपने कर्मों के अनुसार स्वयं के लिए हासिल किया है यानि 'कर्मलोक'।

इतना सुनकर सभी अपने–अपने लोकों की ओर प्रस्थान कर गए।

राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है

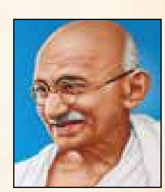

महात्मा गांधी

सूचना प्रौद्योगिकी

# साइबर सुरक्षा - आज के समय की आवश्यकता

**नरेश कुमार, प्रबंधक (आईटी)**
चमेरा–II पावर स्टेशन, करियाँ (हिमाचल प्रदेश)

## साइबर की दुनिया – एक परिचय

आज का युग पूर्णतः तकनीकी युग है। हर व्यक्ति किसी न किसी प्रकार से तकनीक से जुड़ा हुआ है। खासतौर पर डिजिटल तकनीकी से हम सब जुड़े हुए हैं। जो भी डिजिटल उपकरण हम उपयोग कर रहे हैं जैसे कंप्यूटर, लैपटॉप, मोबाइल इत्यादि एवं इनके द्वारा जब हम इंटरनेट के माध्यम से ऑनलाइन संसाधनों का उपयोग करते हैं तो हम साइबर दुनिया से जुड़ जाते हैं। अर्थात कंप्यूटर, लैपटॉप, मोबाइल तथा इंटरनेट के उपयोग को ही साइबर वर्ल्ड या साइबर की दुनिया कहा जा सकता है।

## साइबर वर्ल्ड के खतरे

साइबर वर्ल्ड एक असीमित दुनिया है, जिसमें हर दिन नए–नए प्रयोग हो रहे हैं एवं नई–नई सुविधाएं मिल रही हैं। उदाहरण के तौर पर जैसे ऑनलाइन खरीदारी, पैसे का लेनदेन, बैंकिंग, परस्पर बातचीत, फोटो एवं वीडियो इत्यादि का आदान–प्रादान करना। इसके अतिरिक्त, सोशल मीडिया का निरंतर उपयोग भी बढ़ रहा है जिसके माध्यम से हम अपना निजी जीवन दूसरों के साथ साझा कर रहे हैं। इन सभी सुविधाओं के लिए वेबसाइट एवं मोबाइल ऐप का इस्तेमाल किया जाता है। इन्हीं ऐप एवं वेबसाइटों का सहारा लेकर या इनकी आड़ में असामाजिक तत्व अपने निजी लाभ के लिए उपभोक्ताओं को उनके डेटा अथवा धन संबंधी हानि पहुंचाते हैं। इसके अलावा कई बार व्यक्ति के सामाजिक प्रतिष्ठा को भी नुकसान पहुंचाया जाता है। हम अक्सर ऐसी घटनाओं के बारे मे सुनते हैं जिसमें किसी व्यक्ति के खाते से पैसे निकाल लिए गए, किसी की सामाजिक प्रतिष्ठा की हानि पहुंचाने का डर दिखाकर ब्लैकमेल किया जाता है।

यदि आपके बैंक खाते से पैसे, आपके हस्तक्षेप के बिना निकल जाएं या क्रेडिट कार्ड इत्यादि से खरीदारी का मैसेज आए तो तुरंत अपने कार्ड को ब्लॉक करवा दें एवं बैंक से संपर्क करें।

## डिजिटल गिरफ्तारी

साइबर अपराधी नुकसान पहुंचाने के प्रतिदिन नए–नए तरीके ढूंढते रहते हैं। आज कल ऐसे अपराधी डिजिटल गिरफ्तारी के माध्यम से वित्तीय क्षति पहुंचा रहे हैं।

'डिजिटल गिरफ्तारी' साइबर अपराध का एक रूप है, जिसमें घोटालेबाज कानून प्रवर्तन एजेंसियों (सीबीआई, ईडी, पुलिस, आदि) के अधिकारियों का रूप धारण करते हैं और दावा करते हैं कि पीड़ित मनी लॉन्ड्रिंग या नशीले पदार्थों की तस्करी जैसे गंभीर अपराधों में शामिल है।

**तरीकाः** घोटालेबाज कानून प्रवर्तन या सरकारी निकायों के अधिकारियों के रूप में (कभी–कभी आधिकारिक पोशाक या सेटिंग में) पीड़ितों को कॉल या वीडियो कॉल करते हैं और व्यक्तिगत जानकारी मांगते हैं।

**रणनीतिः** वे व्यक्तिगत जानकारी इकट्ठा करते हैं, खुद को प्राधिकारी दिखाकर उपभोक्ता के मन में भय पैदा करते हैं और फिर अक्सर नकली कानूनी प्रावधानों का हवाला देते हुए गिरफ्तारी की धमकी देकर मनोवैज्ञानिक दबाव डालते हैं। एक आम नागरिक या कहें उपभोक्ता

प्रवर्तन एजेंसियों द्वारा की गई ऐसी कॉल से और सुनाई गई अप्रत्याशित झूठी कहानी से घबरा जाता है और गलती कर बैठता है।

यह समस्या इतनी व्यापक है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा 'मन की बात' कार्यक्रम में इसका उल्लेख किया गया और देशवासियों को इस नए प्रकार के साइबर अपराध के खिलाफ सजग और सचेत रहने के लिए चेताया है।

## साइबर खतरों से बचाव

- जानकारी, सावधानी एवं समझदारी से ही इन खतरों से बचा जा सकता है।
- हमेशा अपने आपको साइबर खतरों के प्रति जागरूक रखें।
- अपने कंप्यूटर का लॉगिन विवरण कभी भी दूसरों के साथ साझा न करें। पासवर्ड किसी परिवारजन, स्वयं, अपनी संस्था इत्यादि के नाम से न रखें।
- मोबाइल पर ऐप केवल आधिकारिक वेबसाइट से ही डाउनलोड करें।
- किसी भी ललचाने वाले वेब लिंक को क्लिक करने से सावधान रहें। ईमेल, सोशल मीडिया साइट आदि पर विज्ञापन के लिंक को क्लिक न करें।
- जिन ऐप का उपयोग बंद कर दिया हो उन्हें अपने फोन से हटा दें।
- अपने कंप्यूटर एवं मोबाइल फोन को हमेशा अपडेट रखें।
- फ्री वाईफाई पर संवेदनशील लेनदेन से बचें।
- खरीदारी केवल आधिकारिक वेबसाइट से ही करें एवं नकली ऐप और नकली वेबसाइट से बचें।
- यदि कोई कॉल पर आपसे OTP पूछे तो किसी भी परिस्थिति में न बताएं बल्कि कॉल को तुरंत काट दें।
- अपने साथ हुई किसी भी तरह की साइबर ठगी की जानकारी तुरंत अपने परिचितों को बिना संकोच के बताएं।

## राष्ट्रीय साइबर अपराध रिपोर्टिंग पोर्टल

साइबर अपराध से जुड़ी ऐसी घटनाओं की विस्तृत जानकारी अविलंब साइबर क्राइम सेल हेल्पलाइन 1930 पर सूचित करें। यह निशुल्क सुविधा पूरे भारत में उपलब्ध है। इसके अतिरिक्त, राष्ट्रीय साइबर अपराध रिपोर्टिंग पोर्टल https://cybercrime.gov.in पर भी शिकायत दर्ज करवा सकते हैं।

निष्कर्ष यही है कि सजकता एवं सावधानी ही हमें साइबर खतरों से बचा सकती है। इसलिए हमेशा सजग रहिए, सावधान रहिए एवं सुरक्षित रहिए। ■■■

प्रेरक प्रसंग

## सच बोलने की हिम्मत

स्वामी विवेकानंद एक दिन कक्षा में मित्रों को कहानी सुना रहे थे। सभी इतने मग्न थे कि उन्हें पता ही नहीं चला कि कब मास्टर जी कक्षा में आए और पढ़ाना शुरू कर दिया। मास्टर जी को कुछ फुसफुसाहट सुनाई दी तो उन्होंने पूछा, 'कौन बात कर रहा है?' सभी ने स्वामी जी और उनके साथ बैठे छात्रों की तरफ इशारा कर दिया। मास्टर जी ने तुरंत उन छात्रों को बुलाया और पाठ से संबंधित एक प्रश्न पूछने लगे। जब कोई उत्तर न दे सका, तो मास्टर जी ने स्वामी जी से भी वही प्रश्न किया। उन्होंने उत्तर दे दिया। मास्टर जी को यकीन हो गया कि स्वामी जी पाठ पर ध्यान दे रहे थे और बाकी छात्र बातचीत में लगे थे। उन्होंने स्वामी जी को छोड़ सभी को बेंच पर खड़े होने की सजा दे दी। सभी छात्र बेंच पर खड़े होने लगे, स्वामी जी ने भी यही किया। तब मास्टर जी स्वामी जी से बोले, तुम बैठ जाओ, 'नहीं सर, मुझे भी खड़ा होना होगा क्योंकि मैं ही इन छात्रों से बात कर रहा था।' स्वामी जी ने कहा।

सभी उनकी सच बोलने की हिम्मत देख बहुत प्रभावित हुए।

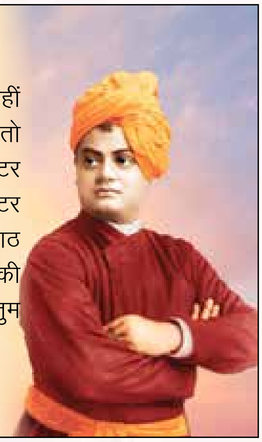

विविध आलेख

# नारी शिक्षा

**राजू भगत, हिंदी अनुवादक**
तीस्ता–V पावर स्टेशन, सिंगताम (सिक्किम)

नारी को सृष्टि का अभिन्न अंग माना गया है। भारतीय संस्कृति में नारी को शक्ति, सृजन और समर्पण का प्रतीक माना गया है। जहां एक ओर प्राचीन भारतीय ग्रंथों में नारी को देवी स्वरूप दर्शाया गया है, वहीं दूसरी ओर समाज में उसे कई बार संघर्ष और अन्याय का सामना भी करना पड़ा है। आज के आधुनिक युग में नारी शक्ति की महत्ता को समझा जा रहा है, किंतु अभी भी समाज में उसे समानता और सम्मान की आवश्यकता है।

भारतीय संस्कृति में नारी को विभिन्न रूपों में पूजा जाता है। वह शक्ति स्वरूपा दुर्गा, ज्ञान की देवी सरस्वती और माता लक्ष्मी के रूप में पूज्य हैं। इन सभी रूपों में नारी का स्वाभाविक गुण– सृजन, पालन और संरक्षण समाहित है। *'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः'* इस संस्कृत श्लोक से यह स्पष्ट होता है कि जहां नारी का सम्मान होता है, वहां देवता निवास करते हैं।

नारी शिक्षा समाज के समग्र विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। जब महिलाएं शिक्षित होती हैं, तो न केवल वे अपने जीवन को बेहतर बनाती हैं, बल्कि पूरे समाज और राष्ट्र का उत्थान भी करती हैं। महान व्यक्तियों ने नारी शिक्षा के महत्व को समय–समय पर स्पष्ट रूप से व्यक्त किया है। इसके साथ–साथ भारत सरकार ने भी नारी शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए कई महत्वपूर्ण कार्यक्रम और योजनाएं शुरू की हैं। हालांकि, नारी शिक्षा के रास्ते में कई चुनौतियां भी हैं, जिन्हें पार करना आवश्यक है ताकि हम एकसमान और सशक्त समाज का निर्माण कर सकें। इन चुनौतियों को कम करने के लिए हमें एक संजीदा और व्यापक दृष्टिकोण अपनाना होगा।

## नारी शिक्षा पर महान व्यक्तियों के विचार

महात्मा गांधी ने नारी शिक्षा के महत्व को इस तरह व्यक्त किया था, 'अगर आप इस दुनिया को बदलना चाहते हैं, तो महिला को शिक्षा दें।' गांधी जी का यह कथन नारी शिक्षा के महत्व को स्पष्ट करता है। उन्होंने हमेशा नारी को समाज का अभिन्न अंग माना और उसे समान अधिकार देने की बात की। उनका मानना था कि जब महिला शिक्षित होगी तभी समाज में सशक्त बदलाव आ सकता है। महिला का शिक्षा प्राप्त करना समाज में एक स्वस्थ, सशक्त और प्रगतिशील वातावरण का निर्माण करता है।

पंडित नेहरू ने भी नारी शिक्षा के महत्व को पहचाना और इसके लिए कई योजनाएं शुरू कीं। उन्होंने कहा था, 'अगर हम अपने समाज को सशक्त बनाना चाहते हैं, तो हमें महिलाओं को शिक्षा देना होगी।' पंडित नेहरू के अनुसार, महिलाओं को सशक्त बनाना और उन्हें समान अधिकार देना राष्ट्र के विकास के लिए आवश्यक है। उन्होंने भारतीय समाज में नारी के योगदान को मान्यता दी और उनके लिए शिक्षा की आवश्यकता को महसूस किया।

स्वामी विवेकानंद ने नारी की शिक्षा पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा था, 'महिला केवल घर की रानी नहीं है, वह समाज की शक्ति है और उसकी शक्ति का इस्तेमाल तभी हो सकता है जब वह शिक्षित हो।' स्वामी विवेकानंद का यह विचार महिलाओं के आत्म–सम्मान और उनकी सामाजिक भूमिका को रेखांकित करता है। उनका मानना था कि महिला की शक्ति और क्षमता तभी पूरी तरह से विकसित हो सकती है जब वह शिक्षा के माध्यम से जागरूक हो।

## नारी शिक्षा का महत्व

1. **सशक्तिकरण:** जब महिलाएं शिक्षित होती हैं तो वे न केवल अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होती हैं, बल्कि समाज में आत्मनिर्भर भी बनती हैं। इससे न केवल उनका व्यक्तिगत जीवन बेहतर होता है, बल्कि समाज के प्रति उनका योगदान भी बढ़ता है। एक शिक्षित महिला समाज में सकारात्मक बदलाव की वाहक बन सकती है।
2. **स्वास्थ्य और परिवार कल्याण:** शिक्षित महिलाएं अपनी और अपने परिवार की सेहत के प्रति अधिक जागरूक होती हैं। वे बेहतर तरीके से बच्चों का पालन–पोषण करती हैं और उन्हें शिक्षा देती हैं जिससे आने वाली पीढ़ी भी स्वस्थ और शिक्षित होती है। महिला शिक्षा का प्रभाव समाज के समग्र स्वास्थ्य पर पड़ता है।
3. **आर्थिक समृद्धि:** शिक्षा से महिलाएं आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनती हैं। वे स्व–रोजगार प्राप्त कर सकती हैं जिससे उनका परिवार भी आर्थिक रूप से मजबूत होता है। महिलाएं अपनी मेहनत और कौशल से समाज में आर्थिक योगदान करती हैं जिससे समाज की समृद्धि में वृद्धि होती है।
4. **समाज में बदलाव:** शिक्षित महिलाएं समाज की संरचना में सकारात्मक बदलाव ला सकती हैं। वे समाज की समस्याओं को समझती हैं और उनका समाधान ढूंढने में सक्षम होती हैं। महिलाओं के शिक्षित होने से न केवल उनके अधिकारों में सुधार होता है, बल्कि समाज के समग्र विकास में भी योगदान होता है।

## भारत सरकार द्वारा चलाए जा रहे नारी शिक्षा/सशक्तिकरण के कार्यक्रम

भारत सरकार ने नारी शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए कई महत्वपूर्ण योजनाएं और कार्यक्रम शुरू किए हैं। इन योजनाओं का उद्देश्य महिलाओं को शिक्षा के क्षेत्र में समान अवसर प्रदान करना और उनके सामाजिक–आर्थिक सशक्तिकरण की दिशा में काम करना है। कुछ प्रमुख योजनाओं का विवरण आगे दिया गया है:

### 1. कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय योजना

कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय योजना विशेष रूप से उन इलाकों के लिए शुरू की गई है, जहां लड़कियों को शिक्षा प्राप्त करने के अवसर सीमित होते हैं। यह योजना मुख्य रूप से ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों में रहने वाली लड़कियों को शिक्षा प्रदान करने के लिए बनाई गई है। इसके तहत, कक्षा 6 से 12 तक के लिए आवासीय विद्यालयों की स्थापना की जाती है, जहां लड़कियों को मुफ्त शिक्षा, आवास और भोजन की सुविधा मिलती है। इसका उद्देश्य बालिकाओं की शिक्षा को बढ़ावा देना और उन्हें स्कूलों में बनाए रखना है।

### 2. मिशन शक्ति

मिशन शक्ति योजना का उद्देश्य महिलाओं को सशक्त बनाना और उन्हें सुरक्षा, सम्मान और समान अवसर प्रदान करना है। इस योजना के तहत महिलाओं के खिलाफ हिंसा, शोषण और भेदभाव को रोकने के लिए कई कार्यक्रम चलाए जाते हैं। इसके अलावा, महिलाओं को स्वरोजगार और वित्तीय सशक्तिकरण के लिए प्रशिक्षण और सहायता दी जाती है। यह योजना महिला उत्थान के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण अपनाती है जो महिलाओं को शारीरिक, मानसिक और आर्थिक दृष्टि से सशक्त करती है।

### 3. बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ

यह योजना महिलाओं और बालिकाओं की शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए शुरू की गई थी। इसके तहत विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में बालिकाओं को शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया जाता है और उनके अधिकारों के प्रति जागरूकता फैलाने का प्रयास किया जाता है। इस योजना का उद्देश्य लिंगानुपात को सुधारना और लड़कियों के लिए शिक्षा के अवसर बढ़ाना है।

**4. सर्व शिक्षा अभियान**

यह योजना 2000 में शुरू की गई थी जिसका उद्देश्य देश में सभी बच्चों के लिए शिक्षा के अवसर प्रदान करना था। इस योजना के तहत लड़कियों को विशेष रूप से प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित किया गया है। सर्व शिक्षा अभियान ने ग्रामीण क्षेत्रों और पिछड़े इलाकों में लड़कियों के लिए शिक्षा के स्तर को बेहतर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

**5. महिला शिक्षा योजना**

इस योजना के तहत महिला शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए कई उपाय किए जाते हैं, जैसे विद्यालयों में महिला शिक्षक नियुक्त करना, महिलाओं के लिए विशेष स्कूल खोलना और उनके लिए सुविधाएं प्रदान करना।

**6. राष्ट्रीय महिला सशक्तिकरण योजना**

इस योजना का उद्देश्य महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए विभिन्न उपायों को लागू करना है। इसके तहत महिला शिक्षा के क्षेत्र में कौशल विकास और रोजगार से संबंधित योजनाओं को बढ़ावा दिया जाता है। यह योजना महिलाओं को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने के लिए कार्य करती है।

## नारी शिक्षा में आ रही चुनौतियां

नारी शिक्षा के रास्ते में कई चुनौतियां भी हैं, जिनके कारण महिलाएं पूरी तरह से शिक्षा प्राप्त करने में असमर्थ रहती हैं।

1. **सामाजिक और सांस्कृतिक बाधाएं:** कई क्षेत्रों में अभी भी यह मान्यता है कि लड़कियों को घर के कामों में संलग्न होना चाहिए और उन्हें शिक्षित करने की आवश्यकता नहीं है। इस मानसिकता के कारण लड़कियां स्कूल नहीं जा पाती।

2. **परिवार का आर्थिक दबाव:** गरीब परिवारों में अक्सर लड़कियों को शिक्षा के बजाय घर के कामों में लगा दिया जाता है ताकि परिवार की आर्थिक स्थिति में सुधार हो सके।

3. **अवसरों की कमी:** ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा की सुविधाओं का अभाव है। स्कूलों की कमी, शिक्षकों की कमी और खराब बुनियादी सुविधाएं नारी शिक्षा के रास्ते में बाधा डालती हैं।

4. **सुरक्षा और उत्पीड़न:** महिलाओं की सुरक्षा एक गंभीर समस्या है। लड़कियों को स्कूल जाने में सुरक्षा संबंधी समस्याओं और उत्पीड़न का सामना करना पड़ता है, जो उनकी शिक्षा में रुकावट डालता है।

## नारी शिक्षा की चुनौतियों को कम करने के उपाय

नारी शिक्षा की चुनौतियों को कम करने के लिए हमें कई महत्वपूर्ण कदम उठाने होंगे–

- **सामाजिक जागरूकता बढ़ाना:** समाज में नारी शिक्षा के महत्व को लेकर जागरूकता फैलानी होगी। इसके लिए समाज के सभी वर्गों को शिक्षित करना आवश्यक है ताकि वे नारी शिक्षा की अहमियत को समझें और लड़कियों को शिक्षा प्राप्त करने के पर्याप्त अवसर मिल सके।

- **सरकारी योजनाओं का उचित क्रियान्वयन:** नारी शिक्षा के लिए सरकार द्वारा चलाए जा रहे कार्यक्रमों का सही तरीके से क्रियान्वयन किया जाना चाहिए। इसके लिए सही नीतियां और प्रशासनिक व्यवस्था की आवश्यकता है ताकि इन योजनाओं का लाभ जरूरतमंद तक पहुंचे।

- **सुरक्षा की गारंटी:** लड़कियों की सुरक्षा को सुनिश्चित करना बेहद जरूरी है। स्कूलों और कॉलेजों में सुरक्षा के उचित इंतजाम किए जाने चाहिए ताकि लड़कियां बिना किसी डर के शिक्षा

प्राप्त कर सकें। इसके लिए सरकार और स्थानीय प्रशासन को मिलकर काम करना होगा।

- **अर्थव्यवस्था में सुधार:** गरीब परिवारों को आर्थिक सहायता प्रदान करने के लिए विशेष योजनाएं बनानी चाहिए ताकि वे अपनी लड़कियों को शिक्षा दिलाने के लिए आर्थिक रूप से समर्थ हो सकें।
- **इन्फ्रास्ट्रक्चर सुधारना:** ग्रामीण और पिछड़े इलाकों में स्कूलों और शिक्षकों की कमी को दूर करना जरूरी है। बेहतर शिक्षा प्रणाली, स्कूलों की संख्या बढ़ाना और योग्य शिक्षक नियुक्त करना, नारी शिक्षा में सुधार ला सकता है।
- **लड़कियों के लिए विशेष योजनाएं:** लड़कियों के लिए विशेष छात्रवृत्तियां, कौशल प्रशिक्षण और रोजगार के अवसर प्रदान करने से उनकी शिक्षा और आत्मनिर्भरता में वृद्धि हो सकती है।

### निष्कर्ष

नारी शिक्षा का समाज पर गहरा प्रभाव पड़ता है और यह न केवल महिला के सशक्तिकरण का माध्यम है बल्कि यह पूरे समाज और राष्ट्र के विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। महान व्यक्तियों के विचारों और भारत सरकार द्वारा चलाए जा रहे कार्यक्रमों को ध्यान में रखते हुए, हमें यह समझना चाहिए कि नारी शिक्षा से ही समाज में समानता, सशक्तिकरण और प्रगति संभव है। समाज में बदलाव लाने के लिए महिलाओं को समान अवसर और शिक्षा मिलनी चाहिए ताकि वे अपने अधिकारों का पूरी तरह से उपयोग कर सकें और समाज में सकारात्मक परिवर्तन ला सकें।

नारी शिक्षा को बढ़ावा देना समाज की जिम्मेदारी है। यह हमारे समृद्ध भविष्य की कुंजी है। महिलाओं की शिक्षा से एक बेहतर और समृद्ध समाज का निर्माण संभव है जो संतुलित और प्रगति के पथ पर अग्रसर हो।

## हास–परिहास

**बीवी**– भैया ये कद्दू कैसे दिया
**सब्जीवाला** – 20 रूपए किलो!
**बीवी** – और ये भिंडी...टमाटर
तभी पति बोल पड़ा– जल्दी करो मुझे ऑफिस के लिए देर हो रही है।
**बीवी**– तुम ज्यादा मत बोलो... जल्दी के चक्कर में तुम्हारे जैसा पति मिला, अब सब्जी लेने में जल्दबाजी नहीं करूंगी।

**बंटू:** वेटर, ऐसी चाय पिलाओ जिसे पीकर मन झूम उठे और बदन नाचने लगे।
**वेटर:** सर हमारे यहां भैंस का दूध आता है, नागिन का नहीं।

**संजू:** पंडित जी, किसी सुंदर लड़की का हाथ पाने के लिए क्या करूं?
**पंडित जी:** किसी मॉल के बाहर मेहंदी लगाने का काम शुरू कर दे...

**लड़की** : मेरा जानू, मेरा बेबी, मेरा बच्चा, माय स्वीटू, मेरा बाबू, क्या तुम मुझसे शादी करोगे?
बोल मेरा बच्चा..
**लड़का:** (हैरान होकर) अरे प्रपोज कर रही है या गोद ले रही है?

भाई कितनी भी पढ़ाई कर लो, डिग्री–विग्री ले लो...
लेकिन रेस्टोरेंट के दरवाजे पर Push और Pull देखते ही 2–3 सेकंड के लिए सोचना जरूर पड़ता है कि
दरवाजा धकेलना है कि खींचना है .......

होर्लिक्स और बोर्नवीटा ने हमको शक्तिशाली और लंबा तो नहीं बनाया पर...
अचार और मुरब्बा रखने के लिए डिब्बे बहुत दिए हैं।

**डॉक्टर**– चश्मा किसके लिए बनवाना है?
**मोहन**– डॉक्टर साहब! अपने टीचर के लिए।
**डॉक्टर**– क्यों??
**मिंटू**– क्योंकि, मैं हमेशा उन्हें गधा ही नजर आता हूँ।

**पत्नी** – आपको मेरी सुंदरता ज्यादा अच्छी लगती है या मेरे संस्कार...?
**पति** – मुझे तो तेरी ये मजाक करने की आदत बहुत अच्छी लगती है।

राज्य व पर्व

# जहां शिव ने 'उगना' बन की थी चाकरी

**सुंदर सहनी, वरिष्ठ कार्यालय अधीक्षक**
राजभाषा विभाग, निगम मुख्यालय (फरीदाबाद)

देशभर में भगवान महादेव के कई प्रसिद्ध मंदिर स्थापित हैं। जिनसे जुड़ी कई रोचक कथाएं भी सुनने को मिलती हैं। भोले भंडारी का ऐसा ही एक मंदिर बिहार के मधुबनी में जिला मुख्यालय से 17 किलोमीटर दूर पंडौल प्रखंड के भवानीपुर गांव में स्थित है, जो उगना महादेव व उग्रनाथ मंदिर के नाम से काफी प्रसिद्ध है। ऐसी लोकमान्यता है कि इस मंदिर में भगवान शिव ने मैथिली भाषा के महाकवि विद्यापति के घर नौकरी की थी।

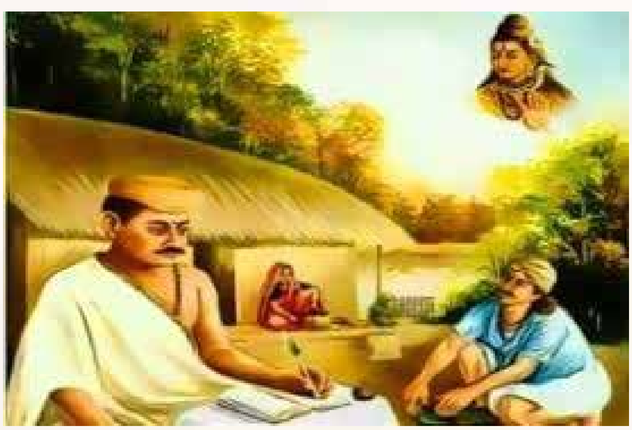

## पौराणिक कथा

महाकवि विद्यापति हिंदी साहित्य की भक्ति परंपरा के प्रमुख कवियों में से एक थे, जिन्हें मैथिली के सर्वोपरि कवि के रूप में जाना जाता है। बिहार के मिथिला क्षेत्र के दरभंगा जिले में स्थित बिस्फी गांव की प्रसिद्धि महाकवि विद्यापति के गांव के रूप में है। मैथिल कोकिल के नाम से चर्चित विद्यापति ठाकुर भगवान शिव के अनन्य भक्त थे। उन्होंने भगवान शिव पर अनेकानेक गीतों की रचना की है। मान्यताओं के अनुसार, जगतव्यापी भगवान शिव विद्यापति की भक्ति व रचनाओं से बेहद प्रसन्न होकर स्वयं एक दिन वेश बदलकर उनके पास चले आए थे। उनके साथ रहने के लिए भगवान शिव विद्यापति के घर नौकर तक बनने के लिए तैयार थे। उन्होंने अपना नाम 'उगना' बताया था। दरअसल कवि विद्यापति आर्थिक रूप से सबल नहीं थे, इसलिए उन्होंने उगना यानि भगवान शिव को नौकरी पर रखने से पहले मना कर दिया। मगर फिर उगना के आग्रह पर ही सिर्फ दो वक्त के भोजन पर उन्हें रखने के लिए विद्यापति तैयार हो गए थे। विद्यापति की पत्नी सुधीरा ने कहा, 'उगना बड़ा नेक लड़का लगता है, रख लीजिए....हमारी सेवा करने वाला भी तो कोई नहीं है।' विद्यापति ने पत्नी की बात मान ली और शिव की इच्छा पूरी हो गई।

एक दिन विद्यापति राजा के दरबार में जा रहे थे, साथ में उगना भी था। तेज गर्मी की वजह से विद्यापति का गला सूखने लगा। आसपास पानी का कोई स्रोत नहीं था। व्याकुल विद्यापति ने उगना से कहा, 'कहीं से जल का प्रबंध करो अन्यथा मैं प्यासा मर जाऊंगा।' उगना कुछ दूर जाकर पेड़ों की आड़ में छिपकर अपने वास्तविक रूप में आए। उनकी जटा में गंगा थीं। जटा खोलकर उन्होंने लोटे में जल भर लिया और फिर उगना रूप में आकर विद्यापति के सामने पानी भरा लोटा रख दिया। विद्यापति ने जब जल पिया तो उन्हें गंगाजल का स्वाद महसूस हुआ। वह आश्चर्यचकित हो उठे कि इस वन में दूर तक कहीं जल का कोई स्रोत नहीं दिखता, लेकिन उगना को गंगाजल कहां मिल गया। विद्यापति को उगना पर संदेह होने लगा। उन्होंने सोचा, कोई साधारण व्यक्ति इतनी जल्दी गंगाजल नहीं ला सकता।

इसमें जरूर कोई दिव्यशक्ति है। वह उगना से उसका वास्तविक परिचय बताने की जिद्द करने लगे।

जब विद्यापति उगना को शिव कहकर उनके चरणों में गिर पड़े, तब उगना को अपने वास्तविक स्वरूप में आना पड़ा। शिव ने विद्यापति से कहा, 'मैं तुम्हारे साथ उगना बनकर रहना चाहता हूँ, लेकिन कभी किसी को मेरा वास्तविक परिचय मत देना। जिस दिन किसी को मेरा वास्तविक परिचय दोगे, मैं तत्क्षण ओझल हो जाऊंगा।'

विद्यापति को बिना मांगे ईश्वर का सानिध्य मिल चुका था। उन्होंने शिव की शर्त मान ली।

एक दिन सुधीरा ने उगना को जंगल से लकड़ियां बीनकर लाने के लिए कहा। उगना दूसरे काम में लग गया और वह लकडी लाना भूल गया। सुधीरा इससे नाराज हो गईं और चूल्हे से जलती लकड़ी निकालकर लगी उगना की पिटाई करने। विद्यापति ने जब यह दृश्य देखा तो अनायास ही उनके मुंह से निकल पड़ा, 'अरे, अहां ई की अनर्थ करै छी, ई त साक्षात् भगवान शिव थिकाह!' विद्यापति के मुंह से ये शब्द निकलते ही शिव अंतर्ध्यान हो गए।

इसके बाद विद्यापति पागलों की भांति 'उगना रे मोर कतय गेलाह' कहते हुए वनों में, खेतों में, हर जगह उगना को ढूंढने लगे। भक्त की ऐसी मनोदशा देखकर शिव को दया आ गई। एक वन में भगवान शिव उगना के रूप में प्रकट हो गए, मगर कहा कि 'अब मैं तुम्हारे साथ नहीं रह सकता। उगना रूप में मैं जो तुम्हारे साथ रहा उसके प्रतीक चिह्न के रूप में अब मैं शिवलिंग के रूप में विराजमान रहूंगा।'

इसके बाद शिव अपने लोक लौट गए और उस स्थान पर स्वयंभू शिवलिंग प्रकट हो गया। उगना महादेव का प्रसिद्ध मंदिर वर्तमान में मधुबनी जिले के भवानीपुर गांव में स्थित है।

## मंदिर की खासियत

उगना महादेव मंदिर के गर्भगृह में जाने के लिए आपको

छह सीढियां उतरकर जाना पड़ता हैं। इसी प्रकार उज्जैन स्थित महाकाल मंदिर में भी शिवलिंग तक पहुंचने के लिए छह सीढ़ियां उतरनी पड़ती हैं। उगना महादेव मंदिर का शिवलिंग तल से पांच फुट नीचे है। यहां माघ कृष्ण पक्ष में नर्क निवारण चतुर्दशी पर्व काफी धूमधाम से मनाया जाता है। वर्तमान में जो मंदिर है उसका निर्माण वर्ष 1932 में हुआ था। इसके अलावा बताया जाता है कि 1934 के भूकंप में मंदिर को कोई भी नुकसान नहीं आया था। हालांकि, निर्माण के बाद से मंदिर परिसर में काफी परिवर्तन किए गए हैं और आज मंदिर का परिसर काफी भव्य बना दिया गया है। मुख्य मंदिर के अलावा परिसर में यज्ञशाला और संस्कारशाला भी बनाई गई है। इस मंदिर के सामने एक सुंदर सरोवर और पास में ही एक कुआं भी है। इस कुएं के बारे में ऐसी मान्यता है कि शिवजी ने यहीं पर अपनी जटाओं से गंगा जल निकाला था। इस मान्यता के कारण काफी संख्या में श्रद्धालु इस कुएं का पानी पीते हैं।

## कवि विद्यापति

विद्यापति भारतीय साहित्य की भक्ति परंपरा के प्रमुख स्तंभों में से मैथिली के सर्वोपरि कवि के रूप में जाने जाते हैं। इनके काव्यों में मध्यकालीन मैथिली भाषा के स्वरूप के दर्शन किए जा सकते हैं। इन्हें वैष्णव और शैव भक्ति के सेतु के रूप में भी स्वीकार किया गया है।

मिथिला के लोगों को 'देसिल बयना सब जन मिट्ठा' का सूत्र देकर विद्यापति ने उत्तर बिहार में लोकभाषा के प्रति जनचेतना को जीवित करने का हरसंभव प्रयास किया। आज भी मिथिला पर महाकवि विद्यापति का व्यापक प्रभाव देखने को मिलता है। उनकी नचारी, महेशवाणी, गंगा विनती, प्राती वगैरह मिथिला के लोगों के मन–मस्तिष्क में रच बस गई हैं। सुकवि कंठहार यानी विद्यापति तुलसी, सूर, कबीर, मीरा इन सभी से पहले के कवि हैं। इनका संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश एवं मातृभाषा मैथिली पर समान अधिकार था।

विद्यापति की रचनाएं संस्कृत, अवहट्ट एवं मैथिली में मिलती हैं। देसिल बयना यानी मैथिली में लिखी 'पदावली' महाकवि को अमरत्व प्रदान करने के लिए काफी है। मैथिली साहित्य के इतिहास में विद्यापति का नाम स्वर्णाक्षर में अंकित है। बहुमुखी प्रतिभा संपन्न इस महाकवि के व्यक्तित्व में एक साथ चिंतक, शास्त्रकार तथा साहित्य रसिक का अद्भुत समन्वय था।

संस्कृत में रचित इनकी 'पुरुष परीक्षा', 'भू–परिक्रमा', 'लिखनावली', 'शैवसर्वश्वसार', 'प्रमाणभूत पुराण–संग्रह', 'गंगावाक्यावली, 'विभागसार' 'दानवाक्यावली', 'दुर्गाभक्ति तरंगिणी' 'पतालक' एवं 'वर्षकृत्य' आदि ग्रंथ जहां एक ओर इनके गहन पांडित्य के परिचायक हैं, वहीं मैथिली में रचित काव्य लोकभाषा के प्रति इनके गहरे लगाव के द्योतक हैं।

विद्यापति को एक दिन अपनी मृत्यु का आभास हुआ, तो उन्होंने अपने मित्र राजा और गुरुओं को स्मरण करते हुए कहा, सपन देखल हम शिव सिंह भूप/बत्तीस बरस पर सांवर रूप/बहुत देखल गुरुजन प्राचीन/ आब भेलहुं हम आयु विहीन।

महाकवि गंगा लाभ करना चाहते थे लेकिन उम्र की अधिकता के कारण गंगा तक पहुंचने से लाचार थे। उन्होंने आह्वान किया तो गंगा प्रकट हुईं और वह उसमें समा गए। वह तिथि थी कार्तिक धवल त्रयोदशी। इस तिथि को देशभर में मैथिल समुदाय हर साल विद्यापति स्मृति पर्व मनाता है।

विविध आलेख

# जलवायु परिवर्तन- एक वैश्विक चुनौती

**स्वप्निल राज, प्रोग्रामर (आईटी)**
लोकतक पावर स्टेशन, कोमकेराप (मणिपुर)

धरती के एक बड़े क्षेत्र में लंबे समय तक व्याप्त रहने वाले मौसम की औसत स्थिति को जलवायु कहा जाता है। किसी भू–भाग की जलवायु पर उसकी भौगोलिक स्थिति का सर्वाधिक प्रभाव पड़ता है। जलवायु एक ऐसा पहलू है जो दुनिया के हर इंसान के जीवन से जुड़ा है। जलवायु की दशा हमारे जीवन को बहुत प्रभावित करती है। जब किसी क्षेत्र विशेष के औसत मौसम में परिवर्तन आता है तो उसे 'जलवायु परिवर्तन' कहा जाता है। जलवायु परिवर्तन को किसी एक स्थान विशेष में भी महसूस किया जा सकता है एवं संपूर्ण विश्व में भी और वैश्विक स्तर पर जलवायु परिवर्तन का मानव जाति पर बड़ा असर पड़ा है।

हालांकि, वैज्ञानिक काफी अरसे से यही कह रहे हैं कि पर्यावरण बदल रहा है, जलवायु में परिवर्तन हो रहा है। गर्मी, सर्दी और बरसात जैसे सब मौसम के समयावधि और विशेषताओं में भी परिवर्तन हो रहा है। जिसे हम 'एक्ट्रीम वेदर इवेंट्स' कहते है। गत वर्षो से इसका असर कहीं न कहीं दिखाई देता रहा है। वैज्ञानिक यह भी बता रहे हैं कि पर्यावरण बदलाव ने ऐसी घटनाओं की संख्या को बहुत तेजी से बढ़ा दिया है। जैसे–कभी बहुत ज्यादा गर्मी, सर्दी, बर्फबारी या कोहरा या कभी तापमान 50° सेंटीग्रेड को पार करता दिखाई देता है। कई बार तो एक ही साल में पहले सूखे का असर दिखाई देता है और फिर उसी साल बाढ़ की खबरें भी आने लगती हैं। मौसम की बहुत सारी आपदाएं ऐसी होती हैं जिनके लिए पहले से बहुत कुछ नहीं किया जा सकता।

जलवायु परिवर्तन के कुछ प्रभावों को वर्तमान में भी महसूस किया जा सकता है। पृथ्वी के तापमान में वृद्धि होने के कारण हिमनद पिघल रहे हैं और महासागरों का जल स्तर बढ़ता जा रहा है, परिणामस्वरुप प्राकृतिक आपदाओं का खतरा बढ़ गया है।

जलवायु परिवर्तन के बहुत सारे कारण हैं और हमें इन कारणों को आपस में जोड़कर देखना होगा क्योंकि हम हमेशा हर मौसम के कष्ट को अलग–अलग करके देखते हैं। उसका आपस में भी कोई नाता है, इसे हम नजरअंदाज कर देते हैं। जाहिर है, फिर इनका इलाज भी अलग–अलग करने की कोशिश होती है। गर्मी में हम बर्फीली हवाओं और हिमस्खलन के कहर को भुला देते हैं। जलवायु परिवर्तन के विभिन्न कारण हैं –

(1) **ग्रीनहाउस गैसें**– ये ग्लोबल वार्मिंग की प्रमुख वजह है और यही जलवायु परिवर्तन का एक मुख्य कारण हैं। ग्रीनहाउस गैसें यानी कार्बन मोनो ऑक्साइड, कार्बन डाई ऑक्साइड और मीथेन, जिनके कारण पृथ्वी के औसत तापमान में बढ़ोत्तरी हो रही है। ग्रीनहाउस गैसों की यह परत पृथ्वी की सतह पर तापमान के संतुलन को बनाए रखने में आवश्यक है और यदि यह परत नहीं होगी तो पृथ्वी का तापमान काफी कम हो जाएगा।

आधुनिक युग में जैसे–जैसे मानवीय गतिविधियां बढ़ रही हैं वैसे–वैसे ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन में भी वृद्धि हो रही है जिसके कारण विश्व के तापमान में बढ़ोत्तरी हो रही है। आज हमारी धरती ताप युग के जिस मुहाने पर खड़ी है, उस विभिषिका का अनुमान

काफी पहले से ही हो गया था। ग्लोबल वार्मिंग के परिणामस्वरूप पृथ्वी पर जलवायु के तापमान में काफी तेजी से बढ़ोत्तरी हो रही है...... जिसका पर्यावरण पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। जलवायु परिवर्तन से जगह–जगह तूफान, बाढ़, जंगलों में आग, सूखा और लू के खतरे, उष्णकटिबंधीय चक्रवात बढ़ते ही जा रहे हैं। इसके अलावा वन्य जीवों का विलुप्त होना, जीवों के आचरण में बदलाव तथा उनके प्रवास स्थलों का बदलना जैसी बातें सामने आ रही हैं।

वातावरण में गर्मी बढ़ने पर वायुमंडल समुद्रों से अधिक पानी एकत्र कर लेता है, जिसके कारण भयंकर बारिश और सैलाब का मंजर पैदा होता है। दूसरी ओर ग्लोबल वार्मिंग से समुद्र के जलस्तर में लगातार वृद्धि हो रही है। यह वृद्धि दो तरीकों से हो रही है। एक ओर गरम तापमान से गलेशियर और बर्फ की चादरें पिघल रही है और दूसरी ओर यह पानी समुद्र में जा रहा है।

हमारी जलवायु काफी हद तक ग्लेशियरों पर निर्भर करती है क्योंकि साफ पानी का सबसे बड़ा स्रोत ये ग्लेशियर ही हैं। ग्लोबल वार्मिंग के कारण ये ग्लेशियर बहुत तेजी से पिघल रहे हैं और इसका भयावह परिणाम दुनिया भर में नजर आने लगा है। आज आर्कटिक की बर्फ समय से पहले पिघल रही है और वसंत के दौरान पौधों में पत्ते जल्दी आ रहे हैं। साथ ही टुंड्रा वनस्पति नए क्षेत्रों में फैल रही हैं। एक तरह से आर्कटिक में तेजी से तापमान में बदलाव आ रहा है। इससे हरियाली को पनपने में मदद मिल रही है। एक अध्ययन के अनुसार यदि तापमान में 2 डिग्री सेंटीग्रेड के लगभग वृद्धि होती है तो अनाज की उत्पादकता घट जाएगी और इस कारण खाद्य सुरक्षा के खतरे में पड़ जाने की प्रबल संभावना है।

(2) **भूमि के उपयोग में परिवर्तनः** वाणिज्यिक या निजी प्रयोग के लिए वनों की कटाई भी जलवायु परिवर्तन का कारण है। वर्तमान समय में जिस तरह से वृक्षों को कटाई की जा रही है वह काफी चिंताजनक है। ये पेड़ वातावरण में कार्बन डाई आक्साइड को अवशोषित करने वाले प्राकृतिक यंत्र के रूप में कार्य करते हैं और उनकी समाप्ति के साथ हम वह प्राकृतिक यंत्र भी खो देंगे।

(3) **शहरीकरणः** शहरीकरण और औद्योगिकीकरण के कारण लोगों के जीवन जीने के तौर तरीको में काफी परिवर्तन आया है। जीवन शैली में परिवर्तन ने खतरनाक गैसों के उत्सर्जन में काफी योगदान दिया है।

जलवायु परिवर्तन के प्रभाव–

1) उच्च तापमान;
2) वर्षा के पैटर्न में बदलाव;
3) समुद्र जल के स्तर में वृद्धि;
4) वन्यजीव प्रजाति का नुकसान;
5) रोगों का प्रसार और आर्थिक नुकसान;
6) जंगलों में आग;

जलवायु परिवर्तन के संदर्भ में वैज्ञानिकों का कहना है कि जलवायु परिवर्तन से कृषि और अर्थव्यवस्था पर असर पड़ेगा। इससे निपटने के लिए हमें जो नीति और रणनीति चाहिए, वह कहीं दिखाई नहीं दे रही है। इससे निपटने के लिए हम कामचलाऊ उपाय करते हैं, वह भी वक्त या जरूरत के हिसाब से ठीक से नहीं कर पाते। हर साल जब जंगलों मे आग लगती है तो कहा जाता है कि कृत्रिम बारिश से इसे बुझाने की कोशिश होगी लेकिन ऐसा नहीं हो पाता। यहां आग के साथ पानी की बात हो रही है क्योंकि यह आग जब जंगलो में लगती है तो वहां जली मिट्टी बच जाती है जिसमें बारिश के पानी को सोखने की क्षमता करीब–करीब खत्म हो जाती है। इसलिए जो भी पानी बरसता है वह नीचे की ओर बहकर अपने साथ जली मिट्टी और बाकी सब कुछ बहाकर ले जाता है। हमारी दिक्कत यही है कि हम अक्सर इन घटनाओं की जोड़कर नहीं देखते और सही रणनीति नहीं अपनाते।

जलवायु परिवर्तन एक वैश्विक चुनौती है जो पूरे विश्व को प्रभावित कर रही है। इसके प्रभावों को काम करने के लिए हमें सामूहिक रूप से काम करना होगा और आवश्यक कदम उठाने होंगे। हमें ऊर्जा के स्वच्छ स्रोतों का उपयोग करना होगा, वनस्पति विनाश को रोकना होगा और जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने के लिए प्रौद्योगिकी का विकास करना होगा।

सरकारों और संगठनों को भी जलवायु परिवर्तन के मुद्दे पर काम करना होगा, नीतियां बनानी होगी जो जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने में मदद करेंगी। स्वच्छ ऊर्जा के स्रोतों को बढ़ावा देना होगा और हरित ऊर्जा को दैनिक जीवन में प्रयोग करना होगा। हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि हमारे कार्यों का पर्यावरण पर नकारात्मक प्रभाव न हो। हमें जलवायु परिवर्तन के मुद्दों पर जागरूकता बढ़ानी होगी और लोगों को इसके प्रभावों के बारे में शिक्षित करना होगा और हमें भविष्य की इस चुनौती से निपटने के लिए दृढ़ संकल्प के साथ प्रकृति को अपने संरक्षक के रूप में स्वीकार करना होगा साथ ही साथ उनकी उचित देखभाल कर अपना कर्तव्य निभाना होगा।

---

सम्मान

## सुबनसिरी लोअर जलविद्युत परियोजना द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय (भारत सरकार) द्वारा गुवाहाटी (असम) में 05 मार्च 2025 को पूर्व एवं पूर्वोत्तर क्षेत्रों के संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन और पुरस्कार वितरण समारोह आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में असम के माननीय मुख्यमंत्री श्री हिमंत बिस्वा सरमा, विशिष्ट अतिथि के रूप में माननीय केंद्रीय गृह राज्य मंत्री श्री नित्यानंद राय, माननीय सांसद श्री दिलीप सैकिया और श्रीमती बिजुली कलिता मेधी उपस्थित थे।

सम्मेलन में, पूर्व एवं पूर्वोत्तर क्षेत्रों में स्थित उपक्रमों के बीच राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन उत्कृष्ठ निष्पादन के लिए सुबनसिरी लोअर जलविद्युत परियोजना को वर्ष 2023–24 के लिए द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया। परियोजना की ओर से महाप्रबंधक (मानव संसाधन) श्री के.जे. लौरेंस ने द्वितीय पुरस्कार के रूप में शील्ड एवं प्रशस्ति पत्र माननीय मुख्यमंत्री श्री हिमंत बिस्वा सरमा एवं माननीय केंद्रीय गृह राज्य श्री मंत्री नित्यानंद राय के कर कमलों से प्राप्त किया।

स्थायी स्तंभ

## पारिभाषिक शब्दावली

| | | |
|---|---|---|
| 1 | Funding of start-ups in India has seen a rising trend. | भारत में स्टार्टअप्स के वित्तपोषण में बढ़ोत्तरी देखी गई है। |
| 2 | Assured pension is a voluntary and contribution based central sector scheme. | स्थायी पेंशन स्वैच्छिक तथा अंशदान आधारित केन्द्रीय क्षेत्र योजना है। |
| 3 | This department has taken various steps to encourage the private sector. | इस विभाग ने निजी क्षेत्र को प्रोत्साहित करने के लिए अनेक कदम उठाए हैं। |
| 4 | To support small scale industry there is a credit guarantee scheme. | लघु उद्योग की सहायता के लिए एक ऋण गारंटी स्कीम उपलब्ध है। |
| 5 | A self-certified undertaking is sufficient for this purpose. | इस उद्देश्य के लिए एक स्वप्रमाणित शपथ-पत्र पर्याप्त है। |
| 6 | Ratification of the proposal is required. | प्रस्ताव का अनुसमर्थन आवश्यक है। |
| 7 | An appraisal system has been introduced | मूल्यांकन प्रणाली प्रारंभ की गई है। |
| 8 | Competition is intensifying day by day. | प्रतिस्पर्धा दिन-प्रतिदिन कड़ी होती जा रही है। |
| 9 | Endorsement on the cheque is not in order. | चेक पर पृष्ठांकन ठीक से नहीं किया गया है। |
| 10 | These figures are provisional. | ये आंकड़े अनन्तिम हैं। |
| 11 | Unpaid amount of 5 thousand rupees is pending with the company. | कंपनी में 5 हजार रुपए की अदत्त राशि लंबित है। |
| 12 | National Company Law Tribunal is the First Appellate Authority. | राष्ट्रीय कंपनी विधि अधिकरण प्रथम अपील प्राधिकरण है। |

## हिंदी साहित्य

### पर्यायवाची शब्द

**ऊर्जा** – शक्ति, ओज, स्फूर्ति
**एकाग्र** – एकमना, मनोयोगी, एक चित्त
**इनकार** – प्रत्याख्यान, अनगीकार, निषेध, अस्वीकृति
**ओझल** – अन्तर्धान, अदृश्य, लुप्त, गायब, तिरोहित, विलुप्त
**फूल** – कुसुम, सुमन, प्रसून, पुष्प, लतान्त, पुहुप

**याचना** – निवेदन, प्रार्थना, विनय, अर्ज, विनती
**लालसा** – लोभ, अभिलाषा, लालच, लिप्सा, तृष्णा
**श्रेष्ठ** – उत्कृष्ट, सर्वोपरि, विशिष्ट, प्रधान
**समता** – तुल्यता, बराबरी, समत्व, सादृश्य, साम्य, समानता
**हिरण** – मृग, सारंग, सुरभी, कुरंग, चितल

काव्य धारा

# गौरव

हम हैं त्रिशूल उस महाकाल की,
हम गदा वीर हनुमान की,
हम चक्र सुदर्शन विष्णु के,
हम धनुष बाण श्री राम की।

कान्हा की बंसी भी हम हैं,
और अमिट प्रेम घनश्याम की,
मीरा के प्रेम की भक्ति हम,
मर्यादा हैं श्री राम की।

हम राणा के वंशज हैं,
हम वीर भगत सिंह बागी हैं,
अमर सपूत हैं भारत माँ के,
हमें प्यारी बस आजादी है।

इस धरती पर हमसे बढ़कर,
कौन यहां बलशाली है,
कौन समझ के बैठा है कि भारत वीरों से खाली है?

हम हैं सुभाष की अमिट शान,
आजाद हिंद की आन–बान,
हम चन्द्रगुप्त, पोरस महान
हम महाबुद्ध का दिव्य ज्ञान,

फन शेषनाग का भी हम हैं,
जिस पर यह सृष्टि नाच रही,
और परम शून्य के जनक हम ही,
दुनिया ब्रह्मांड को नाप रही,

प्रह्लाद की भक्ति की शक्ति और
ध्रूव के जप तप का मान हैं हम,
गोरा बादल की कुर्बानी,
माँ पन्ना का बलिदान हैं हम,

आदित्य हो या कि चंद्रयान,
भारत का गौरव है महान,
हर युवा यहां का योद्धा है,
हर बालक प्रतिभाशाली है,
कौन समझ के बैठा है कि भारत वीरो से खाली है?

हम शान हैं लक्ष्मीबाई की,
हम तप हैं मात अहिल्या की,
हम पद्मावती का जौहर हैं,
हम सत हैं माँ अनुसुइया की,

हम वज्र दधीचि की हड्डी का,
और परशुराम का फरसा हम,
हम धर्मराज की धर्म शिखा,
गांधी की शांति का चरखा हम,

धरती यह अमर शहीदों की,
कविता है अमर कहानी की,
भारत माता की रक्षा में,
कुर्बान हुए बलिदानी की,

आकाश हो या पाताल लोक,
महाराणा हों या फिर अशोक
हम वीर शिवाजी छत्रपति
हर गाथा गौरवशाली है,
कौन समझ के बैठा है कि भारत वीरों से खाली है?

**अरुण कुमार, प्रबंधक (सिविल)**
आर्बिट्रेशन सेल, निगम मुख्यालय (फरीदाबाद)

## आत्माभिमान

हिंदी का कोश उजागर कर,
जो डूब रहा है आदर कर।
गर अपने वजूद से भागेगा,
साया भी तुझे लताड़ेगा।

हिंदी पखवाड़े की नहीं जरूरत हो,
गर हिंदी की तू एक मूरत हो।
न हिंदी का अपमान करो,
जीवंत इसकी तुम जान करो।

खुद को ही तू उछालेगा,
फिर ईश्वर भी नहीं संभालेगा।
कर ले तू एक काम बड़ा,
कर हिंदी में तू बात जरा।

कर व्यक्त भावना इस भाषा में,
न रहे जीवन कभी निराशा में।
अपनी पहचान पर तुम अभिमान करो,
जीवंत हिंदी की तुम जान करो।

हिंदी का सम्मान करो,
हिंदी मे ही काम करो।

**अरविन्द कुमार गुप्ता, सहायक प्रबंधक (यां.)**
सीईपीएम विभाग, निगम मुख्यालय (फरीदाबाद)

## !! मोह से मोहन !!

हर मोहन की... इक राधा,
प्रेम नहीं कभी अधूरा–आधा।

लज्जा के कोरे वेश में छिपता,
नहीं पर निरा छिप सकने वाला।

निर्लज्ज निखिल, प्रफुल्ल–पल्लवित,
क्षणिक मधु–क्लेषों पर खिल आता।

भाता निखरा–निखरा चेहरे पर,
हृदयलेखों में गजब इठलाता।

इच्छा के प्रेक्षित अवकरणों पर,
वेदना–विशिष्ट विचित्र संग पाता।

तिस पर भी खिलखिलाता–मुस्कुराता,
निर्वेद वदन भावमय कर जाता।

प्रेम अपूर्ण भी प्रिय पाता,
प्रेम सर्वत्र राह प्रखर दिखलाता।

अमृत्य–संतृप्त प्रेरक–प्रबल,
प्रत्येक मोहन... पाता इक राधा।

**आशीष आनन्द आर्य, हिंदी अनुवादक**
धौलीगंगा पावर स्टेशन, पिथोरागढ़ (उतराखंड)

# गांव मेरा मुझे बड़ा याद आता है

समय तो बहती हुई एक धारा है,
हम सबको इसके साथ–साथ चलना ही गवारा है,
रुकता है जो... लगता है वो हारा है,
फिर कौन है... जो मुझे पीछे से आवाज लगाता है,
गांव मेरा मुझे बड़ा याद आता है।

वो खेत वो खलिहान, वो छोटी–सी दुकान,
थोड़े से पैसों में कितना सामान,
बीता वक्त क्यों नहीं खुद को दोहराता है,
गांव मेरा मुझे बड़ा याद आता है।

वो दादा का लाड, वो दादी की फटकार,
मां के गले में डाले बांहों का हार,
पापा की आंखों में समाया, अनकहा दुलार,
बचपन मेरा मुझे खींचे चला जाता है,
गांव मेरा मुझे बड़ा याद आता है।

वो सखी, वो सहेलियां, वो कितनी ही अटखेलियां,
बस गई हैं वहीं जीवन की सारी रंगीनियां,
वो लड़ना–झगड़ना, वो रूठकर मान जाना,
उन्हीं उलझनों में मन उलझ–सा जाता है,
गांव मेरा मुझे बड़ा याद आता है।

वो पेड़ की शाखाएं, वो पंछियों की बोली,
हर तरफ उधम मचाती हम बच्चो की टोली,
वो बात–बात पे डांटना और अगले ही पल भूल जाना,
आज वैसी ही डांट की खातिर.... मन तरस जाता है,
गांव मेरा मुझे बड़ा याद आता है।

गली के आखिर में वो टूटा सा मकान,
सारा दिन खेलना वहां, फिर भी न कोई थकान,
खेलते–खेलते वक्त का भी न रहता था ध्यान,
सब कुछ आंखों में जैसे जीवंत–सा हो जाता है,
गांव मेरा मुझे बड़ा याद आता है।

न सर्दी की ठिठुरन थी, न गरमी की तपन,
बारिश की बूंदे भिगो देती थी तन–मन,
हर मौसम में चहकता था मासूम–सा मेरा मन,
अब कोई मौसम हमें क्यों नही भाता है,
गांव मेरा मुझे बड़ा याद आता है।

आज जीवन की डोर, जैसे जिम्मेदारियों से बंध गई है,
उन जिम्मेदारियों में बचपन की मासूमियत गुम गई है,
दौड़ते–दौड़ते, सोचते–सोचते मन फिर वहीं पहुंच जाता है,
गांव मेरा मुझे बड़ा याद आता है......

**सुषमा आर कुमार**
पत्नी श्री राकेश कुमार रंगा, उप प्रबंधक (ई एंड सी)
आईटी एंड सी विभाग, निगम मुख्यालय (फरीदाबाद)

## जलविद्युत

नदियां गाती हैं शांति के गीत,
एनएचपीसी से जुड़ी हर एक रीत।

प्रकृति की शक्ति, जल का बल,
सिर्फ इस ऊर्जा में है जीवन का हल।

पहाड़ों से बहती जलधाराएं,
एनएचपीसी उनके संग जीवन संजोए।

झरने से नदी, नदी से बाँध,
इनकी शक्ति से खिलते हैं सभी ख्वाब।

मंथन करतीं ये जलधाराएं,
बिजली के रूप में ऊर्जा लाए।

बिजली घरों में, कारखानों में,
सपने साकार होते हैं इनकी आंचल में।

जलविद्युत का यही संदेश है,
प्रकृति से शक्ति, प्रगति का राग है।

एनएचपीसी, तुम हो जीवन का आधार,
जल की इस शक्ति से बढ़े हर घर, हर व्यापार।

हर बूंद की मेहनत, हर धारा की ध्वनि,
आपसे जुड़ी दुनिया का सपना है गूंजती।

जल की शक्ति से जीवन सजाएं,
एनएचपीसी की राह चल, हम उन्नति पाएं।

**अमर दीप कुमार, वरिष्ठ कार्यालय अधीक्षक**
निदेशक (परियोजनाएं) सचिवालय, निगम मुख्यालय (फरीदाबाद)

## अब दिन ढलने लगे हैं।

जिनको बहुत प्यारे थे,
उन्हीं को अब खलने लगे हैं,
बेबाक बोलते थे जो दोस्त,
वही सच को अब निगलने लगे हैं,
सुबह होते ही दिन अब ढलने लगे हैं।

जहां नहीं था रास्ता,
वहीं से सब चलने लगे हैं,
जमे थे जो पत्थर नदी किनारे सदियों से,
वही तबियत से अब उछलने लगे हैं,
अब दिन ढलने लगे हैं।

टिके थे जिंदगी में जो ग्लेशियर की तरह,
वही अब झट से पिघलने लगे हैं,
जिसके पानी से बुझाते थे आग,
वही दरिया अब जलने लगे हैं,
अब दिन ढलने लगे हैं।

लड़खड़ाते ही जो पकड़ लेते थे ऊंगलियां,
वही अब खुद से संभलने लगे हैं,
जो कहते थे कि ऐसे ही रहना हमेशा,
वही अब खुद बदलने लगे हैं,
अब दिन ढलने लगे हैं।

जो दृढ़ थे अपने निर्णयों में,
उन्हीं के मन अब मचलने लगे हैं,
जो कहते ही मानते थे बातें सारी,
वही हर बात को अब टालने लगे हैं,
अब दिन ढलने लगे हैं।

जो रहते थे बेफिक्र होकर अपने में,
वही अपने को औरों के अनुसार ढालने लगे हैं,
जो खुद होश में न थे,
वही सबको अब संभालने लगे हैं,
अब दिन ढलने लगे हैं।

क्या ढूंढ रहा है 'नीरज' पहले जैसा,
जो रहते थे साथ हमेशा,
वही कभी–कभार अब मिलने लगे हैं,
जो कभी न करते थे बात पैसे की,
वो बात पैसों की अब बोलने लगे हैं,
लोग हर बात पे अब जेब का वजन तोलने लगे हैं।

**नीरज कुमार, उप प्रबंधक (सेफ्टी)**
क्षेत्रीय कार्यालय, चंडीगढ़

# राजभाषा कार्यान्वयन गतिविधियां

हिंदी पखवाड़ा-2024 के समापन समारोह में मंचासीन अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक महोदय तथा निदेशकगण

हिंदी कवि सम्मेलन के अवसर पर कार्मिकों को संबोधित करते हुए अध्यक्ष व प्रबंध निदेशक महोदय

हिंदी कवि सम्मेलन का शुभारंभ करते निदेशक (वित्त) महोदय

वर्ष 2024-25 के लिए राजभाषा कार्यान्वयन समिति की चौथी बैठक

संसदीय राजभाषा समिति की निरीक्षण बैठक

हमारा यह निरंतर प्रयास रहना चाहिए कि हिंदी भाषा समृद्ध कैसे बने। कार्यशालाओं के द्वारा भाषाशास्त्री विभिन्न भारतीय भाषाओं के शब्द हिंदी में जोड़कर इसे समृद्ध बनाएं।

– नरेन्द्र मोदी (प्रधानमंत्री)

एनएचपीसी
NHPC
एक नवरत्न कंपनी

स्वहित एवं राष्ट्रहित में ऊर्जा बचाएं / Save Energy for Benefit of Self and Nation
बिजली से संबंधित शिकायतों के लिए 1912 डायल करें / Dial 1912 for Complaints on Electricity
CIN: L40101HR1975GOI032564

**हरित ऊर्जा में निहित शक्ति**

www.nhpcindia.com @nhpcltd @NHPCIndiaLimited nhpclimited NHPC Limited NHPC Limited

Designed and Printed by: Viba Press Pvt. Ltd. -9810049515